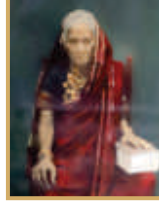




छत्रपती शिवाजी महाराज



महाराज महादजी शिंदे (सिंधिया)



मराठवाडा मुक्ती संग्राम स्वातंत्र्यसेनानी परिवार के सदस्य

“श्रीगणेश चतुर्थी” तिथी पर जन्म इसलिए  
गणेश नामकरण किया गये ऐसे व्यक्ति

मराठवाड़ा प्रांत के कर्मवीर, चारित्र्य संपन्न पूर्व मंत्री, सांसद  
अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर  
(शिंदेशाही राऊत)



अनेक पिढीओं से पंढरपुर वारी में संत ज्ञानेश्वर माऊली के पादुकाओं का अभिषेक करना यह सन्मानप्राप्त परिवार

# अँड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत)

इस लोकनेता पर ₹2.25 लाख से ज्यादा राशी के पुरस्कारों की वार्षिक वक्तृत्व प्रतियोगिता होगी ।

सितंबर में होने वाली प्रतियोगिता का विवरण	3
<b>हिंदी जानकारी (अनुक्रम)</b>	
1. कर्मयोगी बापुसाहेब के कर्तृत्व की कुछ तस्वीरें	4
2. सम्माननीय अँड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब : संक्षिप्त परिचय	11
3. सन 1971 से 2019 - कार्यसारांश	14
4. “कुछ सन्माननिय साथिदारों के नजरों से बापुसाहेब” 6 लेख	15
5. बापुसाहेब के हितचिंतकों के शब्दों में निम्न मुद्दों पर योगदान का वर्गीकरण (गौरवग्रंथ सारांश)	23
● पद _____	24
● लोकनेता _____	28
● रचनात्मक कार्य _____	35
● एक समझदार जनसेवक _____	41
● बापुसाहेब के ही शब्दों में _____	42
6. सांसद अँड. दुधगांवकर इनके कार्यों का पूर्विलोकन	42

मराठी (अनुक्रमणिका)

पान क्र. ५१

English (Index)

Page No. 122

# एडवोकेट गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत) वार्षिक खुली वक्तृत्व प्रतियोगिता

## विवरण

### प्रथम वर्ष – प्रतियोगिता का विषय

जनसेवक गणेशराव दुधगांवकर मतलब कर्मयोगी, विकासपुरुष, सत्यआग्रही या ज्ञानोपासक ?

### प्रतियोगिता हेतु आयु विवरण तथा ईनाम राशी

आयु समूह : 30 वर्ष तक	
ईनाम	राशी
प्रथम	33,000/-
द्वितीय	23,000/-
तृतीय	11,000/-
उत्तेजनार्थ	5000/-
डिजीवीर अवार्ड (सबसे जास्त व्हुज्)	10,000/-

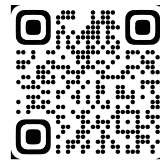
आयु समूह: 30 वर्ष और उससे अधिक	
ईनाम	राशी
प्रथम	71,000/-
द्वितीय	33,000/-
तृतीय	21,000/-
उत्तेजनार्थ	5000/-
डिजीवीर अवार्ड (सबसे जास्त व्हुज्)	10,000/-

पिछली प्रतियोगिताओं की जानकारी के साथ-साथ आगामी वार्षिक प्रतियोगिताओं की सूचनाओं के लिए हर साल स्वतंत्रता दिवस से वेबसाईट देखते रहें ।

[www.Shinde.World/vakrutva-spardha-Parbhani](http://www.Shinde.World/vakrutva-spardha-Parbhani)

  
**Dudhgaonkar**  
**Yearly E-Comp**

प्रतियोगिता



विवरण

आयोजक : ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ, परभणी.

+9194 0547 3999

[www.Dnyanopasak.in](http://www.Dnyanopasak.in)

+9191 4536 4999

सुशिक्षित लडकी से विवाह का आग्रह (दहेज लिए बिना विवाह हुआ)  
जिस विवाह की चर्चा बहुत दूर-दूर होती रही। उदगीर शहर में हुए इस आदर्श विवाह की स्मृतियाँ...

2 जून 1971





महाराष्ट्र राज्य का सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक तथा धार्मिक उत्सव “ पंढरपूर की वारी ” है। इस वारी में पंढरपूर के नजदीक ‘वेळापूर’ इस स्थान पर संत ज्ञानेश्वर महाराज की पादुकाओं का अभिषेक होता है। पिछली कई पिढियों से यह अभिषेक करने का सम्मान महाराष्ट्र में दुधगांवकर परिवार का है।

(सन 1850)

श्रीक्षेत्र जगन्नाथपुरी पीठाधीश्वर के चरणकमल पिछले छः - सात दशकों से परभणी को नहीं लगे थे। यह परभणीवासियों का सौभाग्य है कि अ.ड.गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (बापूसाहेब) के आग्रहपूर्वक निमंत्रण पर अनेक दशकों बाद परभणी में पधारें श्रीक्षेत्र जगन्नाथपुरी पीठाधीश्वर पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी। (सन 2019)

### शिंदेशाही राजत (दुधगांवकर) परिवार



कै. तानुवाई ज्ञानोबाराव शिंदेशाही राजत (दुधगांवकर)

बापूसाहेब की दादी



कै. नागोराव ज्ञानोबाराव शिंदेशाही राजत (दुधगांवकर)

बापूसाहेब के पिताजी



कै. प्रयागवाई बापूराव निकम राजेकर सेनू जिला परभणी, महाराष्ट्र

बापूसाहेब की बड़ी बहन



कै. रुक्मिणीबाई उचमराव गोकुळ सुर्यवंशी आहगावकर, माजरागाव जिला बीड, महाराष्ट्र



कै. निंबाजीराव नागोराव दुधगांवकर PDCS अध्यक्ष (1970 - 1987)



कै. अंबादमराव नागोराव दुधगांवकर

बापूसाहेब के बड़े भाई



कै. राक्सहेब नागोराव दुधगांवकर

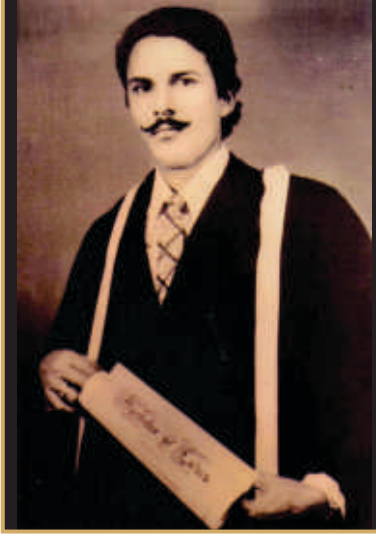


मराठवाडा प्रांत के कर्मवीर - लोकनेता पूर्व मंत्री, सांसद  
जुने उस्मानाबाद जिले के भाग्यविधाता स्वतंत्रता सेनानी  
सहकार महर्षी कै. शिवाजीराव तुकारामजी नाडे (मुरुड)  
इनके समधी

रझाकार के अन्यायी शासन के खिलाफ सशस्त्र आंदोलन का नेतृत्व करनेवाले स्वतंत्रता सेनानी कै. तुकारामजी भीमराव जाधव पाटील तादलापूरकर (ता. उदगीर, जि. लातूर) इनके बेटी के दामाद।



## कर्मयोगी बापूसाहेब के कर्तृत्व की कुछ तस्वीरें...



माणिकचंद पहाडे विधी महाविद्यालय, औरंगाबाद एलएल.बी. की उपाधि स्वीकार करते समय



बाएं से डॉ. बरदाळे, बापूसाहेब (राज्यमंत्री - स्वतंत्र कार्यभार), उपमुख्यमंत्री बॅरिस्टर रामराव आदिक तथा अॅड. मुंजाजीराव जाधव



राज्यमंत्री अॅड. गणेशराव दुधगांवकर इनका मंत्रालय दफ्तर का छायाचित्र



शिवाजी महाविद्यालय परभणी कि ओर से मानचिन्ह धारक विद्यापीठ खिलाडी बापूसाहेब (पिछे की पंक्ति में बाएं से तिसरे, टाय पहने हुए), साथ में साहेबराव लबडे, विजय ठाकूर, अविनाश पेडगावकर, एल.डी. चौधरी, लाला हाशमी, रशीद खॉन, उमर अली, अविनाश धामणगावकर, लक्ष्मीकांत गायकवाड, सुरेश जाधव, कु. प्रतिभा देशपांडे, कु. धामणगावकर, प्रा. वाईकर, प्रा. खेडकर, प्रा. बायस, प्राचार्य डांगे, प्रा. बागल, प्रा. तायडे, प्रा. भोईटे मॅडम (1967-68)



सन 1961 की  
महाराष्ट्र राज्य स्थापना के पहले  
से ही उच्च गुणवत्तापूर्ण  
सामाजिक कार्य करने वाले  
दुधगांवकर परिवार के सदस्य  
श्री. लिंबाजीराव और बापूसाहेब,  
राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री  
मा. यशवंतराव चव्हाण के साथ,  
साथ में श्री. रावसाहेब जामकर

माणिकचंद पहाडे विधीकुल  
छात्र संघ के समारोह में बांये ओर से  
प्राचार्य श्री. शास्त्री  
भाषण करते हुए बापूसाहेब,  
मा. शंकररावजी चव्हाण  
(सिचन मंत्री, महाराष्ट्र राज्य),  
अॅड. सुखदेव शेलके



मा. मुख्यमंत्री वसंतदादा पाटील जी  
के साथ भोजन का स्वाद  
लेते हुए बापूसाहेब  
(राज्यमंत्री - स्वतंत्र कार्यभार)  
तथा मंत्री डॉ. बळीराम हिरे



पूर्ण सहकारी चिनी कारखाना प्रथम हंगाम समारोह  
के अवसर पर पूजा करते हुए  
मा. मंत्री बापूसाहेब एवं डॉ. सी. संध्या दुधगांवकर



माननिय मुख्यमंत्री शंकररावजी चव्हाण इनका स्वागत करते हुए  
मा. लिबाजीराव दुधगांवकर, अध्यक्ष (प.जि.म.स.बँक)  
तथा श्री. ओमप्रकाशजी देवडा



तत्कालीन काँग्रेस पार्टी नेता  
श्रीमती प्रतिभाताई पाटील (पूर्व राष्ट्रपती)  
के साथ मा. बापूसाहेब



महाराष्ट्र स्टेट कॉ.मार्केटिंग फेडरेशन मुंबई कि बैठक में फेडरेशन के  
अध्यक्ष बापूसाहेब, फेडरेशन के व्यवस्थापकीय  
संचालक श्री. नंदलालजी IAS तथा अन्य



जितूर का खाद कारखाना (पॅफको) का निरीक्षण करते समय बाएं ओर से-  
श्री.के.आ. कान्हे, आ. रायभानजी जाधव, (एम.डी.सी. चेअरमन),  
श्री. भुजंगराव कुलकर्णी (भूतपूर्व सचिव), कारखाने के चेअरमन  
बापूसाहेब तथा श्री. सुभाषराव सूर्यवंशी (CEO-एम.डी.सी.)



बहुजन हितकारणी सभा के समारोह में पत्रकार तथा  
साहित्यिक श्री. उत्तमजी कांबळे का सत्कार करते हुए  
बापूसाहेब, संस्थासचिव अॅड. श्रीधरराव कदम,  
प्राचार्य डॉ. सुरेश सदावर्ते तथा प्रा.डॉ. अशोक जौधळे





मुंबई में मा. मंत्री श्री. दिवेकर इनके निवासस्थान पर जगप्रसिद्ध गायिका श्रीमती लता दीदी मंगेशकर इनसे सदिच्छा भेंट करते हुए श्री. दुधगांवकर परिवार, दिवेकर परिवार तथा मंत्री डॉ. हिरे साहब



केंद्रीय मंत्री मा. माधवराव सिंधीया (शिंदे) के साथ अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत), साथ में साथी रामराव जाधव तथा एस.एच.हाशमी (परभणी)



समाजसेवक अण्णा हजारे जी ने जितूर के ज्ञानोपासक महाविद्यालय को भेंट दी। उनके साथ संस्थाध्यक्ष बापूसाहेब



राहुरी के भूतपूर्व विधायक श्री. कदम चंद्रशेखर लक्षणमराव इनके साथ बापूसाहेब, ज्ञानोपासक महाविद्यालय, जितूर यहाँ कार्यक्रम में



मंगेसेसे पुरस्कार प्राप्त जलपुरुष डॉ. राजेंद्र सिंह जी, अलवर (राजस्थान) के लिए आयोजित ज्ञानोपासक महाविद्यालय जितूर यहाँ एक कार्यक्रम में संस्थाध्यक्ष बापूसाहेब, सचिव डॉ. सौ. संध्या दुधगांवकर



शिक्षण परिषद का उद्घाटन करते हुए विख्यात न्यायमूर्ती श्री. चंद्रशेखर धर्माधिकारी, बापूसाहेब, प्राचार्या डॉ. सौ. संध्या दुधगांवकर, श्री. सुगावकर गुरुजी तथा प्रा. डॉ. अशोक जोंधळे



स्व. तानुबाई ज्ञानोबाराव दुधगांवकर  
अॅड. गणेशराव दुधगांवकर (बापूसाहेब) इनकी दादी



स्व. नागोराव ज्ञानोबाराव दुधगांवकर  
(बापूसाहेब के पिताजी)



स्व. राजाई नागोराव दुधगांवकर  
(बापूसाहेब की माताजी)



स्व. लक्ष्मीबाई नागोराव दुधगांवकर  
(बापूसाहेब की माताजी)



कै. प्रयागबाई बापूराव निकम राव्हेकर  
सेनू  
जिला परभणी, महाराष्ट्र



कै. रुक्मिणीबाई उत्तमराव शेजूल  
सुर्यवंशी आडगावकर, माजलगाव  
जिला बीड, महाराष्ट्र



कै. लिबाजीराव नागोराव दुधगांवकर  
PDCC अध्यक्ष (1970 - 1987)



कै. अंबादासराव नागोराव दुधगांवकर



कै. रावसाहेब नागोराव दुधगांवकर

बापूसाहेब की बड़ी बहनें

बापूसाहेब के बड़े भाई

## दुधगांवकर परिवार का लोकशाही में योगदान

- 1940's - मराठवाडा मुक्तिसंग्राम योगदान
- 1962 - उपाध्यक्ष, जिला परिषद परभणी
- 1970, 1987 - अध्यक्ष, परभणी जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंक
- 1993 - अध्यक्ष, जिला परिषद परभणी
- चुनावों में निर्णायक योगदान :  
लोकसभा - 1977, 1980, 1996, 2009, 2019  
विधानसभा - 1980, 1985, 1990, 1994 (MLC),  
1995, 2004 (हर बार विभिन्न निर्वाचन क्षेत्र से प्रत्याशी)

## मराठवाडा के राजकीय इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय ! अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिदेशाही राजत)

- मराठवाडा प्रांत का प्रथम व्यक्ति महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बने यह यशस्वी मांग करने वाले सन 1974 वाले मराठवाडा विकास आंदोलन के एक युवा नेतृत्व
- सन 1983 में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बदलने में अहम भूमिका निभाने वाले युवा विधायक
- मराठवाडा प्रांत का सिर्फ छ. संभाजीनगर जिला अच्छि आर्थिक स्थिती में है । इसका बडा श्रेय बजाज कारखाने को दिया जाता है, जिसे इस शहर में लाने का आमंत्रण देने वाले प्रमुख मंत्री
- परभणी जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंक, विभिन्न सरकारी संस्थाएँ, मुंबई मार्केट कमिटी, मार्केटिंग फेडरेशन, ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ जैसी संस्थाओं में नौकरियाँ प्रदान करने में अहम भूमिका निभाने वाले
- अनेक सहकारी कारखानों की नींव रखने वाले, सिंचन, रेल, शिक्षा, उद्योग इ. बुनियादी विषयों में महत्वपुर्ण योगदान देने वाले
- विभिन्न समाज के अनेक कार्यकर्ताओं को विधायक बनाने वाले चारित्र्य संपन्न लोकनेता



## सन्माननीय बापूसाहेब : संक्षिप्त परिचय

- नाम** : अँडव्होकेट गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत)
- लोकाभिमुख नाम** : बापूसाहेब
- जन्म/मूल गाँव** : दुधगांव, ता. जितूर, जि. परभणी
- निवास स्थान** : दुधगांवकर फार्म हाऊस,  
पोखर्णी फाटा, मु.पो. पोखर्णी (नृसिंह), ता.जि.परभणी
- स्थायी पता** : द्वारा-ज्ञानोपासक महाविद्यालय,  
पो.बॉ.नं. 54, परभणी - 431 401.  
ता. जि. परभणी (महाराष्ट्र)
- दूरभाषा क्रमांक** : (02452) 242016 मो.नं. +9194 2272 7444
- जन्म दिनांक** : 9/9/1945 (जन्मतिथी : श्री गणेश चतुर्थी, इसलिए गणेश नामकरण हुआ।)
- शिक्षण** : बी.ए., एल.एल.बी. (अँडव्होकेट)
- परिवार** : पत्नी - डॉ.सौ. संध्याताई गणेशराव दुधगांवकर, M.Sc., Ph.D. (1981)  
बेटी - मधुरा गणेशराव दुधगांवकर, M.S. Maths & Comp. Science (USA)  
बेटा - समीर गणेशराव दुधगांवकर, M.S. Mech. Engg. USA (2001)
- रुचियाँ** : श्रवण - व्याख्यान, प्रवचन, गायन  
वाचन - विविध साहित्य कृतियाँ, ग्रंथ, किताबें  
प्रबोधन - युवा संघटन / युवा कल्याण
- पक्ष संघटन/विस्तार कार्य** : \* काँग्रेस पक्ष प्रवेश सन 1975  
\* जिला अध्यक्ष युवक काँग्रेस सन 1976  
\* सरचिटणीस म.प्र.काँ. सन 1987  
\* उपाध्यक्ष महाराष्ट्र प्र.काँ. सन 1994  
\* जालना जिला संपर्क प्रमुख - शिवसेना सन 2004-09
- राजकीय क्षेत्र में योगदान** : \* सन 1980 के आमदार (काँग्रेस) -  
वसमत विधानसभा चुनाव क्षेत्र, जि. हिंगोली (पुराना जिला परभणी)  
\* सन 1985 के आमदार (काँग्रेस) - जितूर विधानसभा चुनाव क्षेत्र जि.परभणी  
\* राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) - कार्यकाल - सन 1983 ते 1985  
रोजगार गारंटी योजना, तंत्रशिक्षा, सेवायोजना खाता, महाराष्ट्र राज्य

मा.ना. श्री. वसंतदादा पाटील, मुख्यमंत्री तथा  
मा.ना. श्री. रामराव आदिक, उपमुख्यमंत्री इनका मंत्रिमंडल

**\* अमरावती तथा बुलढाणा दोनों जिलों के पालकमंत्री**

**\* सन 1990** विधानसभा पाथरी, जि.परभणी (काँग्रेस)– काँटे की लढत में हार।

**\* सन 1994** स्थानिक स्वराज्य संस्था विधान परिषद चुनाव क्षेत्र (अपक्ष),  
परभणी–हिंगोली (केवल 11 मतों से हार)

**\* खासदार सन 2009 – पंद्रहवीं लोकसभा सदस्य चुने गए । (शिवसेना)**

लोगों के विश्वास की वजह से 19 साल बाद अद्वितीय यश संपादन किया।

भ्रष्ट विरोधकों ने साजिश कर बड़े समय तक संवैधानिक पद से दूर रखा, फिर भी 19 साल बाद पुनः बड़ा पद प्राप्त किया, ऐसा देश का शायद एकमात्र उदाहरण!!

**सहकार क्षेत्र में योगदान**

- : \* संचालक, दुधगाव वि.का.से.स.सो., ता. जितूर
- \* अध्यक्ष, 1960 में स्थापित तालुका सहकारी जिनिंग प्रेसिंग संस्था, जितूर
- \* अध्यक्ष, 1975 जि.स. खरेदी विक्री संघ, परभणी
- \* संचालक, म.रा.स. मार्केटिंग फेडरेशन, मुंबई. सन 1978
- \* संचालक, IFFCO नई दिल्ली. सन 1989
- \* संचालक, नाफेड. सन 1987-88
- \* संचालक, कृषक भारती को.सो. सन 1989
- \* चेअरमन, ज्ञानोपासक नागरी सहकारी बैंक, परभणी
- \* चेअरमन, म.रा.स. मार्केटिंग फेडरेशन, मुंबई. सन 1989
- \* पाथरी तथा पुर्णा सहकारी चिनी कारखाना शुरु हो इस हेतु निधी दिलवाया ।
- \* संस्थापक/अध्यक्ष–PAFFCO खाद कारखाना, जितूर. सन 1989 ते 2001
- \* संस्थापक, नृसिंह सहकारी साखर कारखाना, लोहगाव. सन 1989 स्थापित

**शिक्षा कार्य**

- : \* राज्य की विना अनुदानित शिक्षा नीति तैयार कर, भारती विद्यापीठ, MGM, MIT जैसी अनेक संस्थाओं को मंजूरी
- \* मराठवाडा के 45 आयटीआय संस्था तथा 45 टेक्नीकल हायस्कूल को मान्यता देकर आरंभ किया
- \* **संस्थापक अध्यक्ष : ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ, परभणी (स्थापना स. 1981)**
  - आजतक 50,000 परिवारों को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने वाली संस्था
  - स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के अंतर्गत प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित शिक्षण मंडल
  - संस्था के तीन महाविद्यालय तथा छः माध्यमिक विद्यालय, समूचे परभणी जिले में कार्यरत प्रसिद्ध शिक्षण मंडल ।

# मराठवाडा प्रांत के कर्मवीर, चारित्र्य संपन्न पूर्व मंत्री, सांसद

9

सप्टेंबर



## डॉ. गणेशराव नागोरव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत)

### मराठवाडा के राजनीतिक इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय...

- महाराष्ट्र का भावी मुख्यमंत्री मराठवाडा प्रांत का ही होना चाहिए, जायकवाडी बांध, लोअर दुधना, विष्णुपुरी परियोजना पुरा करें, ब्रॉड गेज, हाईकोर्ट आदि मांगों के मराठवाडा विकास आंदोलन (1974) के युवा नेतृत्व
- सन 1983 में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बदलने में अहम् भूमिका निभाने वाले वसमत के युवा विधायक
- 2 फरवरी 1983 को राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) बनने के बाद मराठवाडा के वाळुज, छत्रपती संभाजीनगर में बजाज कंपनी लाना, IGTR, MCED, CIPET, CEDT आदि रचनात्मक कार्यों में निर्णायक योगदान करने वाले नेता
- पूर्व विधानसभा अध्यक्ष वि.स. पागे द्वारा रोहयो मंत्री के रूप में किए कार्य की प्रशंसा पाने वाले मंत्री
- अमरावती विश्वविद्यालय, महसूल कार्यालय, अमरावती म.न.पा., IGP Office शिघ्र मंजूरी में योगदान देने वाले पालक मंत्री
- हजिरा (गुजरात) - मराठवाडा - विदर्भ - ओडीसा गॅस पाईपलाईन प्रकल्प पूर्णता के लिए प्रयत्नरत विकास पुरुष
- देश की नीति बदलकर, देश का पहला सहकारी खाद निर्मिती कारखाना स्थापित करने वाले
- अनगिनत लोगों को रोजगार दिलाने वाले, अनेक लोगों को विधायक बनाने वाले लोकनेता
- पाँच विभिन्न चुनाव क्षेत्रों से सफलतापूर्वक चुनाव लड़ने वाले असामान्य साहसी नेता



## परभणी और हिंगोली इन दो जिलों के राजनीतिक ऋषितुल्य व्यक्तिमत्त्व प्रख्यात भूतपूर्व मंत्री तथा सांसद अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत)

- 1971-74 • 'मराठवाडा कृषि विश्वविद्यालय परभणी मे होना चाहिए' तथा 'मराठवाडा विकास' आंदोलन के एक प्रमुख युवा नेतृत्व
  - मराठवाडा के व्यक्ति को मुख्यमंत्री बनाना चाहिए, जायकवाडी, लोअर दुधना, विष्णुपुरी इ. प्रकल्पों को पुरा करना, ब्राँडगेज, हायकोर्ट ऐसी कई मांगो वाला मराठवाडा विकास आंदोलन
- 1980 • जीवन के प्रथम चुनाव के लिए सीधे लोकसभा उम्मीदवारी घोषित युवा
  - बसमत के विधायक बनें
    - निधी के अभाव में रुका हुआ पाथरी और पुर्णा यहाँ के दोनों भी सहकारी चिनी मिलें निधी लाकर शुरु की गई
- 1983 • महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बदलने में अहम भूमिका निभाने वाले युवा विधायक
  - राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) - चारित्र्यसंपन्न कर्तृत्व
    - मा. विधानसभा अध्यक्ष वि. स. पागे इनके ओर से रो. ह. यो. मंत्री के तौर पर किए हुए काम के लिए सराहना मिलने वाले मंत्री
    - अमरावती विद्यापीठ, महसूल कार्यालय, मनपा, IGP Office की शुरुवात इ. कार्य करने वाले अमरावती व बुलढाणा जिले के पालकमंत्री
  - संस्थापक अध्यक्ष - ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ, परभणी ([www.Dnyanopasak.in](http://www.Dnyanopasak.in))
    - आज तक 50,000 परिवारों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने वाली संस्था
- 1985 • जितूर के विधायक बनें
- 1986 • हजिरा गॅस पाईपलाईन : हजिरा (गुजरात) - परभणी - नागपुर - पॅराव्दिप (ओडिसा) तक 1550 कि.मी. लंबाई के गॅस पाईपलाईन प्रकल्प के लिए यशस्वी कोशिश करनेवाले दुरदर्शी नेता
  - खाद कारखानों का नेटवर्क, प्लास्टिक उद्योग, गॅस पाईपलाईन के निर्माण के माध्यम से मराठवाडा और विदर्भ के 25 लाख प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार निर्माण क्षमतावाली एक परियोजना की। सांसद के रूप में इन परियोजनाओं को पूरा करने हेतु कार्य किया।
- 1987 • अध्यक्ष - महाराष्ट्र राज्य मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड
- 1990 • पाथरी विधानसभा चुनाव में यथाशक्ति चुनाव लडा
  - परभणी जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंक, विभिन्न सरकारी संस्थाएँ, ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ, मुंबई मार्केट कमिटी, मार्केटिंग फेडरेशन जैसी संस्थाओं में नौकरियाँ प्रदान करने में अहम भूमिका निभाने वाले
- 2009 • पंद्रहवीं लोकसभा सदस्य (परभणी) - संसद में सर्वाधिक उपस्थिति तथा सक्रिय योगदान
- 2014 • मोदी लहर दिखाई देने के बावजूद भी तत्त्वनिष्ठा हेतु सांसद पद नकार दिया। इसका प्रमुख कारण शिवसेना पक्षप्रमुख का स्वभाव
- 2019 • लोकसभा और विधानसभा चुनावों में प्रमुख भूमिका निभायी

\* सन 1987 उप-चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी विधायक बनाने में प्रमुख भूमिका निभाने वाले

\* देश की नीति में बदलाव लाकर, देश के प्रथम सहकारी खाद कारखाना पॅफको (SSF) के संस्थापक (90's)

\* पाच विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों से प्रभावी ढंग से चुनाव लड़ने वाले असामान्य साहसी प्रत्याशी

\* विभिन्न समाज के युवाओं को विधायक बनाने में निर्णायक भूमिका निभाने वाले लोकनेता

वापुसाहेब की कारकीर्द हेतु



स्कैन करें।

### डॉ. सौ. संध्या गणेशराव दुधगांवकर पिएच.डी. प्राणीशास्त्र (1981)

- 2007 • कृषि के प्रति निष्ठावान व्यक्ति. भोगाव देवी (जितूर) में 100 एकर तालाब का पूनरुज्जीवन करने वाली टीम की मुखिया
  - सचिव : ज्ञानोपासक शिक्षण मंडल, परभणी
  - निवृत्त प्राचार्या : ज्ञानोपासक महाविद्यालय, परभणी
- 2022 • जलदुर्गा गौरव पुरस्कार 2022, पुणे-संस्कार भारती और रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3131 द्वारा सन्मानित

संपर्क हेतु : समीर गणेशराव दुधगांवकर M.S. Mech Engg. USA 📞 +9191 4536 4999



## कुछ सम्माननीय साथिदारों की नजरों से बापूसाहेब...!

### मराठवाडा के कर्मवीर : अँड. गणेशराव दुधगांवकर (बापूसाहेब)

श्री. भिमराव हटकर. वरिष्ठ पत्रकार, नांदेड

“राष्ट्रीय औसत से लगभग डेढ़ गुना ज्यादा प्रश्न बापूसाहेब ने संसद सदन में पूछ कर जनता की आवाज को शासनकर्ताओं तक पहुंचाया।”

#### बापूसाहेब द्वारा सभागृह में उपस्थित किए हुए प्रश्न :

1. परभणी के वसंतराव नाईक कृषि विश्वविद्यालय में मेगा फूड पार्क निर्माण किया जाए। (दि.10-08-2010)
2. नए बन रहे भूसंपादन कानून 2011 में किसानों को उचित रकम मिलना तथा उनके आर्थिक हितों का संवर्धन किया जाए।
3. अकाल एवं अभाव की स्थिति की पृष्ठभूमि में किसानों को कम कीमत में बीज तथा खाद उपलब्ध कर दिया जाए। (दि.19-08-2010)
4. 2009 में हुई अतिवृष्टि से गोदावरी नदी में आई बाढ़ के कारण किसानों तथा अन्य पीड़ितों को आर्थिक मदद दी जाए। (दि. 09-12-2009)
5. नांदेड से पैठण यह राष्ट्रीय महामार्ग 220 किया जाए। (दि.20-12-2011)
6. परभणी जिले में से जाने वाला राष्ट्रीय महामार्ग क्रमांक 222 यह चौगुना किया जाए। (दि.22-08-2012)
7. मेहकर तहसील के लोणार झील को राष्ट्रीय पर्यटन का दर्जा देकर उसका विकास किया जाए।
8. राज्य के धनगर समाज को अनुसूचित जमाती में समाविष्ट करके उन्हें उस प्रवृत्ति की सभी सुविधाएं दी जाए। (दि.5-12-2012)
9. केंद्रीय शिक्षा संस्थान प्रवेश अंतर्गत आरक्षण दुरुस्ती विधेयक 2020 पर हुई चर्चा में सहभागी होकर आरक्षण के समर्थन में विचार व्यक्त किए। (दि.16-05-2012)
10. 2009 में हुई अतिवृष्टि तथा बाढ़ से उत्पन्न स्थिति से निर्माण डेंगू, मलेरिया, पीलिया, चिकनगुनिया आदि रोगों से त्रस्त जनता को केंद्र द्वारा वैद्यकीय सहायता पैकेज दिया जाए। (दि.30-11-2010)

बापुसाहेब ने संसद में पूछे हुए 418 प्रश्नों में से उपर्युक्त दस प्रश्न तथा उन प्रश्नों का स्वरूप देखें तो उन प्रश्नों से बापुसाहेब के स्वभावगत गुण, जैसे-सामाजिक उत्तरदायित्वता का एहसास, नैतिकता तथा विकासात्मक दृष्टि आदि दृष्टिगोचर होते हैं। संसद हो या विधानसभा; प्रश्न पूछना, बहस में योगदान देना आदि सांसदिय आयुधों का उपयोग बापुसाहेब ने जनसाधारण लोगों के प्रश्नों को अभिव्यक्ति देने के लिए किया है, यही बात स्पष्ट होती है।

## सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने वाले अॅड. गणेशराव दुधगांवकर

श्री. अशोक पाटील, भूतपूर्व मंत्री  
केज जि.बीड

भूतपूर्व सांसद अॅड. गणेशरावजी दुधगांवकर नौ सितंबर 2019 को पचहत्तरवें वर्ष में पदार्पण कर चुके हैं। अॅड. दुधगांवकर अत्यंत शांत, संयमी, बुद्धिमान, संवेदनशील, उत्तरदायित्व का एहसास रखने वाले व्यक्ति हैं। जनसाधारण का हित करने वाले, इसके साथ ही राजनीतिक वर्तुल के बाहर निकलकर सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सातत्यपूर्ण काम करने वाले नेता के रूप में ख्याति प्राप्त हैं। उद्योग, सहकार आदि विविध क्षेत्रों में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

अॅड. दुधगांवकर जी को छात्रावस्था से ही समाजसेवा में अभिरुचि थी। औरंगाबाद में विधि शिक्षा ग्रहण करते समय वे 'मराठवाडा विश्वविद्यालय संघ' इस संघटन से जुड़ गए। इस संघटन के माध्यम से उन्होंने अनेक छात्र आंदोलन करवाए। फिर वह परभणी का कृषि विश्वविद्यालय का आंदोलन हो या मराठवाडा विकास आंदोलन हो। इन आंदोलनों में उनका सहयोग उल्लेखनीय रहा है। संघटन का काम करते समय उन्होंने कभी भी प्रसिद्धि की चाह नहीं रखी और न ही संघटन में किसी पद की अपेक्षा की।

अॅड. दुधगांवकर जी ने विधि की पढ़ाई पूर्ण करने उपरांत परभणी आकर सच्चे अर्थों में सामाजिक कार्य करना आरंभ किया। किसानों, मेहनतकश जनता के काम करते समय ही वे महाराष्ट्र पणन संघ के संचालक बने। यह अवसर मिलने के बाद उन्होंने सहकार क्षेत्र में अत्यंत उल्लेखनीय कार्य किया। 1980 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पक्ष ने उन्हें वसमत चुनाव क्षेत्र से उम्मिदवारी प्रदान की। यहाँ बहुमत प्राप्त करके वे विधानसभा में कार्य करने लगे। उनके समाजाभिमुख कार्यों को देखकर ही स्व. वसंतदादा पाटील जी के मंत्रीमंडल में 'तंत्रशिक्षण तथा रोजगार हमी योजना' विभाग के मंत्री के रूप में कार्य करने का उन्हें अवसर दिया गया। रोजगार गॅरंटी योजना के माध्यम से उन्होंने अनेक लोकोपयोगी योजनाएँ महाराष्ट्र में कार्यान्वित की। उनके इन कार्यों के परिणामस्वरूप ही उन्हें जितुर विधानसभा चुनाव क्षेत्र की उमीदवारी मिली। यह चुनाव भी वे बहुमत से जीत गए।

विधानसभा में तथा राज्यस्तर पर नेतृत्व करते समय अॅड. दुधगांवकर जी ने युवाओं तथा अपने कार्यकर्ताओं को सामाजिक राजनीतिक क्षेत्र में काम करने के अवसर प्रदान किए तथा उनमें नेतृत्व गुण विकसित करने के प्रयास किए। छात्रावस्था में ही अॅड. दुधगांवकर कहा करते थे कि सांसद के रूप में काम करने का अवसर मिला तो अच्छा होगा। और यह अवसर उन्हें 2005 के संसद चुनाव में मिला।

परभणी जिले के सांसद के रूप में काम करते समय उन्होंने अनेक लोकोपयोगी कार्य किए। केंद्र शासन की 'कोयला, खाण तथा पोलाद' इस स्थायी समिति का सदस्य बनने का सम्मान उन्हें मिला। संसदीय कामकाज में सर्वाधिक उपस्थिति का विक्रम उन्होंने अपने नाम पर किया। इसी समय 'अमेरिकन कैलिफोर्निया बेव्हरीज बिअर' कंपनीने गणेश देवता का लेबल बोतल को लगाया था तब यह हिंदू धर्म के अपमान का मुद्दा सर्वप्रथम लोकसभा में उन्होंने ही उपस्थित किया था। परभणी नगरपालिका को महानगरपालिका का दर्जा प्राप्त हो, इस हेतु किए गए धरना आंदोलन का नेतृत्व अॅड. दुधगांवकर जी ने ही किया था। महँगाई के खिलाफ किए गए 'जूते मारो' आंदोलन का नेतृत्व भी उन्होंने ही किया था। 2011 के शीतकालीन अधिवेशन में कपास खरेदी से संबंधित हुए धरना आंदोलन में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।



बेलगाँव, निपाणी, कारवार यहाँ के मराठी लोगों के अधिकारों के लिए हुए धरना आंदोलन में उनका योगदान रहा। अल्पसंख्याक बंधुओं के लिए शादीखाना बनवाने हेतु निधि मंजूर कर लेना, सिद्धेश्वर प्रकल्प वृद्धि हेतु राज्य तथा केंद्र शासन की ओर समर्थन करना, मराठवाड़ा प्रांत के विकास हेतु शासन नियुक्त 'कैलकर समिती' को महत्वपूर्ण सूचनाएँ देना, मराठवाड़ा में हाजिरा से नांदेड़ गैस पाइप लाईन मंजूर हो, इस हेतु यथाशक्ति प्रयत्न तथा समर्थन किया।

इतना ही नहीं बल्कि परभणी के विकास कार्यों में उनका योगदान अतुलनीय रहा है। वसमत रोड़ राष्ट्रीय महामार्ग चौड़ा करने के काम का समर्थन उन्होंने ही किया था। इसके साथ ही शैक्षणिक संस्थाओं के निर्माण तथा विकास में उनका बहुमूल्य योगदान रहा है। परभणी जिले में 'ज्ञानोपासक शिक्षण मंडल' के माध्यम से अनेक पाठशालाएँ तथा महाविद्यालय शुरू किए। परिणामतः शहरी छात्रों के साथ-साथ देहाती छात्रों को भी पढ़ाई का अवसर मिला। उनके अनगिनत छात्र राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर विविध क्षेत्रों में प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

अँड. दुधगांवकर जी को सहकार क्षेत्र में महाराष्ट्र राज्य को. ऑप. कपास उत्पादन समिती, इफको, नाफेड, कृषक भारती को. ऑप. जि. नई दिल्ली आदि के संचालक के रूप में काम करने का अवसर मिला। इसके साथ ही उन्होंने महाराष्ट्र राज्य पणन महासंघ के अध्यक्ष के रूप में भी काम किया। परभणी जिले के किसानों को गुणवत्तापूर्ण खाद मिले, इस हेतु उन्होंने जितूर में दाणेदार मिश्र खाद कारखाना शुरू किया था। सहकारी चिनी के कारखानों को वे समय-समय पर यथाशक्ति मदद करते रहे।

अँड. दुधगांवकर जी अपने इतने प्रदीर्घ राजनीतिक, सामाजिक कार्यों के बावजूद भी आम जनता के साथ उनके संबंध अतिशय स्नेहपूर्ण हैं। लोगों की समस्याएँ हल करने के लिए वे आज भी प्रयत्नशील हैं। उनके और मेरे संबंध छात्रावस्था से ही युवा संघटन के माध्यम से रहे हैं। अँड. दुधगांवकर जी का सहयोग तथा मदद हमेशा मिलती आई है और आज भी मिल रही है।



## राज्य की राजनीति को प्रभावित करने वाले तथा नेतृत्व निश्चित करनेवाले नेता : अँड.गणेशराव दुधगांवकर

- श्री.मुश्ताक अहमद  
संपादक, उर्दू दैनिक मुकद्दस, औरंगाबाद  
भूतपूर्व अध्यक्ष, शहर जिला राष्ट्रवादी काँग्रेस, औरंगाबाद

मराठवाड़ा की भूमि में जन्मे तथा राज्य की राजनीति में एक समय अपनी मुद्रा लगाने वाले भूतपूर्व मंत्री गणेशराव जी दुधगांवकर, इन्होंने अपनी उम्र के पचहत्तर वर्ष पूर्ण किए हैं, इस सुअवसर पर मन आनंदित हो रहा है। वे प्रदीर्घ समय तक राजनीति में सक्रिय रहे अनुभवी व्यक्ति हैं।

महाराष्ट्र राज्य की राजनीति की दिशा निश्चित करने में बापूसाहेब की अहम भूमिका रहती थी। बाबासाहेब भोसले जी को मुख्यमंत्री पद से हटाने का संकल्प बापूसाहेब ने किया। अंततः उसी वर्ष बाबासाहेब भोसले जी को मुख्यमंत्री पद छोड़ना पड़ा। आदिक मुख्यमंत्री नहीं बनें, वे उपमुख्यमंत्री बनाए गए और वसंतदादा पाटील जी मुख्यमंत्री बने थे। उस समय बापूसाहेब को मंत्रीमंडल में लिया गया। इस प्रकार राज्य की राजनीति में उनका प्रभाव था।

आज विगत दिनों को देखे तो उन्होंने किए हुए कार्यों की मुद्रा हमें स्पष्ट दिखती है। उन्होंने निर्माण की हुई संस्थाओं में अनगिनत लोगों को रोजगार मिला है। इसके साथही आज की पीढ़ी को ज्ञान प्राप्ति का मार्ग भी मिला है। इसमें से अनेक पीढ़ियों का निर्माण हुआ है। कई परिवार आर्थिक दृष्टि से समृद्ध हुए हैं। खेती में समृद्धि आयी है। परभणी जिला मराठवाड़ा सर्वाधिक चिनी उत्पादवाला जिला है। इसका श्रेय गणेशराव जी दुधगांवकर को जाता है। तत्कालिन काँग्रेस की राजनीति में दुधगांवकर जी को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान था। महाराष्ट्र का नेतृत्व निश्चित करने वाले गिने-चुने लोगों में से एक थे - बापूसाहेब।

1980 में औरंगाबाद विधानसभा चुनाव क्षेत्र से काँग्रेस की ओर से अब्दुल अजीम चुनकर आए थे। मैं उन्हीं का कार्यकर्ता था। उस चुनाव में दुधगांवकर वसमत चुनाव क्षेत्र से विजयी हुए थे। काँग्रेस पक्षश्रेणी में दुधगांवकर जी का वजन था। राज्य की राजनीति में प्रभाव था। मैं और कुछ पदाधिकारी सभी मिलकर दुधगांवकर जी से मिले और हमने उनसे बिनती की कि अब्दुल अजीम जी को भी आपके साथ मंत्रीमंडल में काम करने का अवसर मिले। दुधगांवकरजी को 'बापूसाहेब' इस उपनाम से सभी लोग जानते-पहचानते हैं। उनकी एक विशेषता है कि उन्होंने एक बार वचन दिया तो काम हुआ ही समझो। उन्होंने हमें आश्वासन दिया और उसे पूरा भी किया। परिणामतः अब्दुल अजीम जी बापूसाहेब के साथ मंत्री बनें।

अल्पसंख्याकों के हित को उन्होंने हमेशा ध्यान में रखा। अल्पसंख्यांक समुदाय के हित के लिए बापूसाहेब ने किया हुआ कार्य चिरस्मरणीय है।

1985 में परभणी जिले के सभी विधानसभा चुनावक्षेत्रों की उम्मीदवारी दुधगांवकर जी के कहने पर दी गई थीं। इस चुनाव में दुधगांवकर जी ने सभी उम्मीदवारों को चुनकर लाया था अतः काँग्रेस पक्ष में उनका वजन और भी बढ़ गया था।

राजनीति में युवा वर्ग को अवसर देना बापूसाहेब की विशेषता थी। युवाओं पर ही उनकी राजनीति निर्भर थी। वे एक साहसी नेता के रूप में प्रसिद्ध थे। राजनीति में रहकर उन्होंने कभी भी अपने स्वार्थ का विचार नहीं किया। सुरेश वरपुडकर को कांग्रेस ने विधानसभा में उम्मीदवारी नहीं दी थी। बापूसाहेब ने उम्मीदवारी दिलाने के काफी प्रयास किए थे। तब बापूसाहेब कांग्रेस के पदाधिकारी थे। बापूसाहेब ने तब सुरेश वरपुडकर को सिंगणापुर विधानसभा चुनाव क्षेत्र में निर्दलिय प्रत्याशी के रूप में खड़ा किया और उन्हें चुनकर भी लाया। तब काँग्रेस पक्ष ने उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी की। राजनीति में रहकर उन्होंने अपने स्वार्थ का कभी भी विचार नहीं किया। वे हमेशा कार्यकर्ताओं की मदद करते रहें।

श्री. शंकररावजी चव्हाण को मुख्यमंत्री बनाने में बापूसाहेब की भूमिका अहम थी। मराठवाड़ा प्रांत को मुख्यमंत्री पद मिले, इस हेतु पक्षीय स्तर पर यथाशक्ति समर्थन किया था। परिणामतः श्री. शंकररावजी चव्हाण को मुख्यमंत्री पद मिला।

बापूसाहेब जी ने अपने कार्यकाल में युवाओं को आत्मनिर्भर बनाया। उन्होंने अल्पसंख्याकों की समस्याएँ हल कीं। समूचा समाज, सभी जातियों, सभी धर्मों, सभी पंथों को अपने साथ लेकर चलने वाला नेता अर्थात् अँड. गणेशरावजी दुधगांवकर हैं। अपनी आयु के पच्चहत्तर वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपलक्ष्य में उन्हें बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।



## कर्मयोगी : गणेशराव जी दुधगांवकर

श्री. साहेबराव लबडे (अवकाशप्राप्त सहायक पोलिस आयुक्त, पुणे)

सम्माननीय गणेशरावजी उपाख्य बापूसाहेब दुधगांवकर हमारे नजदीकी रिश्तेदार हैं। अतः बचपन से ही उनका परिचय था ही लेकिन उनका सही परिचय 1965-66 में मैं श्री शिवाजी महाविद्यालय में पढ़ाई हेतु जाने के बाद ही हुआ। बापूसाहेब का अँडमिशन सायंस को था और मेरा आर्ट्स को। बापूसाहेब अपने सुस्वभाव के कारण विद्यार्थी प्रिय थे। उनका व्यक्तित्व प्रभावी था। अतः अन्य छात्र भी उनके साथ हमेशा रहते थे। उनका बोलना करारी तथा दृढ़संकल्प भरा था। साहसीवृत्ति तथा विवेकी निर्णयक्षमता उनमें होने के कारण छात्रों पर उनका अच्छा प्रभाव पड़ा था। कॉलेज के जनरल सेक्रेटरी के चुनाव में बापूसाहेब उम्मीदवार थे उस समय मैं साए की तरह उनके साथ था। परिणामतः उनके स्वभाव के अनगिनत पहलू मुझे अनुभव हुए। उदार वृत्ति, शांत एवं विवेक स्वभाव, परिपक्व विचार एवं आवेशपूर्ण प्रस्तुति आदि बातों के कारण वे अपने विचार सामनेवाले व्यक्ति को समझा पाते थे। यह चुनाव उनके भावी जीवनरूपी फिल्म का जैसे ट्रेलर ही था। चुनाव भावनात्मक था। विज्ञापन भी कीए गये थे। विरोधियों ने बहुत कोशिश की लेकिन चुनाव जीते बापूसाहेब ही। इन्हीं अनुभवों से ही उनके भावी जीवन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

बापूसाहेबजी ने अपनी स्थानक की पढ़ाई श्री शिवाजी महाविद्यालय से ही पूर्ण की। लेकिन उनकी ज्ञान लालसा उन्हें आगे की शिक्षा के लिए प्रेरित कर रही थी। आगे चलकर उन्होंने एल.एल.बी. की उपाधि हासिल की। इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने पदव्युत्तर शिक्षा ग्रहण करके एल.एल.एम. यह उपाधि भी हासिल की। जिस व्यवसाय का संबंध सीधे जनसाधारण से आता है वह वकालत का व्यवसाय आरंभ किया और उसमें उन्होंने सफलता भी प्राप्त की। इसके बाद राजनीति का क्षेत्र उन्हें जैसे आमंत्रण दे रहा था।

बापूसाहेब के लिए राजनीति कोई नई बात नहीं थी। राजनीति उनके घर में ही थी। उनके बड़े भाई लिंगराव उर्फ दादा जिला मध्यवर्ती बैंक के अध्यक्ष थे। आज के समय में राजनीति अल्प समय में अमीर बनने का मार्ग समझा जाता है। लेकिन बापूसाहेब उस मार्ग के पथिक नहीं थे। वह खानदानी अमीर थे। पैसा कमाना यह उनके जीवन का उद्देश्य तब भी नहीं था और आज भी नहीं है। इसलिए राजनीति में आना उनके लिए सहज स्वाभाविक था। राजनीति में प्रवेश आसानी से हुआ लेकिन राजनीति में बने रहना और सफल होना यह बात व्यक्ति की गुणवत्ता लोकप्रियता तथा लोगों की समस्याएं हल करने की योग्यता पर निर्भर होती है। बापूसाहेब का व्यक्तित्व लोगों की समस्याएं हल करने कि तीव्र लालसा तथा सुसंस्कृत पारिवारिक विरासत आदि कारणों से बापूसाहेब इस क्षेत्र में भी सफल हुए। बापूसाहेब के स्वभाव की सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात है - उनकी निस्पृह वृत्ति। किसी से भी किसी भी प्रकार की कोई अपेक्षा नहीं। ऐसे निस्वार्थ भाव से किए हुए कार्यों के कारण उन्हें आम जनता का समर्थन हमेशा मिलता रहा। चुनाव तक मतभेद हो सकते हैं, पर एक बार चुनकर आने के बाद सभी पक्षों के लोगों के काम करते थे। किए हुए कामों का श्रेय उन्हें मिले यह अपेक्षा उन्होंने नहीं कि। नहीं किए हुए कामों का श्रेय लेने का आज का जमाना है, ऐसे जमाने में बापूसाहेब जैसा राजनेता मिलना मुश्किल है। उनके इन स्वभावगत गुणों के कारण ही लोगों का समर्थन उन्हें हमेशा ही मिलता रहा है। इसलिए वह विधायक सांसद तथा मंत्री बन सके।

"Politics is a dirty game", ऐसा कहा जाता है। इस बात का अनुभव भी बापूसाहेब को आया। उनकी उंगली पकड़कर जिन्होंने राजनीति में चलना सिखा, जिन पर बापूसाहेब ने विश्वास किया, उन्होंने ही बापूसाहेब को धोखा दिया। बापूसाहेबजी के स्वभाव में खुन्नस तथा बदला लेने की प्रवृत्ति ही न होने के कारण उन्होंने इन धोखा देनेवालों को भी माफ कर दिया और अपना कार्य अखंड रूप से शुरु रखा। सभी लोगों की बातें वे सुनते थे लेकिन जो सही है, वही कार्य करते थे। किसी के कहने से उन्होंने किसी को नजदीक नहीं लिया और किसी के कहने पर किसी को

दूर भी नहीं किया। वह हमेशा अपने कानों की तुलना में आंखों पर विश्वास करते थे। उसी तरह जीवन में आए हुए परिणामों के लिए उन्होंने कभी भी दूसरों को उत्तरदाई नहीं समझा। वैचारिक मतभेद होने के बाद उन्होंने पक्षांतर भी किया। वह मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठित पदों के अधिकारी बने, लेकिन सत्ता एवं अधिकारों का अहंकार उन्हें कभी नहीं रहा। पदों पर रहते समय भी अपने सहयोगियों तथा कार्यकर्ताओं के साथ उनका आचरण हमेशा सम्मानजनक ही रहा। वह स्वयं एक प्रामाणिक कार्यकर्ता थे। इसलिए समाज में रहने वाले सर्व साधारण व्यक्ति से लेकर उच्च पदस्थ व्यक्ति तक सभी के प्रति उनके आचरण में साधर्म्य था।

ऐसा कहते हैं कि, 'प्रत्येक पुरुष को जीवन में मिली हुई सफलता के पीछे एक स्त्री का हाथ होता है।' बापूसाहेबजी की सहधर्मचारिणी सौ. संध्याताई इस बात का सर्वोत्तम उदाहरण है। बापूसाहेब जब राजनीति में सक्रिय थे तब परिवार की सभी जिम्मेदारियों को संध्याताई ने निभाया। बच्चों की पढ़ाई, सुसंस्कार तथा खेती इन जिम्मेदारियों को उन्होंने सफलतापूर्वक निभाया। शिक्षा क्षेत्र की सर्वोच्च उपाधि हासिल करके उन्होंने अपनी बौद्धिक क्षमता का परिचय दिया है। उसी तरह ज्ञानोपासक महाविद्यालय की प्राचार्या के रूप में सफलतापूर्वक कार्य करके एक उत्कृष्ट प्रशासक होने का परिचय भी दिया है। बापूसाहेब का साथ हर हालत में उन्होंने निभाया है। वैचारिक तथा भावनिक एकमत के कारण इस द्वांपत्य का पारिवारिक तथा सांसारिक जीवन सफल रहा है।

बेटा समीर तथा बेटी मधुरा यह दोनों गुणी, बुद्धिमान तथा आज्ञाकारी संतति इस द्वांपत्य को मिली है। माता-पिता दोनों बुद्धिमान तथा कर्तृत्व संपन्न हैं। संत तुकाराम महाराज कि काव्यपंक्ति 'शुद्ध बीजापोटी फळे रसाळ गोमटी', के अनुसार दोनों बच्चे बुद्धिमान होने के कारण छात्रवृत्ति पाकर अध्ययन हेतु अमेरिका जाकर उच्चशिक्षित हुए। समीर अब भारत लौटकर अपनी बुद्धि तथा ज्ञान का उपयोग अपने समाज तथा राष्ट्र को हो, इस हेतु कार्यशील है। बापूसाहेब के मार्गदर्शन में वह भी अपना कार्य कर रहा है।

बापूसाहेब एक कर्मयोगी हैं। श्रीमद्भगवद्गीता का कर्मयोग, जिसमें फल की आशा न करते हुए कर्म करने के लिए कहा गया है; वह बापूसाहेब जीवनभर जिये हैं। अतः 'कर्मयोगी' यह विशेषण उनके लिए बिल्कुल सार्थक है।

निस्वार्थ, निष्कलंक जीवनयापन करनेवाले बापूसाहेब का मेरे जीवन में स्थान अनन्यसाधारण है। महाविद्यालयीन स्नेही, एक रिश्तेदार इसके परे जाकर उन्होंने समय-समय पर मेरी मदद की है तथा मार्गदर्शन भी किया है। पुलिस विभाग में जाने की प्रेरणा उन्होंने ही दी है। मेरे लिए वे जीवनभर दीपस्तंभ बनकर मार्गदर्शन करते रहें। उनके इस अमूल्य सहयोग तथा मार्गदर्शन का ऋण मुझ पर हमेशा रहेगा।

बापूसाहेब तथा मैं आज भी स्नेही हैं। मित्रता की दृष्टि से वे मुझे बराबरी का मानते हैं, यह उनका बड़प्पन है, हृदय की उदारता है। इसके बावजूद भी बापूसाहेब के प्रति मेरे मन में हमेशा आदरभाव तथा सम्मान ही रहेगा। विभिन्न पारिवारिक समारोह में हमारी भेंट नित्य होती है। हम दोनों के परिवार एक दूसरे से सुपरिचित हैं। हमेशा एक-दूसरे के घर आना-जाना होता है। परभणी को जब भी जाता हूं तो बापूसाहेब के घर पर भी ठहरता हूं। दिलखुलास गप्पें होती हैं। हमारी दोस्ती को अब साठ साल पूरे हुए हैं। यह दोस्ती इसी तरह अंतिम साँस तक रहनेवाली है।

बापूसाहेब के अमृत महोत्सव के इस पावन अवसर पर मैं उन्हें सादर प्रणाम करता हूं। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि, वे दीर्घायु बने, उनका भावी जीवन निरामय रहे और उनका मार्गदर्शन सबको नित्य मिलता रहे।

शृणुयात् शरद शतः

प्रवरवरम शरद शतः

जीवेत् शरद शतः

भुयात् शरद शतः



## ज्ञानोपासक गणेशराव दुधगांवकर

- श्री. स. सो. खंडाळकर

विशेष प्रतिनिधी, लोकमत, औरंगाबाद

हाफ दाढ़ी... मूछोंवाला... उँची कदकाठी, बलशाली व्यक्तित्व के धनी, अर्थात - गणेशरावजी दुधगांवकर । मराठी फिल्म में यदि व्हिलन की भूमिका करने का अवसर मिला होता, तो इस भूमिका को गणेशरावजी ने न्याय दिया होता । यह हंसी-मजाक की बात छोड़ो, लेकिन गणेशरावजी वास्तव में 'हीरो' है । विशेषतः शिक्षा क्षेत्र में उन्होंने दिए हुए योगदान को देखा जाए, तो वह शिक्षा महर्षि ही है । उनका सहकार क्षेत्र का योगदान देखा जाए, तो वह सहकार महर्षि ही है । गणेशराव दुधगांवकर ज्ञानोपासक है । उन्होंने स्थापित की हुई पाठशालाएँ, महाविद्यालय तथा छात्रावासों के नाम पढ़ने पर उनको ज्ञानोपासक कहना सार्थक लगता है । अपनी प्राण प्रिय संस्थाओं को 'ज्ञानोपासक' यह नाम देना; यह सोद्देश की हुई कृति है ।

'ज्ञानोपासक' इस शब्द में ही सब कुछ समाया हुआ है । यह शब्द ही अर्थपूर्ण है । 'ज्ञानोपासक' इस शब्द के सहारे गणेशरावजी दुधगांवकर जैसे लगता है - छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा ज्योतिबा फुले, राजश्री शाहू महाराज, सयाजीराव गायकवाड तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की शैक्षणिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं । यह काम स्वागतार्ह ही है । इसके साथ ही यह काम अभिनंदनीय तथा अभिमानास्पद भी है । मुझे तो गणेशरावजी की महानता इसी कार्य में अनुभव होती है । इसी ज्ञानोपासक गणेशराव उर्फ बापूसाहेब का सही उपयोग समाज को होगा । उनके हाथों एक नहीं अनगिनत पीढ़ियों का निर्माण होगा । उनका यह कार्य बेजोड़ है । इसीलिए परभणी, जितूर, सेलू, मानवत, पाथरी आदि तहसीलों का इलाका ही नहीं बल्कि समूचा मराठवाडा गणेशराव दुधगांवकरजी के कर्तृत्व के गीत गाएगा ।

मराठी के मुर्धन्य कवि प्रा. फ. मुं. शिंदे, प्रसिद्ध बांसुरीवादक दिवंगत प्रा. दत्ता चौगुले तथा जिन्हें शिक्षा की कोई परंपरा नहीं थी, लेकिन जो फ. मुं. और चौगुले इनकी उंगली पकड़कर उस समय एम.ए. की शिक्षा पूर्ण करनेवाले, धों. ज. गुरुव, इनके मुंह से हमेशा गणेशराव दुधगावकर का नाम सुनने को मिलता था । मदद करने की प्रवृत्तिवाले गणेशरावजी के अनेक किस्से सुनने को मिलते थे । ये सभी लोग जब पढ़ने हेतु परभणी में थे, तब इन्हें गणेशरावजी का सहयोग हमेशा मिलता रहा । यह लोग, की हुई इस मदद को भूलना भी चाहें तो नहीं भुला सकते । यह सच है कि, फाइव स्टार होटल में नहीं मिलेगी ऐसी धों.ज.गुरुव इन्होंने बनाई हुई सब्जी का जिफ्र फ.मु. सर, डॉक्टर नागनाथ कोतापळे सर, प्रा. शफी सर, प्रा. अजीत दलवी सर तथा स्वयं गणेशराव दुधगावकर आज भी करते हैं ।

गणेशराव दुधगांवकर ने राजनीति में बहुत बड़ी सफलता हासिल की है । दो बार विधायक, एक बार सांसद बने। यह सारा समय उन्होंने मराठवाड़ा का विकास करने में लगाया । देश का, महाराष्ट्र का सुसंस्कृत नेतृत्व यशवंतराव चव्हाण तथा वसंतदादा पाटील ये गणेशराव जी के आदर्श रहे हैं । वसंतदादा पाटील के मंत्रिमंडल में गणेशराव तंत्र शिक्षण, रोजगार हमी योजना तथा सेवा योजना विभाग के मंत्री बने । इस अवसर का पूरा लाभ गणेशराव ने उठाया । उन्होंने 45 आयटीआय, 45 टेक्निकल हायस्कूल, साथही उदगीर और निलंगा में अभियांत्रिकी महाविद्यालयों की स्थापना की । इन कार्यों से उनकी दूरदृष्टि का परिचय मिलता है । उनका शिक्षा पर असीम प्रेम रहा है । इस दृष्टि से देखने पर गणेशराव 'ज्ञानोपासक' ही सिद्ध होते हैं ।

जब गणेशराव मंत्री थे, तब वे कई बार औरंगाबाद आए । शाहगंज के गांधी भवन में आयोजित कांग्रेस कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में उनके भाषण सुनने के कई अवसर लोकमत प्रतिनिधि के रूप में मुझे मिले । बापूसाहेब मुझे

एक सहृदयी, सामाजिक उत्तरदायित्व का एहसास रखनेवाले राजनेता लगे ।

अमर्याद लोकसंग्रह करनेवाले गणेशराव सच्चे अर्थों में ज्ञानोपासक है । वह एक अच्छे इंसान हैं, एक अच्छे दोस्त हैं । यह बात उनका शत्रु भी स्वीकार करता है । इस ज्ञानोपासक को दीर्घायु मिले, उनके हाथों निरंतर सत्कर्म होते रहे यही हार्दिक मंगल कामना ।



## स्वाभिमानी नेता : गणेशराव दुधगांवकर

श्री. गोपीकिशन दायमा

महाविद्यालयीन जीवन से ही अॅड. गणेशराव दूधगांवकर को राजनीति में रुचि रही है । उनका स्वभाव, स्मित हास्य तथा स्वाभिमान आदि बातों के कारण एक विशाल मित्र परिवार उनके साथ जुड़ गया । सच देखा जाए, तो स्वाभिमान रखकर राजनीति करना, बड़ा ही दुष्कर कार्य है । यह कठिन कार्य अॅड. गणेशराव दुधगांवकर बड़ी सहजता से करते हैं। यह बात उनके राजनीतिक कार्यों का अध्ययन करने के बाद अनुभव होती है ।

मेरे महाविद्यालयीन जीवन से लेकर आजतक के गणेशराव दूधगांवकर के कार्यों को मैंने बड़ी नजदीकी से देखा है । राजनीति में भी जितने बड़े हैं, उससे भी कई गुना बड़े समाज कारण में है । सामाजिक कार्य हो या राजनीति हो, दोनों सैद्धांतिक स्तर पर होने चाहिए; ऐसा उनका मत था । यह उनका बहुत बड़ा सद्गुण है । महाराष्ट्र की राजनीति में अॅड. गणेशराव दुधगांवकर का उल्लेख एक अद्वितीय राजनेता के रूप में होता है । दृढसंकल्प के साथ में राजनीति करते हैं । इस कारण समाज उनके समर्थन में खड़ा हो जाता है । चुनाव सभा की व्यूहरचना वे कल्पकता के साथ करते हैं । सभा में दिया जाने वाला उनका भाषण जनसाधारण लोगों को सहजता से समझ में आता है । अॅड. गणेशराव दूधगांवकर उच्चविद्या विभूषित है, लेकिन खेत में हल चलाने वाले अशिक्षित किसान की भाषा को समझ लेने की अनोखी विशेषता उनमें देखने के लिए मिलती है।

महाराष्ट्र की राजनीति में मंत्री पद की शपथ लेने के बाद हजीरा गैस पाइपलाइन मराठवाड़ा में किस तरह लानी है ? इसकी ब्लूप्रिंट उनकी जेब में रखने वाला अॅड. गणेशराव दूधगांवकर यह मराठवाड़ा का पहला नेता है ।

अॅड. गणेशराव दुधगांवकर ने अपने चुनाव क्षेत्र में अनगिनत विकास कार्य किए । इन कार्यों की वजह से उनको चाहने वाला वर्ग उन्हें कभी भी भूल नहीं सकता । ज्ञानोपासक महाविद्यालय के छोटे-से पौधे को उन्होंने विशाल वटवृक्ष में रूपांतरित कर दिया ।

सच देखा जाए तो इस कार्य में उनकी सुविद्य पत्नी डॉ. संध्याताई दूधगांवकर का अमूल्य सहयोग मिला है । उन्होंने उनके परिवारों के पढ़े-लिखे युवाओं को नौकरियां देने का बहुत बड़ा सामाजिक कार्य किया है । यह बात उनमें विशेष है । राजनीति की इस आदर्श कार्यशैली को देखकर ही समाज ने अॅड. गणेशराव दूधगांवकर को 'बापूसाहेब' यह उपाधि प्रदान की है ।



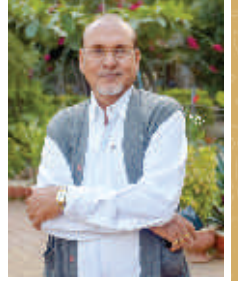
बाकी लेखों के लिए "कर्मयोगी बापूसाहेब" यह अमृत महोत्सवी गौरवग्रंथ जरूर पढ़ें ।



प्रकाशित संपुर्ण गौरवग्रंथ

गौरवग्रंथ से शब्दांकन लेकर अगले पन्नों पर का सारांश बनाया गया है ।

## हितचिंतकों के शब्दों में बापुसाहेब ...



पद | लोकनेता | रचनात्मक कार्य | एक समझदार जनसेवक | बापुसाहेब के ही शब्दों में

### पद

- \* राजनीतिक जीवन का आरंभ- जनरल सेक्रेटरी, श्री. शिवाजी महाविद्यालय, परभणी
- \* डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय में छात्र संगठन, सिनेट कार्यकारी मंडल सदस्य।
- \* परभणी के मराठवाडा कृषि विश्वविद्यालय के कार्यकारी मंडल के सदस्य।
- \* सन 1960 से परभणी जिला परिषद में एक महत्त्वपूर्ण समूह।

#### \* सन 1980 में विधायक (काँग्रेस)

\* वसमत विधानसभा मतदारसंघ, जि. हिंगोली (पहले परभणी जिला)

#### \* सन 1983 में राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार)

– रोजगार हमी योजना, तंत्र शिक्षण, सेवायोजना विभाग, महाराष्ट्र राज्य

मा.ना.श्री. वसंतदादा पाटील (मुख्यमंत्री) तथा मा.ना.श्री. रामरावजी आदिक (उपमुख्यमंत्री) इनके मंत्रीमंडल कार्यकाल में-

–अमरावती तथा बुलढाणा, इन दोनों जिलों के पालकमंत्री।

- \* प्रमुख अतिथि, मराठवाडास्तरीय संत जनाबाई साहित्य सम्मेलन, गंगाखेड। उस समय प्रारूप के संबंध में बापुसाहेब ने तुरंत कहा था, “अरे, इतनी रकम से क्या होने वाला है? जरा बड़ा प्रारूप तैयार करो तथा हम एकदिवसीय नहीं बल्कि दो दिन का भव्य तथा शानदार साहित्य सम्मेलन आयोजित करेंगे।”

#### \* सन 1985 में विधायक (काँग्रेस)

जितूर विधानसभा मतदारसंघ, जि. परभणी

#### \* 15 वी लोकसभा सदस्य (सन 2009-2014) (शिवसेना)

– केंद्र सरकार के कोयला, खाण तथा पोलाद इस स्थायी समिती के सदस्य।

– सांसदीय कामकाज में सर्वाधिक उपस्थिति का विक्रम स्थापित किया।

#### \* संस्थापक, 1989 में स्थापित नृसिंह सहकारी साखर कारखाना, लोहगाव

#### \* संस्थापक अध्यक्ष- PFFCO खाद कारखाना, जितूर सन 1989 से 2001

#### \* चेअरमन, म.रा.स. मार्केटिंग फेडरेशन, मुंबई, सन - 1989

#### \* संचालक, दुधगाव वि.का.से.स.सो, ता. जितूर

#### \* अध्यक्ष, 1960 में स्थापित जितूर तालुका सहकारी जिनिंग प्रेसिंग संस्था, जितूर

#### \* अध्यक्ष, 1975 में स्थापित जि.स. खरेदी विक्री संघ, परभणी

#### \* संचालक, म. रा. स. मार्केटिंग फेडरेशन, मुंबई, सन - 1978

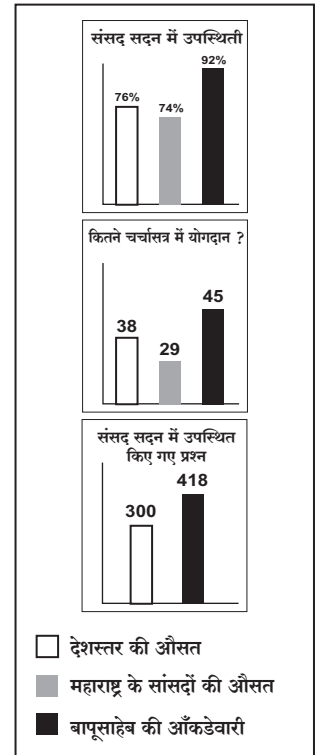
#### \* संचालक, IFFCO, नई दिल्ली, सन - 1989

#### \* संचालक, नाफेड, सन - 1987-88

#### \* संचालक, कृषक भारती को. सो. सन - 1989

#### \* चेअरमन, ज्ञानोपासक नागरी सहकारी बैंक, परभणी

#### \* अध्यक्ष तथा संचालक, महाराष्ट्र राज्य पणन महासंघ



## लोकनेता



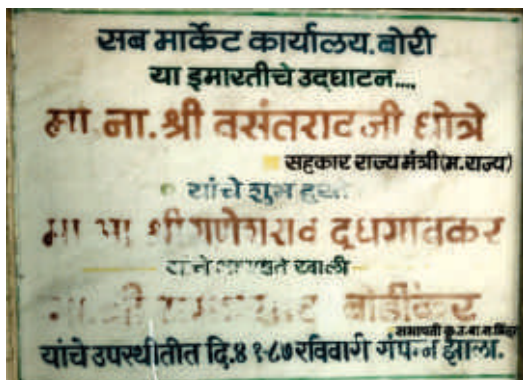
- 'निजामकालिन बंगले में बापुसाहेब रहते थे। उसे 'गोल बंगला' कहते थे। इस गोल बंगले में उनके मित्रों की हमेशा भीड़ लगी रहती थी।
- बापुसाहेब जी ने महाविद्यालयीन जीवन में मागासवर्गीय छात्रवृत्तिधारक विद्यार्थियों का संगठन तैयार किया तथा इस संगठन के माध्यम से व्याख्यानमाला का आयोजन किया।
- राज्य का मुख्यमंत्री पद मराठवाडा प्रांत को मिले, इस हेतु पक्षीय स्तर पर समर्थन किया। इसी समर्थन का परिणाम स्व. शंकरराव चव्हाण जी को मुख्यमंत्री पद प्राप्त हुआ।
- महाराष्ट्र तथा देश के सुसंस्कृत व्यक्तित्व यशवंतरावजी चव्हाण तथा वसंत दादा पाटील ये गणेशशिव जी के आदर्श थे। उनके वास्तव राजनीतिक गुरु मा. श्री. शंकररावजी चव्हाण तथा मा. श्री. लिंबाजीराव दुधगांवकर थे। इनकी वैचारिक विरासत को बापुसाहेब ने आगे बढ़ाया। मा. श्री. शंकररावजी चव्हाण को मुख्यमंत्री बनाने में बापुसाहेब आग्रही थे।
- सन-1978 को कांग्रेस की अध्यक्ष श्रीमती इंदिरा गांधी को तत्कालिन केंद्र शासन ने प्रतिशोध की भावना से गिरफ्तार किया, इस प्रकार की भावना जनमानस की हुई अतः देशभर में जेलभरो आंदोलन शुरू हुआ। परभणी जिले में भी जिला युवा कांग्रेस के अध्यक्ष अॅड. गणेशराव जी दुधगांवकर इनके नेतृत्व में जेल भरो आंदोलन संपन्न हुआ।
- विधायक बनने हेतु हर बार मतदारसंघ बदलने का साहस केवल बापुसाहेब ही दिखा सके।
- हाफ दाढ़ी... मूछोंवाला... उँची कढ़काठी, बलशाली व्यक्तित्व के धनी, अर्थात् - गणेशरावजी दुधगांवकर । मराठी फिल्म में यदि व्हिलन की भूमिका करने का अवसर मिला होता, तो इस भूमिका को गणेशरावजी ने न्याय दिया होता । यह हंसी-मजाक की बात छोड़ो, लेकिन गणेशरावजी वास्तव में 'हीरो' है । विशेषतः शिक्षा क्षेत्र में उन्होंने दिए हुए योगदान को देखा जाए, तो वह शिक्षा महर्षि ही है । उनका सहकार क्षेत्र का योगदान देखा जाए, तो वह सहकार महर्षि ही है । गणेशराव दुधगांवकर ज्ञानोपासक है । उन्होंने स्थापित की हुई पाठशालाएँ, महाविद्यालय तथा छात्रावासों के नाम पढ़ने पर उनको ज्ञानोपासक कहना सार्थक लगता है । अपनी प्राण प्रिय संस्थाओं को 'ज्ञानोपासक' यह नाम देना; यह सोद्देश की हुई कृति है ।
- कांग्रेस पार्टी में नवचैतन्य निर्माण किया: बापुसाहेब के वसमत विधान-सभा सदस्य के रूप में चुनकर आने से पूर्व वसमत तहसील में कांग्रेस पार्टी दुर्बल थी। कुछेक कार्यकर्ता पार्टी में थे। इन कार्यकर्ताओं में चेतना का अभाव था। बापुसाहेब के संगठन चातुर्य के कारण इन कार्यकर्ताओं में नवचैतन्य निर्माण हुआ।
- 1985 में परभणी जिले के सभी विधानसभा चुनावक्षेत्रों की उम्मीदवारी दुधगांवकर जी के कहने पर दी गई थीं। इस चुनाव में दुधगांवकर जी ने





तकरीबन सभी उम्मीदवारों को चुनकर लाया था अतः काँग्रेस पक्ष में उनका वजन और भी बढ़ गया था।

- समूचे महाराष्ट्र में भ्रष्टाचार निर्मूलन आंदोलन चलाया। किसान कांग्रेस, महाराष्ट्र कृषक समाज राज्यस्तरीय पत्रकारिता अधिवेशन, जलसिंचन परिषद ऐसे अनगिनत आंदोलनों का नेतृत्व बापुसाहेब ने किया।
- कृषि, सहकार, शिक्षा, आरोग्य, रेल, हाईवे आदि विषयों पर उनका अभ्यास है।
- राज्य में बाबासाहेब भोसले मुख्यमंत्री बने, तब उन्हें पद से हटाने का दृढसंकल्प बापुसाहेब ने किया था। अंततः एक वर्ष के भीतर ही बाबासाहेब भोसले को पद छोड़ना पड़ा। वसंत दादा पाटील मुख्यमंत्री बने और आदिक उपमुख्यमंत्री बनाए गए। उस समय मंत्रीमंडल में बापुसाहेब को शामिल किया गया। इस प्रकार राजनीति में बापुसाहेब का प्रभाव था।
- अजिम इन्हें मंत्री पद दिया गया तो वे मराठवाडा प्रांत की समस्याओं को हल करेंगे। यह बात बापुसाहेब ने मुख्यमंत्री वसंत दादा पाटील को समझायी। बापुसाहेब ने वचन भी दिया था और उसे पूरा भी किया। अब्दुल अजिम बापुसाहेब के साथ मंत्री बनें।
- महाराष्ट्र की राजनीति में मराठवाडा प्रांत से मुख्यमंत्री पद के सच्चे दावेदार बापुसाहेब ही थे। सच देखा जाए तो बीस वर्ष पहले ही बापुसाहेब महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री बनना अपेक्षित था।
- राज्य की राजनीति में काँग्रेस पक्षश्रेष्ठिने बापुसाहेब की बातें नहीं मानी। उस समय कांग्रेस पार्टी के पदाधिकारी होते हुए भी बापुसाहेब ने सुरेश वरपुडकर को जब काँग्रेस का टिकट नहीं दिया गया, तो शिंगणापुर विधानसभा मतदारसंघ से घोड़ा' इस चिन्ह पर अपक्ष के रूप में खड़ा किया और चुनकर भी लाया और परभणी जिले में नए नेतृत्व का निर्माण किया।
- 'ज्ञानोपासक' इस शब्द में ही सब कुछ समाया हुआ है। यह शब्द ही अर्थपूर्ण है। 'ज्ञानोपासक' इस शब्द के सहारे गणेशरावजी दूधगांवकर जैसे लगता है - छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा ज्योतिबा फुले, राजश्री शाहू महाराज, सयाजीराव गायकवाड तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की शैक्षणिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। यह काम स्वागतार्ह ही है। इसके साथ ही यह काम अभिनंदनीय तथा अभिमानास्पद भी है। मुझे तो गणेशरावजी की महानता इसी कार्य में अनुभव होती है। इसी ज्ञानोपासक गणेशराव उर्फ बापुसाहेब का सही उपयोग समाज को होगा। उनके हाथों एक नहीं अनगिनत पीढ़ियों का निर्माण होगा। उनका यह कार्य बेजोड़ है। इसीलिए परभणी, जितूर, सेलू, मानवत, पाथरी आदि तहसीलों का इलाका ही नहीं बल्कि समूचा मराठवाडा गणेशराव दूधगांवकरजी के कर्तृत्व के गीत गाएगा।
- बापुसाहेब ने जितूर तालुका युवा कांग्रेस अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी श्री. रामप्रसादजी बोर्डीकर पर सौंप दी। उसी के फल- स्वरूप बापुसाहेब ने श्री. रामप्रसाद जी बोर्डीकर को जितूर कृषि उत्पन्न बाजार समिति के सभापति पद पर विराजमान किया।
- पालम तहसील के भाऊसाहेब भोसले जी को परभणी जिला परिषद के उपाध्यक्ष के रूप में पदासीन किया।
- लोग तथा मित्र जोडना, यह बापुसाहेब के स्वभाव की प्रमुख विशेषता। बापुसाहेब का संगठन कौशल अनोखा है,



अद्भुत है। यह कौशल अन्य राजनेताओं में दुर्लभ है।

- बापुसाहेब एक प्रेरणादायी, स्फूर्तिदायी तथा दिशादर्शक नेतृत्व के धनी हैं। यह ऋषितुल्य एक उत्साही व्यक्तित्व, अजातशत्रु, विनयशील, बुजुर्गों का आदर सम्मान करने वाला, निर्व्यसनी, सात्विक वृत्ति, चरित्रसंपन्नता, लोकसंग्रही स्वभाव के समाज के सभी वर्ग के लोगों को अपने साथ लेकर चला है।
- मराठवाडा प्रांत की मिट्टी के संबंध में अभ्यासपूर्ण वक्तव्य देने वाला बापुसाहेब के अलावा अन्य कोई नेता नहीं है। अपने प्रांत के कृषि, सिंचन, लघु उद्योग, शैक्षिक क्षेत्र, संस्कृति, कला, क्रीड़ा आदि विभिन्न क्षेत्रों पर विद्वत्तापूर्ण तथा अभ्यासपूर्ण वक्तव्य देने की क्षमता केवल बापुसाहेब में है।
- मराठी भाषा के संत कवि जगतगुरु तुकाराम की काव्य पंक्ति- “जे जे आपणाशी ठावे ते ते इतरांशी सांगावे, शहाणे करुनी सोडावे सकल जन”, को सार्थक करने वाला जीवन बापुसाहेब का रहा है।
- स्व. शंकररावजी चव्हाण ने कहा था कि, यदि आपने अॅड. गणेशराव दुधगांवकर इन्हें चुनाव में विजयी कर दिया, तो मैं तुम्हें मंत्री पद दिलाता हूँ। पंडितराव देशमुख को बापुसाहेब ने चुनाव में पराजित किया। तब स्वर्गीय शंकरराव जी चव्हाण ने दिया हुआ अपना वचन पूरा किया और बापुसाहेब को राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार) रोजगार हमी योजना, तंत्रशिक्षण तथा सेवायोजन इस विभाग का मंत्री पद दिया गया।
- परभणी जिले में उच्च शिक्षा की गंगा लाने वाला पहला आदमी, बापुसाहेब हैं। अपनी प्रतिष्ठित शिक्षा संस्था में केवल गुणवत्ता को देखकर ही प्रोफेसरों की नियुक्तियाँ की हैं। दूर-दराज के जिलों के निवासियों को भी मात्र गुणवत्ता के कारण अपनी शिक्षा संस्था में अध्यापक के रूप में नियुक्तियाँ प्रदान की। जाति, धर्म, संप्रदाय आदि बातों का उन्होंने कभी भी विचार नहीं किया। उन्होंने महत्त्व दिया केवल व्यक्ति की गुणवत्ता को। बापुसाहेब ऐसे गुणग्राहक व्यक्ति हैं।
- सावजी बैंक के संदर्भ में आर्थिक आयामों के संबंध में बापुसाहेब ने समय-समय पर मार्गदर्शन किया है। बैंक के आदरणीय संचालक को प्रेम से मुकुंद इस इकहरे नाम से ही उन्होंने संबोधित किया।



- बापुसाहेब ने 70% समाजकारण तथा 30% राजनीति इस सूत्र को अपनाया है। राजनीति में उनका शिष्य वर्ग बहुत बड़ा है। एक चरित्रसंपन्न नेता, ऐसी बापुसाहेब के व्यक्तित्व की पहचान है।
- विधान परिषद सदस्य का चुनाव बापुसाहेब मात्र छः मतों से हार गए वास्तव में यह पराभव ही नहीं है। बापुसाहेब के कार्यकाल में अनेक कार्यकर्ता निर्माण हुए। परभणी के मा. रामप्रसाद बोर्डीकर, आ. सुरेश वरपुडकर, वामन मोरे, गंगाखेड-पालम के भाऊसाहेब भोसले, रतनलाल तापडिया, वसमत के देवराव जाधव, खलील

भाई, जावेद भाई, पूर्णा के उत्तमराव कदम, बालाजी पालीमकर, मंगलचंद्र गोरे आदि उनमें उल्लेखनीय नाम हैं।

- परभणी की राजनीति में सफल रहे तथा जिले का राज्यस्तरीय नेतृत्व करने वाले आ. सुरेश वरपुडकर हो अथवा मा. रामप्रसाद बोर्डीकर हो; ये एक समय बापुसाहेब के नेतृत्व में तैयार हुए व्यक्तित्व हैं।

- बाबुराव भालेराव की नियुक्ति उन्हें बताए बिना ही वसमत तालुका सहकारी जिनिंग प्रेसिंग लि. वसमत, इस संस्था के अध्यक्ष पद पर की। पूर्ण सहकारी साखर कारखाना, संजय निराधार समिती, नियोजन समिती आदि समितियों पर असंख्य कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की।
- परभणी जिले में कांग्रेस को प्रबल पार्टी बनाने का काम जिन परिवारों ने किया है, उनमें दुधगांवकर परिवार शीर्षस्थ है।
- बापुसाहेब सत्यशोधक, समाजवादी विचारों के राजनेता हैं। उन्होंने सामाजिक तथा शैक्षिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु राजनीति को साधन के रूप में अपनाया। सत्य के पक्ष में खड़ा रहने वाला राजनेता, स्वभाव की उदारता तथा मानवता आदि गुणों से वे जनमानस में 'लोकनेता' के रूप में ख्यातिप्राप्त हुए।
- सामाजिक-सांस्कृतिक समारोह में राज्यमंत्री पद पर होने के बावजूद भी गणेशराव जी एक रसिक श्रोता के रूप में आद्यंत उपस्थित रहते थे। उनके साथ काम करने वाले कार्यकर्ता सुरेश वरपुडकर तथा बोर्डीकर सहकार क्षेत्र में पदाधिकारी थे।
- परभणी, हिंगोली तथा जालना इन तीन जिलों का प्रतिनिधित्व करने वाले बापुसाहेब एकमेवाद्वितीय नेता हैं।
- मराठवाड़ा के अल्पसंख्यांक समुदाय के हितों के प्रति बापुसाहेब हमेशा सजग रहे। सभी जाति, धर्म तथा संप्रदायों के लोगों को साथ लेकर चलने वाला नेता के रूप में गणेशराव जी दुधगांवकर ख्यातिप्राप्त नेता हैं।
- समाज के दुर्बल, असहाय, शोषित लोगों को बापुसाहेब ने हमेशा सहारा दिया है। समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व का एहसास उन्हें हमेशा रहा है।
- सामाजिक कार्य हो या राजनीति हो, दोनों सैद्धांतिक स्तर पर होने चाहिए; ऐसा उनका मत था। यह उनका बहुत बड़ा सद्गुण है। महाराष्ट्र की राजनीति में अॅड. गणेशराव दुधगांवकर का उल्लेख एक अद्वितीय राजनेता के रूप में होता है। महाराष्ट्र का नेतृत्व निश्चित करने वाले गिने-चुने लोगों में से एक थे बापुसाहेब !! दृढ़संकल्प के साथ में राजनीति करते हैं। इस कारण समाज उनके समर्थन में खड़ा हो जाता है।
- बापुसाहेब एक कर्मयोगी हैं, दिलदार मित्र हैं, उनके पास भेदभाव नहीं है, वे स्पष्ट वक्ता हैं। कार्यकर्ताओं के हित लिए हमेशा वे सक्रिय रहते हैं।



सन 1988 से लोगों की बहस सुनने में आती है कि यदि श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या नहीं हुई होती, तो आज बापुसाहेब महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री रहे होते।

## रचनात्मक कार्य

- बापुसाहेब तथा भ्रष्टाचार इनका 36 का आँकड़ा है। उनके अनेक मित्रों तथा हितैषियों ने पैसा कमाने के कई रास्ते बताए, लेकिन बापुसाहेब कहते थे कि राजनीति कोई व्यवसाय नहीं है। भ्रष्टाचारमुक्त राजनेता बहुत कम हैं। बापुसाहेब उनमें से एक हैं। इसलिए युवा राजनीतिज्ञों के लिए उनका चरित्र अनुकरणीय है। 'राजनेता कैसा हो?' इसका नीतिपाठ उनका जीवन देता है।
- भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकीर हुसेन ने खूब कहा है कि, "कोई भी काम करो, लेकिन समर्पण भाव से करो।" गणेशराव जी का जीवन इसका श्रेष्ठ उदाहरण है।
- अपने उत्तरदायित्व के एहसास के कारण बापुसाहेब को 'मराठवाडा केसरी' यह उपाधि सार्थक प्रतीत होती है। चुनावों की राजनीति में पक्षश्रेष्ठी के सामने झुकने की आज कोई सीमा नहीं रही है। लेकिन सत्ता हेतु किसी के भी सामने न झुकने का आदर्श बापुसाहेब ने युवा राजनेताओं के सामने रखा है। सम्मान अलग बात है और लाचारी अलग बात है। राजनीति में स्वाभिमान के साथ भी रहा जा सकता है, इसका आदर्श बापुसाहेब ने राजनेताओं के सामने रखा।
- परभणी में कृषि विश्वविद्यालय की माँग हेतु अँड. गणेशराव जी दुधगांवकर ने आंदोलन किया। शासन को कृषि विश्वविद्यालय देना पड़ा। समूचे महाराष्ट्र में कृषि विश्वविद्यालय की माँग करने वाले अँड. गणेशराव जी दुधगांवकर पहले युवा नेता थे।
- मराठवाडा विकास आंदोलन के द्वारा मराठवाडा प्रांत के लिए विशेष पैकेज मिले तथा इस प्रांत के सर्वांगीण विकास हेतु उन्होंने निरंतर संघर्ष किया।
- मराठवाडा प्रांत को मुख्यमंत्री पद मिलना, परभणी में कृषि विश्वविद्यालय स्थापित होना, शक्कर कारखानों तथा सूत गिरणी का निर्माण होना, आदि बातें मराठवाडा विकास आंदोलन के सुपरिणाम हैं।
- मराठवाडा विकास आंदोलन, रेल आंदोलन आदि आंदोलनों में साथ लेकर कार्य किया। इस प्रकार युवावस्था में ही उन्होंने अपने नेतृत्व गुणों की झलक दिखाई।
- जून, 1975 को अँड. गणेशराव जी दुधगांवकर के प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप ही अंबाजोगाई में मराठवाडा प्रांत का दूसरा तथा एशिया का पहला ग्रामीण शासकीय वैद्यकीय महाविद्यालय कार्यान्वित हुआ।
- महाराष्ट्र के सभी विश्वविद्यालयों के लिए कानून ही बनवाया। लोकनेता ना. शंकरराव जी चव्हाण ने बापुसाहेब की क्षमताओं को पहचानकर मंत्री पद दे दिया। पुलोद कार्यकाल में प्रशासकीय मंडल ने कारखाना निर्माण कार्य पूर्ण किया। अँड. गणेशराव जी ने उनके संबंधी उद्धवराव गरुड को चेअरमन बनाकर सहकार क्षेत्र पर काबू पाया। उन्होंने प्रशासकीय मंडल का विस्तार किया, लेकिन पुराने संचालकों को कायम रखा। पूर्णा शक्कर कारखाना से शक्कर उत्पादन करने का सम्मान अँड. गणेशरावजी दुधगांवकर को मिला।



## राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार) के तौर पर रचनात्मक कार्य :-



1. बापुसाहेब के मंत्री पद के कार्यकाल में रिधोरा गाँव में प्राथमिक आरोग्य केंद्र तथा पूर्णा नहर पर जोड़ पूल बनाने की अनुमति मिल गई थी।
2. बजाज कारखाना, वाळूज - 2 फरवरी 1983 के शपथविधी के उपरांत उपमुख्यमंत्री रामराव जी आदिक साहेब, राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार) अॅड. गणेशराव दुधगावकर (बापुसाहेब) तथा MDC Chairman श्री. रायभान जाधव इन तीनों ने मिलकर मराठवाडा प्रांत का विकास हो, इस हेतु

बजाज आँटो, पुणे इन्हें औरंगाबाद शहर में आमंत्रित किया। परिणामस्वरूप 19 जनवरी 1984 को वाळूज में इस कारखाने का भूमि पूजन हुआ। भविष्य में एशिया का सर्वाधिक तीव्र गति से विकसित होने वाले शहर के रूप में औरंगाबाद शहर प्रसिद्ध हुआ। बजाज कारखाने के कारण कई लोगों को रोजगार मिला। मधुर बजाज जी ने 2023 में दिए हुए अपने साक्षात्कार में कहा कि, हम जब 1983 में औरंगाबाद आए थे तब यह एक निद्रिस्त शहर था।



3. अॅड. गणेशराव जी दुधगांवकर के उल्लेखनीय सहयोग के कारण ही परभणी जिले के शक्कर कारखाने, जिला बैंक, बाजार समितियाँ, पणन संस्थाएँ आदि वर्तमान प्रगत अवस्था को प्राप्त हो सके।
4. अपने छात्रकाल से ही बापुसाहेब ने विकास आंदोलनों में योगदान देना आरंभ किया था। लोअर दुधना, जायकवाडी प्रकल्प, विष्णुपुरी प्रकल्प आदि से संबंधित आंदोलनों में उन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।
5. औरंगाबाद का भगीरथ सहकारी शक्कर कारखाना, वेंगुर्ला का काजू प्रक्रिया उद्योग, चंद्रपुर का सुगंधा प्रक्रिया उद्योग आदि का विकास तथा पुनरुज्जीवन करने हेतु बापुसाहेब ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया।
6. पेय जल योजना, विद्युतीकरण, सड़कों का निर्माण, वसमत का बस स्टैंड निर्माण, पूर्णा सहकारी शक्कर कारखाना आदि रचनात्मक कार्यों के माध्यम से जनसाधारण के कल्याण हेतु भरसक कार्य किया।
7. वसमत तहसील में आने वाले शिरड, जवळा आदि सर्कल में स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं का अभाव था। जब बापुसाहेब का नेतृत्व वसमत को मिला तो उन्होंने लोहारा को प्राथमिक उप आरोग्य केंद्र निर्माण किया।
8. मा.श्री. शंकररावजी चव्हाण केंद्रीय अर्थमंत्री, नियोजन मंत्री होने के कारण दिल्ली में उनका सहयोग प्रत्येक स्तर पर मिलता रहा। बापुसाहेब के संबंध सभी राज्यों के युवा नेताओं के साथ थे। दिल्ली में बहुत-से मंत्रालयों में उनके संबंध स्नेहपूर्ण थे। सेक्रेटरी, जॉईंट सेक्रेटरी आदि उनका सम्मान करते थे।
9. 'किसानों के संदर्भ में आस्था रखने वाला नेता' बापुसाहेब के संबंध में गौरवोद्धार सुभाष सूर्यवंशी जी ने कहे थे। (सुभाष सूर्यवंशी-प्रकल्प कक्ष, मराठवाडा विकास महामंडल (एम.डी.सी.) सुभाष जी सूर्यवंशी के ये वचन अक्षरशः सत्य हैं। उनका एक 'शास्ता' के रूप में कै. वसंतदादा जी के मंत्रीमंडल में किए कार्य तंत्रशिक्षा क्षेत्र बहुमूल्य साबित हुए हैं।

## 10. अमरावती जिले के पालकमंत्री के कार्यकाल में किए हुए रचनात्मक कार्य

- 1 मई 1983 को स्थापित अमरावती विश्वविद्यालय (आज का संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय)
- अमरावती महानगर निगम (15 अगस्त 1983 को स्थापना)
- ऑफिस ऑफ इंस्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस
- महसूल विभाग कार्यालय



इन मूलभूत कार्यों को पूर्ण किया।

11. बापूसाहेब को मिले मंत्रीपद का लाभ अनगिनत गावों को मिला है। पक्की सड़कें, बिजली, स्वास्थ्य केंद्र, पूलों का निर्माण, संजय गांधी निराधार योजना के अनगिनत गरीबों को मिले लाभ, आदि बातों का उल्लेख किया जा सकता है। परिणामतः विकास की प्रक्रिया से ये सारे गाँव जुड़ गए।
12. गणेशराव जी दुधगावकर जब मंत्री बनें तब पाथरी के इंदिरा गांधी नगर स्थित मस्जिद के विकास हेतु उन्होंने बहुत बड़ी मदद की। अपने मंत्री पद के कार्यकाल में बापूसाहेब ने येलदरी स्थित पाठशाला की जमीन की समस्या का हल करने के लिए भरसक प्रयास किए।
13. महाराष्ट्र की राजनीति में मंत्री पद की शपथ लेने के बाद हाजिरा गैस पाईप लाईन गुजरात से मराठवाड़ा प्रांत में किस तरह लानी है, इसकी ब्ल्यू प्रिंट अपनी जेब में रखने वाले पहले नेता अँड. गणेशराव जी दुधगावकर हैं। अपने मतदारसंघ में अनगिनत रचनात्मक कार्य उन्होंने किए।

हजिरा गैस पाईप लाईन (मार्ग: हजिरा-बुलढाणा-परभणी-नांदेड-नागपुर-पॅराद्वीप)



14. मराठवाडा डेव्हलपमेंट कॉर्पोरेशन (एम.डी.सी.) की महत्वपूर्ण परियोजनाएँ (जो मराठवाडा प्रांत के विकास संबंध महत्वपूर्ण रही हैं।)

नई प्रायोगिकी मराठवाडा प्रांत में आती रहे, इसलिए महत्वपूर्ण

इंडो जर्मन टोल रुम (IGTR) तथा केंद्रीय परियोजना

Central Institute of Plastic Engineering Technology. (CIPET)

सेंटर फॉर इलेक्ट्रॉनिक्स डिजाइन अँड टेक्नॉलॉजी (CEDT) स्थापना 1974, सन2011 से DESE नामकरण।

महाराष्ट्र सेंटर फॉर इंटरप्रूनरशिप डेवलपमेंट (MCED)

15. अँड. गणेशराव जी दुधगावकरने परभणी के गोरक्षण की जमीन बचाने के लिए सातत्यपूर्ण प्रयास किए। परिणामतः गोसंवर्धन परियोजना संस्था की मालमत्ता का संरक्षण हुआ।
16. संत रामदास स्वामी जी ने छत्रपति शिवाजी महाराज के के संबंध में कहे हुए वचन याद आते हैं- “निश्चयाचा महामेरु। बहुजनांशी आधारु। अखंड स्थितीचा निर्धारु। शिव कल्याण राजा।” ये सारे वचन अँड. गणेशरावजी

दुधगांवकर के संदर्भ में भी सार्थक साबित होते हैं।

17. रेशन दुकान में दो रुपये प्रति किलो गेहूँ, चावल दिए जाते हैं। जब बापुसाहेब सांसद थे उस समय यह बिल पास हुआ था। इस बिल पर संसद में कई बार विचार-विमर्श हुआ था। इस बिल के लिए AIIMS में भरती बापुसाहेब हॉस्पिटल से उठकर संसद भवन मतदान हेतु आये।
18. आसेगाव, ता.वसमत इस गाँव में तत्कालिन जिलाधिकारी श्रीमती सुधा भावे को भेजकर आर्थिक मदद प्रदान की।



- डिकसल-हासेगांव रोड का भूमिपूजन बापुसाहेब ने किया।
- राष्ट्रीय स्तर पर नाफेड सहकारी संस्था के संचालक के रूप में काम करते समय, गणेशराव जी ने कृषि उत्पादित माल पर प्रक्रिया उद्योग, प्याज की निर्यात, ऑईल मिल्स आदि से संबंधित राष्ट्रीय नीति निर्धारित करते समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- जिंतूर स्थित Govt. Polytechnic College बापुसाहेब ने ही लाया। संगणक शिक्षा का महत्व एवं वर्तमान जीवन में बढ़ती आवश्यकता को पहचानकर

मराठवाड़ा प्रांत में सर्वप्रथम ज्ञानोपासक शिक्षा संस्था में पदव्यूत्तर संगणक कोर्स (M.Sc. Computer) आरंभ किया। परभणी नगर निगम को महानगर निगम का स्तर प्राप्त हो, इस हेतु किए गए आंदोलन का नेतृत्व, अॅड.गणेशराव जी दुधगावकर ने किया। सन 2010 में शासकीय रुग्णालय के साथ शासकीय वैद्यकीय महाविद्यालय हो, यह मांग बापुसाहेब ने की थी।

- राष्ट्रीय स्तर पर 'ज्ञानोपासक' बीस वें स्थान पर है। अल्पावधि में ही 'ज्ञानोपासक' यह नाम शिक्षा क्षेत्र में विख्यात हुआ। ज्ञानोपासक में छात्र संसद का निर्माण गुणवत्ता के आधार पर किया जाता है। कक्षा में जिस छात्र को सर्वाधिक अंक मिलते हैं, उसे कक्षा का प्रतिनिधि बनाया जाता है। बापुसाहेब अनुशासनप्रिय व्यक्ति हैं। स्वयं भी वे अनुशासित जीवन जीते हैं। ज्ञानोपासक कॉपीमुक्त परीक्षा केंद्र है। प्रतिकूल परिस्थितियों में गुणवत्ता की खोज का यह सुपरिणाम है।
- 'कॉपीमुक्त परीक्षा केंद्र तथा गुणवत्ता के आधार पर छात्र संसद का निर्माण' इसी 'ज्ञानोपासक पैटर्न' को महाराष्ट्र शासन ने महाराष्ट्र के सभी विश्वविद्यालयों के लिए अपनाया है। इसका श्रेय केवल बापुसाहेब के रचनात्मक दृष्टिकोण को जाता है।

### सांसद के तौर पर रचनात्मक कार्य :-

- जब सांसद थे, तब बापुसाहेब ने अनेक सिंचन परियोजनाओं के लिए निधि की माँग संसद में की। लोअर दुधना, जायकवाडी परियोजना नहर, जिसमें पूर्णा तथा गंगाखेड का समावेश है। ये सभी परियोजनाएँ प्रस्तावित हैं।
- परभणी में एफ.एम. रेडियो आरंभ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

- परभणी में केंद्रीय विद्यालय स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसी प्रकार वसंतराव नाईक मराठवाडा कृषि विश्वविद्यालय में कपास, रेशम आदि से संबंधित अनुसंधान हेतु संसाधनों की उपलब्धि हेतु निधि उपलब्ध करके दिया।
- परभणी-मुदखेड रेल मार्ग दोतर्फा बनाना, पैठण-नांदेड (व्हाया-पोखर्णी) इस मार्ग के लिए प्रयत्नशील रहें।
- जब सांसद थे तब विकास प्रक्रिया गतिमान करने हेतु यातायात पर सहेतुक जोर दिया। पैठण, अंबड, घनसावंगी, पोखर्णी, नांदेड यह महामार्ग हो इस हेतु सतत प्रयत्नशील रहें। बापुसाहेब के प्रयासों कारण ही यह महामार्ग पूर्ण हो सका।
- वाटूर फाटा-परभणी रास्ते का काम पूर्ण करने हेतु शासन स्तर पर प्रयास किए।
- जायकवाडी दाई तथा बाई नहर पुनर्निर्मिती हेतु नया प्रस्ताव तैयार करने की मांग की।
- लोअर दुधना परियोजना ए.आई. बी.पी. में समाविष्ट करने हेतु प्रयास किए। परिणामतः मंठा और परतूर की पानी पुरवठा योजना पूर्ण होने के लिए मदत मिली।
- बेलगाँव, निपाणी, कारवार यहाँ के मराठी लोगों के अधिकारों के लिए हुए धरना आंदोलन में उनका योगदान रहा। अल्पसंख्याक बंधुओं के लिए शादीखाना बनवाने हेतु निधि मंजूर कर लेना, सिद्धेश्वर प्रकल्प वृद्धि हेतु राज्य तथा केंद्र शासन की ओर समर्थन करना, मराठवाडा प्रांत के विकास हेतु शासन नियुक्त 'केलकर समिती' को महत्वपूर्ण सूचनाएँ देना, मराठवाडा में हाजिरा से नांदेड गैस पाइप लाईन मंजूर हो, इस हेतु यथाशक्ति प्रयत्न तथा समर्थन किया।
- परभणी-मनमाड तथा मुदखेड-परभणी इन रेल मार्गों को दोतर्फा बनाने के लिए बापुसाहेब ने भरसक प्रयास किए।
- जालना-खामगाव रेल मार्ग का सर्वेक्षण फिर से किया जाए, यह माँग बापुसाहेब ने संसद में सातत्यपूर्ण ढंग से की है।
- मॉडेल कॉलेज तथा केंद्रीय विद्यालय जिले में शुरु हो, इस हेतु प्रयास किए। इसीलिए जालना जिले के घनसावंगी में मॉडेल कॉलेज की स्थापना हुई।
- श्री.गणेशराव जी दुधगांवकर जब सांसद थे तब परभणी तथा पूर्णा में केंद्रीय विद्यालय की स्थापना हो, महाराष्ट्र के 28 जिलों में CBSE पैटर्न क्रियान्वित करना चाहिए, यही उनकी इच्छा थी।
- अपने राजनीतिक जीवन में बापुसाहेब ने विधायक, मंत्री, सांसद, आदि के साथ-साथ अनेक पदों पर काम करते हुए जिम्मेदारी संभाली है। जब सांसद थे तब अन्न सुरक्षा विधेयक, भूसंपादन पुनर्वसन, महाराष्ट्र में पड़ा अकाल, धनगर समाज को अनुसूचित जाति में समाविष्ट करने हेतु प्रयास आदि विभिन्न समस्याओं की ओर शासन का ध्यान आकर्षित किया।
- एन.एच.222 को चौड़ा करना, केंद्रीय शिक्षण संस्था में आरक्षण दुरुस्ती विधेयक, रेल अर्थसंकल्प, किसान, मजदूर, दलित, वंचित लोगों के प्रश्न संसद में उन्होंने उपस्थित किए। सांसदिय आयुधों का उपयोग करके उन्होंने जनतांत्रिक मूल्यों का संवर्धन तथा उपयोजन किया।





- महाराष्ट्र विधानसभा में किसानों का कर्ज, बीज, खाद, कृषि औजार आदि प्रश्न उठाकर किसानों तथा कृषि मजदूरों का विश्वास संपादन किया।
- परभणी के अल्पसंख्यांक बांधवों के लिए शादीखाना निर्माण के लिए निधि मंजूर किया।
- बापुसाहेब पाँच वर्ष सर्वाधिक सक्रिय सांसद के रूप में सांसद कार्यरत रहें। संसदीय कामकाज में सर्वाधिक उपस्थिति का विक्रम उन्होंने अपने नाम पर किया। 'संसदपटू' के रूप में उन्हें गौरवान्वित किया गया। उन पाँच वर्षों में उन्होंने संसद में कुल 418 प्रश्न पूछे। उस समय सांसदों ने संसद में प्रश्न पूछने का औसत प्रमाण 300 था। अर्थात् इसके डेढ़ गुना प्रश्न उन्होंने संसद में पूछे। इस प्रकार परभणी की जनता की आवाज को उन्होंने संसद में प्रतिध्वनित किया।
- परभणी के विकास कार्यों में बापुसाहेब का योगदान असाधारण रहा है। उन्होंने वसमत रोड राष्ट्रीय महामार्ग के चौड़ीकरण हेतु सफल समर्थन किया।
- मराठवाडा विश्वविद्यालय को डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का नाम देना चाहिए, इस प्रकार का विचार-विमर्श चल रहा था। उस समय विश्वविद्यालय कार्यकारिणी की बैठक में सर्वप्रथम यह विषय बापुसाहेब ने रखा।
- मराठवाडा प्रांत के 45 आई. टी. आई., 45 तकनीकी हाईस्कूल्स- उदगीर तथा निलंगा के इंजीनियरिंग कॉलेजेस को आदरणीय बापुसाहेब ने प्रशासकीय अनुमति दे दी। उस समय के इस कार्य के द्वारा उन्होंने मराठवाडा प्रांत में तकनीकी शिक्षा की गंगा ही प्रवाहित कर दी।
- बापुसाहेब के शिक्षा क्षेत्र के इस योगदान के कारण ही मराठवाडा प्रांत के अनगिनत छात्र आज नोकरी करके आत्मनिर्भर हो गए हैं। आज ये युवा अनेक महत्वपूर्ण पदों पर विराजमान हैं।
- सन 1983 में ज्ञानोपासक शिक्षण मंडल की स्थापना की। जितूर तथा परभणी में ज्ञानोपासक महाविद्यालय स्थापित किए। साथही ग्रामीण इलाकों में पाठशालाएँ प्रारंभ की। इस प्रकार शहरी तथा देहाती छात्रों के लिए गुणात्मक शिक्षा की व्यवस्था की। महाविद्यालय को आई. एस.ओ. नामांकन 2000 स्तर तथा स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय की ओर से दिया जाने वाला 2011-12 का शहरी विभाग का 'उत्तम महाविद्यालय पुरस्कार' प्राप्त होकर महाविद्यालय गौरवान्वित हुआ।
- परभणी शहर में लुप्त हो रही शैक्षिक संस्कृति को ज्ञानोपासक महाविद्यालय ने पुनरुज्जीवित किया है। इसीलिए समूचे मराठवाडा प्रांत में 'ज्ञानोपासक' ख्यातिप्राप्त हुआ।

जनसेवक दुधगांवकर जी का सपना पुरा हुआ...



सन 1984 का ज्ञानोपासक महाविद्यालय परभणी



सन 2022 का ज्ञानोपासक महाविद्यालय, परभणी  
तिसरी बार नॅक 'अ' दर्जा प्राप्त

- बेरोजगार युवाओं की अहम् समस्या उन्होंने हल कर दी: बापुसाहेब तंत्र शिक्षा मंत्री थे, इसलिए उन्होंने वसमत मतदारसंघ में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था की स्थापना की।
- जितूर तथा हिंगोली तहसील में पॉलिटेक्निक की स्थापना की। परिणामतः इन दो संस्थाओं में युवाओं को रोजगार मिला। साथ ही इस विभाग के छात्रों ने इन शिक्षा संस्थाओं में औद्योगिक प्रशिक्षण लिया तथा इन प्रशिक्षित युवाओं को औरंगाबाद तथा पूर्णा सहकारी शक्कर कारखाना में रोजगार मिला। आज यह काम उनकी आजीविका का साधन बन गया। अतः बापुसाहेब का यह कार्य वसमत तथा जितूर तहसील के निवासियों की चिरस्मृति में रहेगा।
- शैक्षिक संस्थाओं को मदद करना, यह उनका स्थायी भाव है। इसी वजह से शहागड स्थित स्वामी रामानंद शिक्षण प्रसारक मंडल संचालित प्रबोधनकार ठाकरे विद्यालय की इमारत का निर्माण सांसद निधि द्वारा करवाया।
- न्यायमूर्ति धर्माधिकारी, जगन्नाथ पुरी के शंकराचार्य जगद्गुरु निश्चलानंद सरस्वती आदि दिग्गज विभूतियों को सुनने का अवसर बापुसाहेब के कारण परभणी के निवासियों को प्राप्त हुआ।
- औरंगाबाद MIDC का Infrastructural Development करने में गणेशराव जी का योगदान उल्लेखनीय रहा है। बापुसाहेब की ज्ञानसाधना की वृत्ति के कारण स्नातक शिक्षा पूर्ण होने के बाद उन्होंने एल.एल.बी. किया। कानून की शिक्षा पूर्ण करने के बाद उन्होंने वकालत करना शुरू किया। इस व्यवसाय में उन्होंने काफी सफलता तथा कीर्ति प्राप्त की।
- अमेरिका से उच्च शिक्षा प्राप्त करके समीर भारत लौट आया है। अपनी बुद्धिमत्ता, ज्ञान तथा कौशल अपने देशवासियों के काम जाए, ऐसी उदात्त सोच समीर दुधगावकर की है। आदरणीय बापुसाहेब के मार्गदर्शन में समीर अपना मार्गक्रमण कर रहा है तथा संत तुकाराम के वचन- 'शुद्ध बीजापोटी फळे रसाळ गोमटी' को सार्थक कर रहा है।
- सन 2001 से गुणवंत छात्रों के लिए 'रूपाली दुधगांवकर राष्ट्रीय पुरस्कार' आज तक सुचारु ढंग से वितरित किया जा रहा है।
- समीर भाऊ के शब्दों में - बापुसाहेब अपने प्रामाणिक प्रयत्नों के कारण मेरे सामने रोल मॉडल हैं। उनसे बहुत कुछ सीखकर ही मैं अपने जीवन में कुछ अच्छा काम कर सका हूँ। राज्य शिखर संगठन का उपाध्यक्ष बनना अथवा उस पद पर कार्य करते हुए शिक्षा क्षेत्र के साथ जुड़ने का सबसे महत्वपूर्ण कार्य चेंबर ने करना चाहिए, यह धारणा रखकर काम किया।
- अततः सांसद बनने का अवसर श्री. बालासाहेब ठाकरे ने बापुसाहेब को प्रदान किया और उन्होंने राष्ट्रवादी काँग्रेस के भूतपूर्व प्रतिष्ठित मंत्री को पराभूत कर के गौरवशाली इतिहास अपने नाम पर लिख दिया।





## एक समझदार जनसेवक

- मराठवाडा मुक्तिसंग्राम में अपना खून बहा देने वाला दुधगाव का क्षत्रीयकुलवंत शिंदेशाहीराऊत परिवार है। अँड गणेशराव जी दुधगांवकर के माता-पिता तथा परिवार एक प्रकार से ऊँचे दर्जे के स्वतंत्रता सेनानी थे। स्वतंत्रता सेनानियों को आर्थिक सहायता देकर आंदोलन सक्रिय रहने हेतु

इस परिवार ने की हुई मदद के कारण इस परिवार का नामोल्लेख बुजुर्ग लोग बड़े ही सम्मान से करते हैं।

- मराठवाडा मुक्ति संग्राम तथा हैदराबाद मुक्ति संग्राम में जिन महान परिवारों ने त्याग किया उनमें दुधगांव का दुधगांवकर परिवार उल्लेखनीय है। परिवार कितना ही समृद्ध हो, तो भी उसमें अपनी विरासत तथा संस्कृति का संवर्धन करने की क्षमता होगी ही, ऐसा कहा नहीं जा सकता।

- उपेक्षित, वंचित, संसाधनहीन वर्ग के दुख तथा अभावों को समझने वाले, सामने वाले व्यक्ति के दुख तथा आवश्यकता को पहचानने वाले; नाम में ही 'गणेश' होने के कारण बापुसाहेब ने कभी भी किसी की जात-पात का, दूर का नजदीक का, शत्रु-मित्र ऐसा भेदभाव नहीं किया। आज तक के जीवन कार्यों से यह बात स्पष्ट अनुभव होती है।



- खेत में काम करने वाले लोगों को दुधगांवकर जी ने सम्मान के साथ ऊँचे पदों पर विराजमान किया। उन्हें रोजी-रोटी के साधन दिए। उन्हें 'बड़ा' बना दिया। अपने आसपास के इलाके के लोगों को उन्होंने हमेशा ही मदद की है।

- बापुसाहेब के संबंध में एक विरोधी पक्ष नेता की पत्नी ने कहा था कि, गणेशराव जी और हमारे राजनीतिक संबंध भविष्य में ऐसे ही बने रहेंगे या नहीं; कहा नहीं जा सकता लेकिन उनका सदाचरण तथा उन्होंने दिए हुए सहयोग को मैं कभी भी भूल नहीं सकती।



- मा. बापुसाहेब स्वयं एक जमीनदार तथा संपन्न परिवार के होते हुए भी उन्होंने एक सामान्य परिवार की किंतु सुसंस्कारित परिवार की शिक्षित लड़की के साथ विवाह किया। कै. श्रीधरराव रावणराव कदम साहेब उनके ससुर जी। बिना दहेज लिए उन्होंने यह विवाह किया था। उस समय यह आश्चर्य की बात थी।

- बापुसाहेब को किसी की प्रशंसा करनी होती थी, तो अनोखे शब्दों में करते थे। फ.मुं. शिंदे को वे लेखक कहकर संबोधित करते थे।

- फ. मुं. शिंदे तथा गणेशराव जी दुधगांवकर किताबों-कापियों को एक साथ बैठकर रॅपर लगाते थे। वास्तव में गणेशरावजी संपन्न परिवार से आए हुए थे। लेकिन उनके स्वभाव में अपनी अमीरी का कहीं पर भी अहंकार नहीं था। उनकी विनम्रता 'विद्या विनयेन शोभते' इस सुवचन को सार्थक करती है। फ. मुं. तथा गणेशरावजी के किस्से पानतावणे सर ने अपने अनोखे शब्दों में व्यक्त किए हैं। गणेशराव जी तथा पानतावणे सर के आपसी संबंध बड़ी आत्मीयता के थे।



- अपने गाँव का निवासी व्यक्ति जो घाटी अस्पताल में अॅडमिट था; उसे लगातार पंद्रह दिनों तक समर्थ नगर से पैदल घाटी जाकर भोजन पहुँचाया। ऐसी बापुसाहेब की सेवाभावी वृत्ति रही है।
- राष्ट्रीय स्तर पर बापुसाहेब जैसे युवा कार्यकर्ता हर जिले में निर्माण हुए। बापुसाहेब का युवा नेतृत्व उभर रहा था, फिर भी बुजुर्ग राजनेताओं के प्रति उनके मन में आदर भावना थी। छात्र जीवन से ही उन्हें राजनीति के प्रति आकर्षण था। बापुसाहेब की राजनीति विकासाभिमुख थी। उन्होंने स्वयंकेंद्री राजनीति कभी भी नहीं अपनाई।
- जनतांत्रिक मूल्यों पर बापुसाहेब का विश्वास है। इसी के फलस्वरूप उन्होंने पुणे, मुंबई आदि शहरों में मराठवाडा प्रांत के छात्रों के लिए छात्रावास का निर्माण किया। जिला परिषद, पंचायत समिति, मार्केट कमिटी तथा विभिन्न सहकारी परियोजनाओं का निर्माण उन्होंने किया।
- पाथरी तहसील के पाथरगव्हाण नामक गाँव में बापुसाहेब ने प्राथमिक आरोग्य केंद्र का निर्माण करवाया। शे.का.प. की जिला परिषद में सत्ता थी तो भी पाथरगव्हाण इस गाँव में प्राथमिक आरोग्य केंद्र का निर्माण हुआ।
- प्राचार्य रामदास डांगे इनके द्वारा किए गए ज्ञानेश्वरी ग्रंथ से संबंधित कार्य का गौरव करने का निश्चय किया गया। तत्कालिन गौरव समिती के अध्यक्ष शेषराव जी देशमुख थे। इस हेतु बहुत बड़ी रकम की आवश्यकता थी। उस समय बापुसाहेब ने पच्चीस हजार रुपयों की मदद सहजता से की थी।
- मंत्री पद प्राप्त होते ही लाल दीए की गाड़ी में जाते समय उन्हें व्यक्तिगत ठाँठ-बाँट की बजाय देहातों में रहने वाले गरीब लोगों के बच्चों की पढ़ाई हेतु महाविद्यालय की स्थापना करने का विचार आया। इसी का परिणाम उन्होंने परभणी तथा जिंतूर में महाविद्यालय शुरू किए और पाथरी, सेलू आदि तहसीलों में पाठशालाएँ शुरू कीं। आज इन पाठशालाओं तथा महाविद्यालयों का भव्य रूप देखने के बाद बापुसाहेब की दूरदृष्टि का परिचय मिलता है। छत्रपति शाहू महाराज के विचारों का साक्षात् कृतिशील अविष्कार अर्थात् बापुसाहेब हैं।
- कर्मवीर विठ्ठल रामजी शिंदे, कर्मवीर भाऊराव पाटील, कर्मवीर दादासाहेब गायकवाड ऐसे दिग्गज कर्मवीर इस महाराष्ट्र भूमि में उत्पन्न हुए हैं। बापुसाहेब इसी परंपरा की अगली कड़ी हैं।
- 'अमेरिकन कैलिफोर्निया बेव्हेरेज बिअर' अपनी बियर की बोतल पर गणपती का लेबल लगाया था। यह हिंदू धर्म का अपमान है, यह सर्वप्रथम संसद में कहने का साहस बापुसाहेब ने किया था। किसानों को नुकसान भरपाई मिले इस हेतु उन्होंने यह मुद्दा संसद में उठाया था।
- बापुसाहेब धर्मनिरपेक्ष तथा पुरोगामी हैं। फुले-शाहू-आंबेडकर के विचारों का प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर होने के कारण अपने मागासवर्गीय, बौद्ध सहकारियों पर उनका प्रेम है, लेकिन उन्होंने ब्राह्मणों का कभी द्वेष नहीं किया।
- पुरोगामी वैचारिक भूमिका और वैचारिक अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य, इनके बापुसाहेब समर्थक हैं। कांग्रेस, राष्ट्रवादी तथा शिवसेना इस प्रकार पक्षीय सफर में उन्होंने पक्षीय वैचारिक प्रारूप सुरक्षित रखते हुए व्यक्ति स्वातंत्र्य का समर्थन किया।
- बापुसाहेब का सुसंस्कृत व्यक्तित्व, लोगों की समस्याएँ हल करने की परोपकारी वृत्ति और समृद्ध पारिवारिक विरासत इन कारणों से वे सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन में सफल हुए।



- मंत्रालय स्तर पर काम करने की उनकी शैली अत्यधिक गतिशील थी। विभाग की ओर से आयी हुई फाईल तीसरे दिन कॅबिनेट की ओर भेज दी जाती थी। अपने विरोधियों को यथोचित उत्तर देकर वे उनका समाधान करते थे।



- बापुसाहेब की खास स्वभावगत विशेषता यह थी कि वे सरकारी पैसा अनावश्यक कामों पर कभी भी खर्च नहीं करते थे।
- अनेक अधिकारियों तथा कर्मचारियों के तबादले उनकी सुविधानुसार किए जाते थे। बापुसाहेब के लिए भ्रष्टाचार निषिद्ध था।
- बापुसाहेब ने अपने एक मित्र के संबंध में कहा कि, ये मेरे मित्र हैं और कार्पोरेशन ने उन्हें अभ्यास कार्य हेतु शिकागो भेजना तय किया है। वे शिकागो पहुँचने ही चाहिए। उनके पी.ए. तथा पी.एस. ने दो दिनों में पासपोर्ट, व्हीसा, चलन आदि सबका प्रबंध किया। विदेश जाने के लिए मंत्रीमंडल की अनुमति लेनी पड़ती है। बापुसाहेब ने यह कार्योंत्तर मान्यता सुधाकरराव जी नाईक से से ली। इस प्रकार मित्र को शिकागो भेज दिया।
- बापुसाहेब गलत काम हेतु किसी के भी सामने झुके नहीं। उन्होंने हमेशा सत्य का समर्थन किया। सूर्य को कोई हाथ लगाता नहीं, हिमालय को कोई बचाता नहीं। बापुसाहेब सत्य बोलते हैं। वे किसी के बाप को डरते नहीं। उन्होंने अपने जनसामान्य सहयोगियों को मदद की है, विभिन्न पदों पर नियुक्तियाँ दी हैं।
- समूचे महाराष्ट्र में रोजगार हमी योजना के कामों पर बापुसाहेब स्वयं मुआइना करने के लिए जाते थे। जहाँ पर भी उन्हें काम में अनियमितता दिखी, वहाँ उन्होंने अधिकारियों को दंडित किया। अधिकारियों को निलंबित किया।
- न किए हुए काम का श्रेय भी वर्तमान राजनेता स्वयं की ओर ले लेते हैं। ऐसे वर्तमान युग में बापुसाहेब जैसा चरित्रसंपन्न राजनेता मिलना दुर्लभ है। उनकी इसी चरित्रसंपन्नता के कारण ही आम लोगों ने उन्हें समर्थन दिया और वे विधायक, सांसद, मंत्री आदि सफलता के सोपान चढ़ सके।
- बापुसाहेब ने परभणी जिला परिषद का भ्रष्टाचार जनता के सामने लाया। उन्होंने यह प्रश्न विधिमंडल में उपस्थित किया। परिणामस्वरूप संबंधित व्यक्ति को सजा मिली।
- बापुसाहेब कांग्रेस के राज्य उपाध्यक्ष थे फिर भी उन्होंने आपातकाल का कभी भी समर्थन नहीं किया। वे आपातकाल के विपरित अपने विचार व्यक्त करते थे। जब शिवसेना में थे, तो उन्होंने धार्मिक उत्पाद को कभी भी स्थान नहीं दिया। अपने सामाजिक, राजनीतिक मंतव्य वे निर्भयता से व्यक्त करते थे।
- जब बापुसाहेब वसमत में आए, तो उन्होंने बताया कि, मैं मुख्यमंत्री ए. आर. अंतुले जी से मिला हूँ और उन्हें इस घटना की विस्तार से जानकारी दी है। इस प्रकार घायल तथा मयत लोगों को बापुसाहेब के प्रयासों के कारण आर्थिक मदद मिल गई।
- अति वृष्टि के समय बापुसाहेब तत्कालिन मंत्री यशोदा बजाज उर्फ दीदी तथा तत्कालिन कलक्टर सौ. सुधा भावे को वसमत लेकर आए और अति वृष्टि हुए इलाके का मुआइना किया। वसमत तहसील में अतिवृष्टि के कारण अकाल पड़ा था तब वसमत तहसील के लिए तात्काल शासकीय मदद प्राप्त की थी। इस प्रकार उन्होंने जनसाधारण को अकाल से राहत दिलाई थी।

- ज्ञानोपासक शिक्षण मंडल द्वारा संचालित पाठशालाओं तथा महाविद्यालयों में बहुजन समाज, अल्पसंख्यांक समाज तथा मागास प्रवर्ग के गुणवान युवक-युवतियों को अध्यापक तथा प्राध्यापक बनने का अवसर बापुसाहेब ने ही उपलब्ध करके दिया। किसी भी प्रकार का डोनेशन उन्होंने नहीं लिया। युवाओं को नौकरियाँ देते समय बापुसाहेब ने न जाति देखी, न धर्म देखा, न रिश्तेदारी देखी। गुणवत्ता और अर्हता देखकर ही उन्होंने युवाओं को नोकरी के अवसर प्रदान किए। गरीब, मागासवर्गीय, तथा एस.टी. प्रवर्ग के युवकों में जब उन्हें गुणवत्ता दिखी तो उनकी नियुक्ति खुला प्रवर्ग के भीतर भी कर दी। छत्रपति शाहू महाराज के आरक्षण नीति का प्रत्यक्ष अंमल बापुसाहेब ने किया। इसी तरह छत्रपति शाहू महाराज अपने संस्थान के मागासवर्गीय लोगों का सहारा बनकर रहते थे।
- सादगीपूर्ण जीवन, उच्च विचार, अहंकार का अभाव, शालिनता, विनयशीलता, सरलता, विद्वत्ता, परोपकार, न्यायप्रियता आदि अँड. गणेशराव जी की चारित्रिक विशेषताएँ हैं। सभी जाति-धर्म के लोग उनके मित्र हैं। सामाजिक समता, धर्मनिरपेक्षता तथा जनतंत्र ये मूल्य उन्होंने अपने जीवन में अपनाए और इन्हीं मूल्यों के सहारे उन्होंने जीवनयापन किया।
- बापुसाहेब के मित्रों ने कहा है, “इतने अमीर होने के बावजूद भी उनकी सादगी, विनयशीलता, आडंबरहीनता, नेकी, मानवता आदि सद्गुण जनमानस को प्रभावित करते रहे हैं। उनकी वृत्ति एक खिलाड़ी की है। जीते तो घमंड नहीं, हारे तो हताशा-निराशा नहीं।”

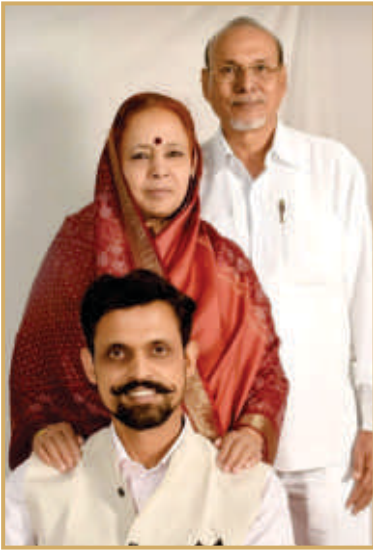


- बापुसाहेब के मित्रों के शब्दों में ही, “अरे देखो भाई शफी सहाब, गणेशराव फरिश्ते जैसे लग रहे हैं, नई, क्या बात है साहब! उनके घुंगराले लंबे-लंबे सर के बाल, मुँह बढी हुई दाढ़ी, सफेद कुर्ता पायजामा, ओ आगे आगे और हम उनके पिछे-पिछे चले जा रहे है! ऐसा लगता है जैसे मसिहा आगे चल रहा है और काफिला पिछे पिछे बढता जा रहा है। वाह ! क्या खुब मंजर है।”
- बापुसाहेब जब सांसद थे, तो संसद में उन्होंने कृषि, शिक्षा, उद्योग आदि विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। अपने मतदार-संघ की समस्याएँ उन्होंने वहाँ उपस्थित की और उनका हल निकालने का प्रयास किया।
- चारधाम यात्रा को गए हुए 40 से 50 लोगों को प्राइवेट ट्रॅवल्लस से दिल्ली के पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया। यह समाचार तुरंत हयातनगर में पहुँचा। लोग रोने लगे, रिश्तेदार-नातेदार विलाप करने लगे। बापुसाहेब मंत्री थे। उन्होंने निर्देश देने पर अस्पताल में इन सभी घायलों का व्यवस्थित इलाज किया गया।
- परभणी-पाथरी रोड पर का एकरुखा गाँव का पोंगल त्योंहार पर हुआ वाद-विवाद बापुसाहेब ने शांततापूर्ण ढंग निपटाया।
- गणेशराव जी का साहस तथा अपनी मिट्टी के साथ उनकी निष्ठा सर्वपरिचित है। उनका लोगों के साथ बर्ताव आत्मीयतापूर्ण रहा है।
- कहते हैं कि मिट्टी में मिलने पर भी इत्र की महक जाती नहीं और तोड़ने पर भी हीरे की चमक कम होती नहीं। ईश्वर ने मित्र नामक अद्भुत रसायन बनाया है। - मन हलका करने के जब कोई नहीं होता तब 'मैं हूँ ना' ऐसा जो कहता है वह सच्चा मित्र होता है। बापुसाहेब ऐसे ही मित्र हैं।

- डॉ. सौ. संध्याताई के व्यक्तित्व को विकसित होने का पूरा अवसर बापुसाहेब ने दिया। यह लक्ष्मीनारायण की ही जोड़ी है। डॉ. संध्याताई ने केवल अपनी घर-गृहस्थी ही नहीं संभाली, बल्कि वे ज्ञानोपासक महाविद्यालय में प्राध्यापिका तथा प्राचार्या के रूप में भी सेवारत रही। इतना ही नहीं पोखर्णी जैसे छोटे-से गाँव में रहकर अपनी खेती का भी कारोबार संभाला। बापुसाहेब ने पाई हुई सफलता में सौ. संध्याताई का योगदान बहुत बड़ा है।



- बापुसाहेब की सहचारिणी सौ. संध्याताई विज्ञान की



पीएच.डी. धारक

हैं। 'विद्या विनयेन शोभते' इस वचन को डॉ. संध्याताई ने अपने आचरण के माध्यम से सार्थक कर दिया है। क्योंकि अपने ज्ञान, पद तथा संपन्नता का उन्हें बिल्कुल अहंकार नहीं है। उनके बच्चों में भी यही सादगी देखने को मिलती है। "हम असामान्य है, विशेष है" ऐसा आचरण उनका कभी भी नहीं रहा।

- साहित्यिक उपक्रमों में उनका योगदान प्रचुर रहा है। महाराष्ट्र राज्य के अनेक मूर्धन्य साहित्यकारों से बापुसाहेब के आत्मीय संबंध रहे हैं।
- गरीब हैं, पर अपने विषय पर जिनका प्रभुत्व है, जो अपने विषय में निष्णात हैं, ऐसे प्रोफेसरों की नियुक्तियाँ गणेशराव जी ने अपने महाविद्यालयों तथा पाठशालाओं में की हैं। बापुसाहेब के लिए गुणवत्ता ही चुनाव की शर्त रही है। बापुसाहेब आर्थिक लोभ से कोसों दूर हैं, इसी बात का यह सबूत है। सामाजिक न्याय, सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का ध्यान उन्हें हमेशा है। यह उनकी दृष्टि प्रशंसनीय है।

- बापुसाहेब के बड़े भाई लिंगराव दुधगांवकर उर्फ दादा जिला परिषद के अध्यक्ष थे। वर्तमान युग में राजनीति अल्पावधि में अमीर बनने का साधन बन गई है। लेकिन बापुसाहेब ने राजनीति के माध्यम से अपनी स्वार्थ सिद्धि कभी भी नहीं की। वे पीढ़िजात संपन्न थे। उनके लिए पैसा मात्र साधन है; उसे उन्होंने साध्य कभी भी नहीं माना।
- ऐसा कहा जाता है कि Power corrupts and absolute power absolutely corrupts, ऐसा आचरण करने वाली कांग्रेस पार्टी का विचार न करते हुए इन दोनों भाइयों ने युवाओं के सम्मुख आदर्श का अनोखा उदाहरण रखा है। यह गौरव की बात है, अभिमान करने जैसी बात है, अनुकरणीय बात है।
- बापुसाहेब ने सोदेश्य 'मेरिट ओरिएण्टेड' शिक्षा के बजाय 'देहाती छात्रों के लिए शिक्षा' इस नीति को अपनाया। मराठवाड़ा प्रांत में 'संगणकशास्त्र' यह विषय जनसामान्य तक पहुँचे, इस हेतु ज्ञानोपासक महाविद्यालय में इस विषय का 'अध्ययन-अध्यापन' बापुसाहेब ने आरंभ किया।
- राजनीति, सामाजिक क्षेत्र तथा शिक्षा क्षेत्र में बापुसाहेब का व्यक्तित्व तथा आचरण पारदर्शी रहा है। इसी कारण बापुसाहेब का समाज में एक प्रभाव है। सभी के मन में उनके प्रति आदर भाव है। जो भीतर है, वही बाहर है, ऐसा शुद्ध अंतःकरण बापुसाहेब का है।

- बापुसाहेब जनपरिषद नामक संगठन के सदस्य थे। उन्होंने परभणी जिले में सन 2000 में समाजवादी जन परिषद नामक संगठन स्थापित किया था।
- एखाद व्यक्ति ध्येय से प्रेरित हुआ तो असंभव काम को भी संभव बना देती है। यह वाक्य बापुसाहेब के संबंध में बिल्कुल सत्य है।
- जब बापुसाहेब सांसद थे तो उस समय विलासराव जी देशमुख महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री तथा केंद्रीय मंत्रीमंडल में थे। दोनों की राजनीतिक पार्टियाँ भिन्न-भिन्न थीं, फिर भी दोनों में परस्पर अपनापन तथा आस्था थी। बापुसाहेब को सांसद बनने का अवसर स्वयं बालासाहेब ठाकरे जी ने दिया था। बापुसाहेब के मन में भी बालासाहेब ठाकरे के प्रति असीम सम्मान था।
- परभणी, जालना लोकसभा चुनाव क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते समय अँड. गणेशरावजी दुधगांवकर ने निधि देते समय कभी भी यह नहीं सोचा कि परभणी अपना है और जालना पराया है। घनसावंगी तथा परतुर विधानसभा चुनाव क्षेत्र में उन्होंने यथाशक्ति निधि प्रदान किया। इतना ही नहीं बल्कि जालना-नगरसोल डेमो एक्सप्रेस के लिए भी उन्होंने प्रयास किए।
- जितूर तहसील के मैनापुरी स्थित एशिया का पहला 'सहकारी खाद कारखाना' बापुसाहेब के प्रयाओं की ही फलश्रुति है। इस कारखाने के उद्घाटन अवसर पर लिंबाजीराव दुधगांवकर ने कहा था कि खाद कारखाना निर्माण का काम बहुत बड़ा है। लेकिन मुझे विश्वास था कि यह निर्माण कार्य होने ही वाला है। क्योंकि गणेशराव जी ने कोई कार्य करने का निश्चय किया तो वे उस काम को पूर्ण करते ही हैं।
- बचपन से ही यह दृढनिश्चय गणेशराव जी में मैं देखते आ रहा हूँ। अतः खाद निर्मिती कारखाना पूर्ण होने वाला है, यह आमविश्वास मुझे था और यह आत्मविश्वास गणेशराव जी ने सच करके दिखाया है।



‘परस्पर विरोधी विचार तथा कार्यप्रणालियों के कारण भावी चुनावों में मतदाता निर्णायक रहेंगे, कुछ राजनीतिक पार्टियों के अस्तित्व का ही प्रश्न निर्माण होगा, यह भविष्यवाणी वर्तमान राजनीति के संबंध में बापुसाहेब ने पहले ही व्यक्त की थी।



## बापुसाहेब के ही शब्दों में...

- लगभग 1965 को विद्यार्थी प्रतिनिधि का चुनाव लड़ा। यह चुनाव तत्कालिन युथ कांग्रेस के बॅनर में लड़ लिया। युक्रांद तथा शेकाप का प्रभाव छात्र आंदोलन पर था। आगे चलकर शिवाजी महाविद्यालय की छात्र संसद का अध्यक्ष बना।
- मैं औरंगाबाद के एम.पी. लॉ कॉलेज में पढ़ाई के लिए था, तभी मराठवाडा विकास आंदोलन शुरू किया। इस आंदोलन का नेतृत्व करते हुए मराठवाडा प्रांत के विकास हेतु सक्रिय रहा।
- मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद नामांतर के समय, मैं इस आंदोलन का प्रभावी नेतृत्व कर सका, इसका श्रेय मेरे परिवार को तथा हमारे परिवार के प्रमुख लिंगाजीराव दुधगांवकर को जाता है। महाराष्ट्र राज्य के टेक्निकल विभाग के मंत्री के रूप में मैं कार्य कर पाया।



तत्कालिन केंद्रीय मंत्री मा. माधवराव सिंधीया (शिंदे)  
इनके साथ बापुसाहेब और साथी

- एक मंत्री के रूप में विना अनुदानित इंजीनियरिंग कॉलेज को मान्यता देने की नीति मैंने अपनाई।
- एल. एल. बी. को प्रवेश लिया। सन 1971-72 इस शैक्षिक वर्ष में मैं एम.पी. लॉ कॉलेज स्टुडेंट कौंसिल का अध्यक्ष बना। एल.एल. बी. का अध्ययन करते समय ही लगभग 1972 को मराठवाडा प्रांत के विकास हेतु आंदोलन हुआ। मैं मराठवाडा स्टुडेंट युनियन असोशिएशन' (मुसा) के अध्यक्ष के रूप में चुनकर आया।
- हमने हमारी माँगे प्रत्यक्ष मुख्यमंत्री के सामने रखीं। जायकवाडी प्रकल्प, अप्पर पैनगंगा, लोअर दुधना, उजनी परियोजना, विष्णुपुरी परियोजना, ब्रॉड गेज रेल, आकाशवाणी, हाईकोर्ट आदि माँगे उनमें प्रमुख थीं। महाराष्ट्र राज्य का भावी मुख्यमंत्री मराठवाडा प्रांत का ही होना चाहिए यह एक विशेष माँग हमने की थी।
- उस समय मैं मराठवाडा पदवीधर मतदारसंघ से छात्र आंदोलन के माध्यम से चुनकर आया था। उस समय मैं मराठवाडा विश्वविद्यालय का एक्जीक्यूटिव काऊंसिल का सदस्य था।
- नामांतर आंदोलन के पक्ष में रहने वाला मराठवाडा का एकमात्र विधायक था।



गौरवग्रंथ सारांश



हिंदी / मराठी

उपर्युक्त शब्दांकन

“कर्मयोगी अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब”  
अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।



प्रकाशित संपूर्ण गौरवग्रंथ




## सांसद अॅड. गणेशरावजी दुधगांवकर के कार्यों का पूनर्विलोकन

	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / वर्तमान स्थिती
<p>1. हजिरा गॅस पाईपलाईन - सन 1983 से महत्वपूर्ण पृष्ठपोषण (Followup)</p> <p>15,000 करोड़ रू. निवेशवाले (सन 1988) खाद कारखाने रिफायनरी, प्लास्टिक उद्योग, घरेलू गॅस पाईपलाईन, कारखानों का जाल विस्तृत करनेवाले प्रकल्प - ऐसा वह बड़ा ही महत्वाकांक्षी प्रकल्प अहवाल है।</p>	<p>हजिरा-नांदेड-नागपूर गॅस पाईपलाईन निर्माण हेतु प्रस्ताव 1985 के काल में पेश किया।</p> <p><b>मराठवाडा क्षेत्र और विदर्भ के औद्योगिक विकास और रोजगार निर्माण हेतु महत्त्वपूर्ण 25 लाख प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार निर्माण की क्षमता का प्रस्ताव</b></p>	<p>→ सूरत (गुजरात) से पॅराव्दिप (ओरीसा) तक 1550 कि.मी. लंबाई के गॅस पाईपलाईन प्रकल्प को मंजूरी प्राप्त।</p> <p>→ इस पाईपलाईन से महाराष्ट्र के धुलिया, नंदूरबार, जलगाँव, बुलढाणा, अकोला, अमरावती, वर्धा, नागपूर, भंडारा इन जिलों को मिलाया गया है। <b>GAIL कंपनी को गॅस पाईप लाईन जोडने का टेंडर प्राप्त है।</b></p> <p>→ भविष्य में बुलढाणा से जालना, औरंगाबाद और परभणी को पाईपलाईन से जोडा जाए, अकोला से वाशिम, हिंगोली, नांदेड के लिए जोडा जाए, इसके लिए निरंतर केंद्र सरकार की ओर पृष्ठपोषण जारी है।</p>
<p>2. रेल</p> <p>3. केंद्र सरकार का फुड पार्क</p> <p>4. केंद्रीय विद्यालय</p>	<p>केंद्रीय विद्यालय संघठन इनकी ओर से परभणी और जालना जिला मुख्यालय में केंद्रीय विद्यालय का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है।</p>	<p>* यातायात में मुश्किल न आए इस हेतु चुडावा-वसमत इस बायपास रस्ते को मंजूर कराया.</p> <p>* छ.संभाजीनगर (औरंगाबाद) के लिए मंजूर हुआ।</p> <p>→ केंद्रीय विद्या संघठन, नई दिल्ली की ओर से परभणी और जालना जिला स्थित कक्षा 1ली से 10वी तक CBSE पॅटर्न के अनुसार केंद्रीय विद्यालय प्रारंभ करने के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए है।</p> <p>→ राज्य सरकार की ओर से भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया पूरी होने के पश्चात विद्यालय प्रारंभ किये जायेंगे।</p> <p>→ ग्रामीण विभागों के बुद्धिमान छात्रों के जीवन को विशिष्ठ पहचान देने में यह विद्यालय महत्त्वपूर्ण होंगे।</p>



	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / सद्य स्थिती
<b>सिंचाई (नहर)</b>		
1) माजलगाव दाहिना (दाया) कालवा (नहर)	16 वर्षों से अपूर्ण कार्य था। 101 कि.मी तक कार्य पूर्ण लेकिन प्रकल्प अपूर्ण रहा।	<ul style="list-style-type: none"> <li>→ निरंतर पृष्ठपोषण के कारण कि.मी. 101 से 114, 114 से 124 ओर 125 इस कार्य के आगे के कार्य को प्रशासकीय मंजूरी टेंडर प्रक्रिया पूर्ण। अब प्रत्यक्ष कार्य की प्रतिक्षा।</li> <li>→ कार्यारंभ आदेश प्राप्ति का निरंतर पृष्ठपोषणता जारी।</li> <li>→ यह प्रकल्प पूर्णतः अर्थात कि.मी- 134 तक नहर पूरी होने के बाद <b>गंगाखेड तहसिल के 12000 हेक्टर भूमि सिंचाई के क्षेत्र में आ सकती है।</b></li> </ul>
2) निम्न दुधना प्रकल्प	वेगवर्धित वेगसिंचाई कार्यक्रम के अंतर्गत सम्मिलित (AIBP)	<ul style="list-style-type: none"> <li>→ प्रस्तुत प्रकल्प के लिए AIBP के अंतर्गत इस वर्ष 45 करोड रु. का कोष (निधी) प्राप्त। प्रकल्प प्रभावित 'नान्सी' गाँव के पूर्णवसन (पूर्णस्थावित) होकर नहर काम को 99% पूर्णत्व प्राप्त हुआ।</li> <li>→ दायाँ नहर (कालवा) 47% तो बायाँ (डावा) नहर (कालवा) 92% पूर्ण हो गया है।</li> </ul>
3) करपरा मध्यम प्रकल्प	2009-10 विशेष दुरुस्ती प्रस्ताव शासन कि ओर मान्यता के लिए प्रस्तुत किया है।	<ul style="list-style-type: none"> <li>→ प्रकल्प के विशेष बदलाव प्रस्ताव की किंमत रु.9.42 करोड को शासन की मंजूरी मिली।</li> <li>→ प्रकल्प के पहले 2 कि.मी. का विस्तारीकरण पूर्ण होकर 1041 हेक्टर भूमि सिंचाई क्षेत्र में आएगी।</li> </ul>



	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / सद्य स्थिती
<b>रस्ता / मार्ग</b>		
1) पैठण-अंबड-आष्टी-पाथरी-पोखर्णी-पुर्णा-नांदेड महामार्ग	राष्ट्रीय महामार्ग के लिए राज्यशासन की ओर प्रस्ताव की पेशकश। <b>कै.मा.ना. शंकरराव चव्हाण इनका जन्मस्थल पैठण (नाथसागर) से कर्मभूमि नांदेड राष्ट्रीय राजमार्ग का कार्यान्वयन लगभग पूरा है।</b>	→ राष्ट्रीय महामार्ग मंजूरी के लिए उचित प्रतिकृत मार्ग की संपूर्ण जानकारी का नक्शा राज्य और केंद्र सरकार की ओर प्रस्तावित किया, आज रास्ता लगभग तैयार है। 
2) बैतूल-अंजनगाव सुर्जी-अकोट-अकोला-रिसोड-सेनगाव-जितूर-परभणी-गंगाखेड-अंबाजोगाई-कळंब-धाराशिव	प्रस्तुत मार्ग को राष्ट्रीय महामार्ग का दर्जा दिया गया। इसके लिए 2010-11 में राज्य सरकार की ओर माँग की	→ प्रस्तुत मार्ग का रूपांतर राष्ट्रीय महामार्ग में हो, इसके लिए उचित प्रतिकृति में राज्य और केंद्र सरकार की ओर प्रस्ताव की पेशकश और निरंतर पृष्ठपोषण किया गया।
3) वाटूर-जितूर-औंढा नागनाथ-नांदेड और औंढा नागनाथ-हिंगोली महामार्ग	इस महामार्ग को BOT तत्व पर चतुःपट्टीकरण की निरंतर माँग की गई। 2012-13 में प्रस्तुत मार्ग को राज्य सरकार के BOT तत्व पर मंजूरी प्राप्त। टेंडर की घोषणा।	दृष्टिक्षेप (दृष्टिपात) में महामार्ग (वाटूर ते जितूर) → चतुःपट्टीकरण - 61.21 कि.मी. → कुल लंबाई - 144 कि.मी. में से → सिमेंट काँक्रीटीकरण - 5.95 कि.मी. → दृपट्टीकरण (दुपट्टीकरण) - 77.24 कि.मी. → योजना खर्च - ₹. 686 करोड।
4) राष्ट्रीय महामार्ग -222	भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, नई दिल्ली NHDP - IVA में प्रस्तावित 2010-11 प्रस्तावित करने में सफलता प्राप्त। कि.मी. 342-442 तक के मार्ग के कार्य का ठेका (अनुबंध) L&T कंपनी को दिया गया। <b>मानवत रोड में रेल उड्डाणपूल होगा।</b>	→ राष्ट्रीय महामार्ग -222 (कि.मी. 442/00 ते 615/00) अर्थात मानवत रोड से महाराष्ट्र - आंध्र राज्य सीमा के इस मार्ग के दोपट्टीकरण कार्य के बजट ₹. 695 कोटी भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण की ओर मंजूरी हेतु प्रस्तुत किया गया। → इस वर्ष 2013-14 मध्ये परभणी उपमार्ग के साथ इस प्रकल्प की मान्यता (मंजूरी) हेतु निरंतर पृष्ठपोषण आरंभ किया। → मानवत रोड रेल उड्डाणपूल तयार



	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / सद्य स्थिती
5) राष्ट्रीय महामार्ग	राष्ट्रीय महामार्ग NH-222	<p>प्रस्तावित कार्य के लिए प्राप्त कोष (पूँजी)</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>→ ढालेगाव से मानवत रोड के लिए रु. 17.50 करोड ।</li> <li>→ मानवत रोड से दंत महाविद्यालय रु. 5.50 करोड ।</li> <li>→ दंत महाविद्यालय से रेल्वे स्टेशन परभणी रु. 5.50 करोड ।</li> <li>→ श्री दत्तधाम से जिरो फाटा रु. 5.00 करोड ।</li> </ul>
6) राष्ट्रीय महामार्ग-211 (पाचोड से शहागड) 30 कि.मी.	NHDP - IVB	<ul style="list-style-type: none"> <li>→ राष्ट्रीय महामार्ग-211 के चतुःपदरी करण कार्य को प्रत्यक्ष आरंभ ।</li> <li>→ शहागड में रु. 60 करोड उड्डाणपूल प्रस्तावित ।</li> </ul>
7) प्रधानमंत्री ग्रामसडक योजना	टप्पा-5 में 12 कामों के प्रस्ताव के प्रतिक्रिया के अभाव में प्रलंबित पुलों का काम प्रधानमंत्री ग्रामसडक परियोजना के अंतर्गत परभणी जिले में 146 करोड रु. के कार्य प्रस्तावित है। प्रधानमंत्री ग्रामसडक परियोजना के अंतर्गत जालना जिलेमे 30 करोड रु के कार्य प्रस्तावित है ।	<ul style="list-style-type: none"> <li>→ भाग-5 में परिवधित बजट के साथ (रु 18 करोड) केंद्र सरकार की ओर मंजुरी हेतु प्रस्तुत किया गया ।</li> <li>→ मार्ग के 19 पुलों के कार्य की मंजुरी टेडर प्रक्रिया पूर्ण की । प्रत्यक्ष कार्य का प्रारंभ ( 14 करोड 40 लक्ष रु.)</li> <li>→ परभणी और जालना जिले में प्रस्तावित कार्यो का प्रारंभ हो इसके लिए प्रमुखता से पृष्ठपोषण किया गया ।</li> </ul>
8) छत्रपती शिवाजी महाराज पुतले से श्री दत्तधाम (अपघात प्रवण क्षेत्र का रस्ता)	पिछले 12 वर्षों से कोई काम नहीं हुआ।	<ul style="list-style-type: none"> <li>→ 2010-11 शिवाजी नगर से खानापूर फाटा - साईड पट्टा - 1 करोड 20 लाख व्यय ।</li> <li>→ 2012-13 साईड पट्टे के डामरीकरण - 1 करोड रु. व्यय (छत्रपती शिवाजी महाराज पुतला से वसंतराव नाईक पुतला)</li> <li>→ 2012-13 मार्ग दुभाजक और विद्युत पोल का हटाये जाने के लिए कार्य संपन्न हुआ - 2 करोड 88 लक्ष रु. व्यय हुआ ।</li> </ul>



	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / सद्य स्थिती
<b>रेल</b>		
1) परभणी - मुदखेड	परभणी-मुदखेड रेल मार्ग के विस्तारीकरण की माँग ।	→ रेलमार्ग के दुतर्फा विस्तारीकरण को मंजूरी प्राप्त । प्रस्तावित 350 करोड रुपये के बजट की रेल बोर्ड की ओर पेशकश । प्रत्यक्ष राशि बढ़ाकर कार्य के शुभारंभ के हेतु रेलमंत्रालय की ओर निरंतर पृष्ठपोषण ।
2) परभणी-मनमाड सिकंद्राबाद-मुदखेड आदिलाबाद-मुदखेड	इन सभी रेलमार्गों को दुतर्फा विस्तारीकरण करने की माँग ।	→ 2013 के रेल बजट में प्रस्तुत रेल मार्गों के दुतर्फा विस्तारीकरण कार्य के सर्वेक्षण को मंजूरी प्राप्त ।
3) पूर्णा (जं.) मे मल्टिस्पेशलिटी हॉस्पिटल	2010-11 के रेल बजट में मंजूरी	→ पूर्णा (जं.) में प्रस्तावित मल्टिस्पेशलिटी हॉस्पिटल के <b>प्रस्थापित प्रकल्प (योजना) में सम्मिलित</b> करने हेतु रेलमंत्रालय की मंजूरी । → प्रस्तुत हॉस्पिटल के लिए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर पृष्ठपोषण निरंतर जारी ।
4) चुडावा - बसमत उपमार्ग		→ रेल यातायात में रुकावट ना हो इसलिए चुडावा - बसमत उपमार्ग को मंजूरी प्रदान ।
5) परभणी (जं.) और पूर्णा (जं.)	परभणी (जं.) और पूर्णा (जं.) इन दो रेलस्थानकों को 'आदर्श रेलस्थानक' की सूची में सम्मिलित होने के कार्य में 2010 में सफलता प्राप्त ।	→ 'आदर्श रेलवेस्थानक' सूची में सम्मिलित होने से दोनों रेलस्थानकों में कार्य का प्रारंभ । पूर्णा के बहुत से कार्य पूर्णत्व की ओर तो परभणी के प्लॉटफॉर्म विस्तारीकरण वॉशेबल अंप्रान ये कार्य प्रगती पर अग्रेसर । रेल स्थानक के बाहर सेक्युरिटींग स्थान (एरीया) का कार्य संपन्न साथही नये पादचारीपूल का कार्य प्रगति पथ पर अग्रेसर (विकासार्थिन)
6) गंगाखेड, मानवत रोड, परतूर, सेलू, मकृवि का उड्डाणपूल	गंगाखेड रेल उड्डाणपूल को मंजूरी (मान्यता)	→ गंगाखेड स्थित रेल उड्डाणपूल को मंजूरी और कार्य का प्रारंभ । 2021 मे पुल तयार हुआ । → मानवत रोड यहाँ के उड्डाणपूल को भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण की ओर से प्रस्तावित।



	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / सद्य स्थिती
7) सेलू, मानवत रोड, परतूर, पोखर्णी (नृसिंह) और गंगाखेड रेल स्थानक	इन सभी रेलस्थानक को का 2010-11 के आदर्श रेल स्थानक की सूची में माँग के तहत सम्मिलित ।	→ मानवतरोड रेलस्थानक का कार्य संपन्न हुआ। सेलू, परतूर, गंगाखेड और पोखर्णी (नृसिंह) यहाँ के रेलस्थानकों का कार्य भी विकास की और अग्रेसर ।
8) अकोला-खंडवा	अकोला-खंडवा रेलमार्ग विस्तार करने की माँग	→ अकोला से गांधी स्मारक रेलमार्ग विस्तारीकरण कार्य का प्रारंभ ।
9) रेल्वे आरक्षण केंद्र	जितूर, मंठा, सोनपेठ, घनसावंगी, पालम तहसिल डाक कार्यालय में रेल आरक्षण केंद्रों की माँग ।	→ जितूर के डाक कार्यालय में रेल आरक्षण केंद्र का प्रारंभ । अन्य स्थानों पर केंद्र के क्रियान्वयन हेतु निरंतर पृष्ठपोषण जारी ।
10) नई रेलगाडिया आरंभ करने में सफलता ।		
11) परली-बीड-नगर		→ परली-बीड नगर इस रेलमार्ग के शिघ्र कार्यारंभ के लिए संसद में मुद्दा उठाया ।

### अन्य विकास कार्य

1) परभणी स्टेशन ऑफिस पोस्ट	परभणी और परतूर में नए डाक कार्यालय के ईमारत निर्माण हेतु केंद्र सरकार की ओर प्रस्ताव दाखिल किया ।	→ परभणी और परतूर में नए डाक कार्यालय के निर्माण कार्य का प्रस्ताव शासन की ओर से स्वीकृत । 12 वी पंचवार्षिक परियोजना में सम्मिलित हुआ । → परभणी के ईमारत निर्माण को इस वर्ष प्रारंभ होगा । तो परतूर के ईमारत का पृष्ठपोषण जारी है ।
2) एफ.एम. रेडिओ परभणी	2009 से निरंतर एफ.एम. केंद्र प्रारंभ होने हेतु पृष्ठपोषण	→ परभणी आकाशवाणी केंद्र परिसर में एफ.एम. केंद्र के लिए आवश्यक सभी मुलभूत सुविधाएँ पूरी की गई । 102 MHz इस Frequency पर एफ.एम. रेडिओ आरंभ हुआ है ।



श्रीक्षेत्र जगन्नाथपुरी पीठाधीश्वर के चरणकमल  
 पिछले छः-सात दशकों से परभणी को नहीं लगे थे ।  
 परभणीवासियों का यह सौभाग्य कि  
 अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (बापूसाहेब) के आग्रहपूर्वक  
 निमंत्रण पर 2019 में परभणी पधारे  
 श्रीक्षेत्र जगन्नाथपुरी पीठाधीश्वर  
 पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी



अनेक पिढीयों से पंढरपुर वारी में संत ज्ञानेश्वर माऊली के पादुकाओं का अभिषेक करना यह सन्मानप्राप्त परिवार

🌐 [www.Dudhgaonkar.in](http://www.Dudhgaonkar.in)





राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान साहब इनके करकमलों से दैनंदिनी का विमोचन संपन्न

उपस्थित अमृत महोत्सव समिती सदस्य :

- श्री. साहेबराव लबडे (सेवानिवृत्त वरिष्ठ पोलिस अधिकारी), पुणे
- पुराने उस्मानाबाद जिले के भाग्यविधाते स्व. शिवाजीराव नाडे (मुरुड) इनकी बहू सौ. वैशाली अरविंदराव नाडे
- अजित हनुमंतराव गोरे पाटील M.S. IT (USA), डॉ. मनाली हनुमंतराव गोरे पाटील (बनसारोळा, बीड)
- विक्रमादित्य धरणीधर पाटील (चव्हाण) IIT, Mumbai (धाराशिव) VP-MNC Bank
- कामरान सिद्दीकी (हिंगोली)

इस दैनंदिनी हेतु



स्केन करें।

अनेक पिढीयों से पंढरपुर वारी में संत ज्ञानेश्वर माऊली के पादुकाओं  
का अभिषेक करना यह सन्मानप्राप्त परिवार

www.Dudhgaonkar.in

बापुसाहेब की कारकीर्द हेतु



स्केन करें।



संपर्क :

समीर गणेशराव दुधगांवकर

M.S. Mech Engg. USA

अमृत महोत्सव समिती सदस्य

सन 2002 से श्रीमद्भगवद्गीता अध्येता

Doubling of Jobs संकल्पना सुचक

+9191 4536 4999

+9194 2293 5407 (OFFICE)

SamirGDudhgaonkar

SamGDudhgaonkar





छत्रपती शिवाजी महाराज



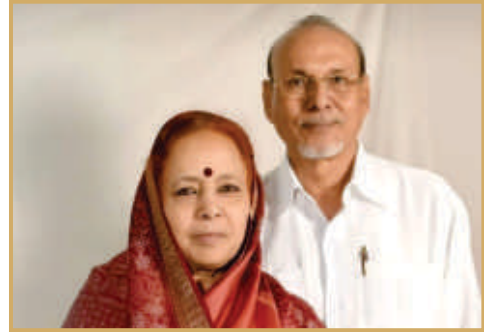
महाराज महादजी शिंदे (सिंधिया)



मराठवाडा मुक्ती संग्राम स्वातंत्र्यसेनानी परिवारातील

“श्रीगणेश चतुर्थी” तिथीवर जन्म म्हणुन  
गणेश नामकरण करण्यात आलेले

मराठवाड्याचे कर्मवीर - लोकनेते मा.मंत्री, खासदार  
अॅड. गणेशराव नागोरव दुधगांवकर  
(शिंदेशाही राऊत)



पंढरपुर वारीत वेळापूर येथील श्री संत ज्ञानेश्वर माऊली पादुकांच्या अभिषेकाचा मानकरी परिवार

# अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत)

या लोकनेत्यावरील वार्षिक वक्तृत्व स्पर्धेत सहभागी व्हावे.

प्रतिवर्ष होणाऱ्या स्पर्धेची माहिती	52
<b>मराठी (अनुक्रमणिका)</b>	
1. सम्माननीय अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (बापूसाहेब) : संक्षिप्त परिचय	53
2. अॅड. गणेशराव यांना समर्पित विख्यात कवि फ. मुं. शिंदे यांची कविता	56
3. सन 1971 ते 2019 - बापूसाहेब यांचा कार्यवृत्तांत	58
4. “काही सन्माननिय साथिदारांच्या शब्दांतले बापूसाहेब” 9 लेखांसहित	60
5. बापूसाहेब यांच्या साथिदारांच्या शब्दातील खालील मुद्यांवर आधारित योगदानाचे वर्गीकरण (गौरवग्रंथ सारांश)	
● पदे	90
● लोकनेता	91
● उभारणी	95
● समजुतदार जनसेवक	102
● बापूसाहेबांच्या शब्दांत	108
6. खासदार दुधगांवकर (बापूसाहेब) यांनी केलेल्या कामांचा आढावा	109
7. बापूसाहेबांच्या कर्तृत्वाची काही छायाचित्रे	115

हिंदी (अनुक्रम)

पान क्र. २

English (Index)

Page No. 122

अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत)  
वार्षिक खुली वक्तृत्व स्पर्धा

स्पर्धेची माहिती

प्रथम वर्ष - स्पर्धेचा विषय :

जनसेवक गणेशराव दुधगांवकर म्हणजे कर्मयोगी, विकास पुरुष, सत्यआग्रही कि ज्ञानोपासक ?

स्पर्धेचे विवरण :- वयोगट : 30 वर्ष पर्यंत, वयोगट : 30 वर्ष व त्यापुढील

वयोगट : 30 वर्ष पर्यंत	
पारितोषिक	रक्कम
प्रथम	33,000/-
द्वितीय	23,000/-
तृतीय	11,000/-
उत्तेजनार्थ	5000/-
डिजीवीर अवार्ड (जास्त व्हिडिओ करिता)	10,000/-

वयोगट : 30 वर्ष व त्यापुढील	
पारितोषिक	रक्कम
प्रथम	71,000/-
द्वितीय	33,000/-
तृतीय	21,000/-
उत्तेजनार्थ	5000/-
डिजीवीर अवार्ड (जास्त व्हिडिओ करिता)	10,000/-

मागील स्पर्धांच्या माहितीसाठी तसेच वार्षिक होणार असलेल्या स्पर्धेच्या सुचनांसाठी प्रत्येक वर्षीच्या स्वातंत्र्यदिनापासुन संकेतस्थळावर भेट देत रहावी.

[www.Shinde.World/vakrutva-spardha-Parbhani](http://www.Shinde.World/vakrutva-spardha-Parbhani)



आयोजक : ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ, परभणी.



## सन्माननीय बापूसाहेब : संक्षिप्त परिचय

- नाव : अँडव्होकेट गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत)
- लोकाभिमुख नाव : बापूसाहेब
- जन्म/मुळगाव : दुधगाव, ता. जिंतूर, जि. परभणी
- निवास स्थान : दुधगांवकर फार्म हाऊस,  
पोखर्णी फाटा, मु.पो. पोखर्णी (नृसिंह), ता.जि. परभणी
- कायम पत्ता : द्वारा ज्ञानोपासक महाविद्यालय,  
पो.बॉ.नं. 54, परभणी - 431 401.
- दूरध्वनी क्रमांक : (02452) 242016 मो.नं. +9194 2272 7444
- जन्म दिनांक : 9/9/1945 (जन्मतिथी : श्री गणेश चतुर्थी, म्हणुन गणेश असे नामकरण झाले)
- शिक्षण : बी.ए., एल.एल.बी. (अँडव्होकेट)
- कुटुंबीय : पत्नी - डॉ.सौ. संध्याताई गणेशराव दुधगांवकर, M.Sc., Ph.D. (1981)  
मुलगी - मधुरा गणेशराव दुधगांवकर, M.S. Maths & Comp.Science (USA)  
मुलगा - समीर गणेशराव दुधगांवकर, M.S. Mech. Engg. (USA) (2001)
- छंद / आवड : श्रवण - व्याख्यान, प्रवचन, गायन  
वाचन - विविध साहित्य, ग्रंथपुस्तके  
प्रबोधन - युवा संघटन / युवा कल्याण
- पक्ष संघटन/विस्तार कार्य : \* काँग्रेस पक्ष प्रवेश सन 1975  
\* जिल्हाध्यक्ष युवक काँग्रेस सन 1976  
\* सरचिटणीस म.प्र.काँ. सन 1987  
\* उपाध्यक्ष महाराष्ट्र प्र.काँ. सन 1994  
\* जालना जिल्हा संपर्क प्रमुख - शिवसेना सन 2004-09
- राजकीय क्षेत्र योगदान : \* सन 1980 चे आमदार (काँग्रेस) -  
वसमत विधानसभा मतदारसंघ, जिल्हा हिंगोली (जुना जिल्हा परभणी)  
\* सन 1985 चे आमदार (काँग्रेस)  
जिंतूर विधानसभा मतदारसंघ जि.परभणी  
\* राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार) -  
रोजगार हमी योजना, तंत्र शिक्षण, सेवायोजना खाते, महाराष्ट्र राज्य

कार्यकाळ - सन 1983 ते 1985

मा.ना. श्री. वसंतदादा पाटील, मुख्यमंत्री व

मा.ना. श्री. रामराव आदिक, उपमुख्यमंत्री यांचे मंत्रिमंडळ

**\* अमरावती आणि बुलढाणा दोन्ही जिल्ह्यांचे पालकमंत्री**

**\* सन 1990** विधानसभा पाथरी, जि.परभणी (काँग्रेस)-अटीतटीच्या लढतीत पराभव

**\* सन 1994** स्थानिक स्वराज्य संस्था विधान परिषद मतदार संघ (अपक्ष),  
परभणी- हिंगोली (फक्त 11 मतांनी पराभव)

**\* खासदार सन 2009 - 15व्या लोकसभेचे सदस्य म्हणून निवडून आले.  
(शिवसेना)**

जनाधारामुळेच 19 वर्षांनी हे अद्वितीय यश मिळविणे शक्य झाले.

भ्रष्ट विरोधकांनी कारस्थाने करून मोठ्या कालखंडासाठी संवैधानिक पदापासून  
दुर ठेवले, तरीही पुनः मोठे पद मिळविले असे देशातील कदाचित एकमेव  
उदाहरण !!

**सहकार क्षेत्र योगदान**

- \* संचालक, दुधगाव वि.का.से.स.सो., ता. जितूर
- \* अध्यक्ष, 1960 स्थापित जितूर तालुका सहकारी जिनिंग प्रेसिंग संस्था, जितूर
- \* अध्यक्ष, 1975 स्थापित जि.स. खरेदी विक्री संघ, परभणी
- \* संस्थापक, 1989 स्थापित नृसिंह सहकारी साखर कारखाना, लोहगाव
- \* संस्थापक/अध्यक्ष-PAFFCO खत कारखाना जितूर सन 1989 ते 2001
- \* निधी अभावी रखडलेले पाथरी आणि पुर्णा हे दोन्हीही सहकारी साखर कारखाने  
निधी मिळवून देऊन सुरु केले
- \* संचालक, म.रा.स. मार्केटिंग फेडरेशन, मुंबई सन 1978
- \* चेअरमन, म.रा.स. मार्केटिंग फेडरेशन, मुंबई सन 1989
- \* संचालक, IFFCO नवी दिल्ली सन 1989
- \* संचालक, नाफेड सन 1987-88
- \* संचालक, कृषक भारती को.सो. सन 1989
- \* चेअरमन, ज्ञानोपासक नागरी सहकारी बँक, परभणी

**शैक्षणिक कार्य**

- \* राज्याचे विना अनुदानित संस्था सुरुवात करण्याबाबत धोरण बनवून भारती  
विद्यापीठ, MGM, MIT यांसारख्या अनेक संस्थांना मंजुरी
- \* मराठवाड्यात 45 आयटीआय संस्था व 45 टेक्नीकल हायस्कूलला सुरुवात
- \* संस्थापक अध्यक्ष : ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ, परभणी (स्थापना स. 1981)
  - आजतागायत 50,000 परिवारांना उच्च दर्जाचे शिक्षण देणारी संस्था
  - स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेडमध्ये नावाजलेले शिक्षण मंडळ
  - संस्थेची तीन महाविद्यालये व सहा माध्यमिक विद्यालये, संपुर्ण परभणी  
जिल्ह्यात कार्यरत असलेले नावाजलेले शिक्षण मंडळ



महाराष्ट्रातील सर्वात मोठा सांस्कृतिक व धार्मिक उत्सव म्हणजे “पंढरपूरची वारी”. या वारीमध्ये पंढरपुर जवळील ‘वेळापूर’ येथे ठाकरबुवा समाधीवर संत ज्ञानेश्वर माऊलींच्या पादुकांचा अभिषेक होतो. मागील अनेक पिढ्यांपासुन हा अभिषेक करण्याचे सौभाग्य महाराष्ट्रामध्ये दुधगांवकर परिवाराचे !! (सन 1850)

विठ्ठलाची कृपा अजुन काय...

श्रीक्षेत्र जगन्नाथपुरी पीठाधीश्वर यांचा चरणस्पर्श मागील सहा-सात दशकांपासुन परभणीला झाला नव्हता. अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (बापूसाहेब) यांच्या निमंत्रणास मान देऊन श्रीक्षेत्र जगन्नाथपुरी पीठाधीश्वर पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वतीजी अनेक दशकानंतर परभणीमध्ये येण्याचा सुवर्ण क्षण आला... (सन 2019)



स्वातंत्र्य सैनिक  
कै. तानुबाई ज्ञानोबाराव शिंदेशाही राजत  
(दुधगांवकर)  
बापूसाहेब यांची आज्ञी



कै. नागोराव ज्ञानोबाराव शिंदेशाही राजत  
(दुधगांवकर)  
बापूसाहेब यांचे वडील

### शिंदेशाही राजत (दुधगांवकर) परिवार



कै. प्रयागबाई बापूराव निकम रावळेकर  
सेलू  
जि. परभणी, महाराष्ट्र  
बापूसाहेब यांच्या मोठ्या बहिणी



कै. रुक्मिणीबाई उचमराव शेजळ  
सुर्यवंशी आडगावकर, माजलगाव  
जि. बीड, महाराष्ट्र



कै. विंबाजीराव नागोराव दुधगांवकर  
अध्यक्ष, PDCC बँक  
(1970 - 1987)



कै. अंबादासराव नागोराव दुधगांवकर  
बापूसाहेब यांचे मोठे भाऊ



कै. रावसाहेब नागोराव दुधगांवकर



मराठवाड्याचे कर्मवीर - लोकनेते मा. मंत्री मा. खासदार  
जुन्या उस्मानाबाद जिल्ह्याचे भाग्यविधाते स्वातंत्र्य सैनिक  
सहकार महर्षी कै. शिवाजीराव तुकारामजी नाडे (मुरुड)  
यांचे व्याही

रझाकारांच्या अन्यायी राजवटीच्या विरोधात सशस्त्र लढ्यात नेतृत्व करणारे  
स्वातंत्र्य सैनिक कै. तुकारामजी भीमराव जाधव पाटील तादलापूरकर  
(ता. उदगीर, जि. लातूर) यांच्या मुलीचे जावई



प्रसिद्ध कवी फ.मुं.शिंदे  
अध्यक्ष, 87वे अखिल भारतीय  
मराठी साहित्य संमेलन



गणेशराव दुधगांवकर यांना समर्पित  
फकीर मुंजाजी शिंदे  
यांची कविता...

जिवलग : फ.मुं.शिंदे

आले शोधत शोधत  
होतो आम्ही अंधकार  
उचळून तमाळून  
वसविले उजैडान

अंतरीचे अनुबंध  
जणू आधीचेच होते  
आमच्यामून मुग्ध अले  
वर उरून नाने

आकाशकर नात्यास  
तसे काही नान नाही  
राहिले न वाटेसही  
अनोवनी गाव नाही

आमच्यासाठी मुग्धीच  
जणू देवाचा प्रसाद  
मुमच्या वहितीखाली  
शेत आमचे आबाद

धात्रे विषता विषता  
झाले नात्याचेच माज  
आठवणीत सदैव  
असे स्वप्नातही जाग

गणेशाच्या झोकीतले  
आम्ही लाडके फकीर  
नावनास पावणारे  
मुग्धीच आमचे पीर



# मराठवाड्याचे कर्मवीर - लोकनेते मा.मंत्री, खासदार



9 सप्टेंबर

## अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत)

### यांच्या कारकीर्दीतील महत्वाची कार्ये / बाबी

- मराठवाड्यातील व्यक्तिला मुख्यमंत्रीपद मिळालेच पाहिजे, जायकवाडी धरण, लोअर दुधना, विष्णुपूरी प्रकल्प पूर्ण करावेत, ब्रॉडगेज रेल्वे, हायकोर्ट अशा अनेक मागण्या असलेले 1974 सालच्या मराठवाडा विकास आंदोलनाचे युवा नेतृत्व
- 1983 ला मुख्यमंत्री बदलण्यात प्रमुख भूमिका निभावणारे वसमतचे तरुण आमदार
- 2 फेब्रुवारी 1983 मध्ये स्वतःच्या राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार) शपथेनंतर बजाज कंपनी वाळूजला आणणे, IGTR, CIPET, CEDT, MCED इ. रचनात्मक कार्ये छ. संभाजीनगरसाठी (मराठवाड्यासाठी) करणारे
- मा.विधानसभा अध्यक्ष वि.स.पागे यांनी रोजगार हमी योजना मंत्री म्हणून केलेल्या कार्याची प्रशंसा मिळविलेले मंत्री
- अमरावती विद्यापीठ, महसूल कार्यालय, म.न.पा., IGP Office सुरुवात इत्यादी कार्ये करणारे अमरावती व बुलढाणा जिल्ह्यांचे पालकमंत्री
- देशाची पॉलिसी बदलून घेऊन, देशाचा पहिला सहकारी खत कारखाना जितूर येथे काढणारे
- हजिरा (गुजरात) - मराठवाडा - विदर्भ - ओडीसा गॅस पाईपलाईन प्रकल्प पुर्णत्वासाठी प्रयत्नरत विकासपुरुष
- पाच वेगवेगळ्या मतदारसंघात यशस्वीपणे निवडणूक लढविणारे असामान्य साहसी नेतृत्व
- असंख्य लोकांना नौकऱ्या लावणारे, अनेकांना आमदार बनवणारे लोकनेते

पंढरपुर वारीत वेळापूर येथील संत ज्ञानेश्वर माऊली पादुकांच्या अभिषेकाचा मानकरी परिवार

🌐 [www.Dudhgaonkar.in](http://www.Dudhgaonkar.in)



## परभणी आणि हिंगोली या दोन जिल्ह्यांच्या समाजकारणातील ऋषितुल्य व्यक्तिमत्त्व

- 1971-74 • “मराठवाडा कृषि विद्यापीठ परभणीत व्हावे” आंदोलन तसेच मराठवाडा विकास आंदोलनाचे प्रमुख युवा नेतृत्व
- 1980 • जीवनातील पहिल्या निवडणुकीसाठी थेट लोकसभा उमेदवारी मिळविलेले नेतृत्व
- वसमत मतदारसंघाचे आमदार झाले. निधी अभावी रखडलेले पाथरी आणि पुर्णा सहकारी साखर कारखाने निधी मिळवून देऊन सुरु केले.
- 1983 • राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार) - निष्कलंक कर्तृत्व
  - अमरावती आणि बुलढाणा जिल्ह्याचे तत्कालिन पालकमंत्री
- संस्थापक अध्यक्ष - ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ, परभणी ([www.Dnyanopasak.in](http://www.Dnyanopasak.in))
- आजतागायत 50,000 परिवारांना गुणवत्तापूर्ण शिक्षण देणारी संस्था
- 1985 • जितूर मतदारसंघाचे आमदार झाले
- 1986 • हाजिरा गॅस पाईपलाईन : हाजिरा (गुजरात) - परभणी - नागपुर - पॅराव्दिप (ओरीसा) पर्यंत 1550 कि.मी. लांबीच्या गॅस पाईपलाईन प्रकल्पाच्या मंजूरीसाठी पाठपुरावा करणारे दुरदर्शी नेता
  - खत कारखान्यांचे जाळे, प्लास्टिक उद्योग, गॅस पाईपलाईन यांच्या उभारणीद्वारे मराठवाडा आणि विदर्भातील 25 लाख प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार निर्मितीची क्षमता असलेला प्रकल्प
- 1987 • अध्यक्ष - महाराष्ट्र राज्य मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड
- 1990 • पाथरी विधानसभा निवडणुकीत अटीतटीची लढत दिली
- देशाचे धोरण बदलवून घेऊन भारताचा पहिला सहकारी खत कारखाना पॅफको (SSF) उभारणारे (1990's)
- परभणी जिल्हा मध्यवर्ती बँक, अनेक सरकारी संस्था, ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ, मुंबई मार्केट कमिटी, मार्केटिंग फेडरेशन - यांसारख्या संस्थांमध्ये असंख्य व्यक्तींना नौकरी लावण्यात निर्णायक भूमिका असणारे
- 2009 • पंधराव्या लोकसभेचे सदस्य (संसदेत सर्वाधिक उपस्थिती आणि सक्रिय योगदान)
- 2014 • मोदी लाट दिसत असतानाही तत्वनिष्ठता म्हणून खासदारकीस नकार दिला याचे मुख्य कारण म्हणजे शिवसेना पक्षप्रमुखांचा स्वभाव (या कारणामुळे पुढे सन 2022 मध्ये महाराष्ट्राचा मुख्यमंत्री बदलला गेला)
- 2019 • लोकसभा आणि विधानसभा निवडणुकांत निर्णायक भूमिका



### सौ. संध्या गणेशराव दुधगांवकर (पीएच.डी. प्राणीशास्त्र 1981)

- 2007 • शेतीनिष्ठ व्यक्ति. भोगाव देवी, जितूर येथील 100 एकराच्या तलावाचे पुर्नरूज्वन करणाऱ्या टीमच्या प्रमुख सचिव : ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ, परभणी
- निवृत्त प्राचार्या : ज्ञानोपासक महाविद्यालय, परभणी
- 2022 • जलदुर्गा गौरव 2022, पुणे-संस्कार भारती आणि रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3131 द्वारे सन्मानित



स्वातंत्र्य सैनिक  
स्व. तानुबाई ज्ञानोबाबाव दुधगांवकर  
(बापूसाहेब) यांची आज्ञी



स्व. नागोराव ज्ञानोबाबाव दुधगांवकर  
(बापूसाहेब यांचे वडील)



स्व. राजाई नागोराव दुधगांवकर  
(बापूसाहेब यांच्या मोठ्या आई)



स्व. लक्ष्मीबाई नागोराव दुधगांवकर  
(बापूसाहेब यांच्या आई)



कै. प्रयागबाई बापूराव निकम राळेकर  
सेलू  
जि. परभणी, महाराष्ट्र



कै. रुक्मिणीबाई उत्तमराव शेजळ  
सुर्यवंशी आडगावकर, माजलगाव  
जि. बीड, महाराष्ट्र



कै. लिबाजीराव नागोराव दुधगांवकर  
अध्यक्ष, PDCC बँक  
(1970 - 1987)



कै. अंबादासराव नागोराव दुधगांवकर



कै. रावसाहेब नागोराव दुधगांवकर

बापूसाहेब यांच्या मोठ्या बहिणी

बापूसाहेब यांचे मोठे भाऊ

## दुधगांवकर परिवाराचे लोकशाही करिता योगदान

- 1940's - मराठवाडा मुक्तिसंग्राम योगदान
- 1962 - उपाध्यक्ष, जिल्हा परिषद परभणी
- 1970 ते 1987 - अध्यक्ष, परभणी जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँक
- 1993 - अध्यक्ष, जिल्हा परिषद परभणी
- निवडणुकांबाबत निर्णायक योगदान :  
लोकसभा - 1977, 1980, 1996, 2009, 2019  
विधानसभा - 1980, 1985, 1990, 1994 (MLC),  
1995, 2004 (प्रत्येकवेळी वेगळ्या मतदार संघातून लढत)

## मराठवाड्याच्या राजकीय इतिहासातील एक सुवर्ण अध्याय !

### अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिदेशाही राऊत)

- मराठवाड्याचा व्यक्ति पहिल्यांदा महाराष्ट्राचा मुख्यमंत्री झाला पाहिजे ही यशस्वी मागणी करणारे सन 1974 च्या मराठवाडा विकास आंदोलनाचे एक युवा नेतृत्व
- सन 1983 मध्ये महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री बदलण्यात प्रमुख भूमिका निभावणारे तरुण आमदार
- मराठवाड्यातील फक्त छ. संभाजीनगर जिल्हा मध्यम विकसित स्थितीत आहे, याचे श्रेय तिथे असणाऱ्या बजाज कारखान्याला दिले जाते. हा कारखाना शहरात यावा हि संकल्पना व आमंत्रण देण्याचे कार्य करणारे प्रमुख मंत्री
- परभणी जिल्हा मध्यवर्ती बँक, अनेक सरकारी संस्था, मुंबई मार्केट कमिटी, मार्केटिंग फेडरेशन, ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ यांसारख्या संस्थांमध्ये असंख्य व्यक्तींना नौकरी लावण्यात निर्णायक भूमिका असणारे
- अनेक सहकारी कारखाने उभारणारे, सिंचन, रेल्वे, शिक्षण, उद्योग इ. मुलभूत विषयांवर महत्वपूर्ण योगदान देणारे
- वेगवेगळ्या समाजातील अनेक कार्यकर्त्यांना आमदार बनविणारे चारित्र्य संपन्न लोकनेता



## काही सन्माननिय साथीदारांच्या शब्दातले बापूसाहेब...!

मराठवाड्याचे कर्मवीर : अॅड. गणेशराव दुधगांवकर (बापूसाहेब)

श्री. भिमराव हटकर, नांदेड

“राष्ट्रीय सरासरीपेक्षा जवळपास दीडपटीने जास्त प्रश्न बापूसाहेबांनी सभागृहात विचारून जनतेचा आवाज शासनकर्त्यांपर्यंत पोहचविला आहे.”

बापूसाहेबांनी सभागृहात मांडलेले प्रश्न :

1. दुष्काळ व टंचाई परिस्थितीच्या पार्श्वभूमीवर शेतकऱ्यांना वाजवी किंमतीत बी-बियाणे व खत पुरवठा करावा. (दि.19-08-2010)
2. नवीन होणाऱ्या भूसंपादन कायदा 2011 मध्ये शेतकऱ्यांना उचित मावेजा मिळावा व त्यांचे आर्थिक हित जोपासले जावे.
3. 2009 मध्ये झालेल्या अतिवृष्टीमुळे व गोदावरी नदीच्या पुरामूळे नुकसान झालेल्या शेतकऱ्यांना व इतर पिडीतांना आर्थिक सहाय्य देण्यात यावे. (दि.09-12-2009)
4. परभणी येथील वसंतराव नाईक कृषी विद्यापीठात मेगा फुड पार्कची उभारणी करावी. (दि.10-08-2010)
5. राज्यातील धनगर समाजाला अनुसूचित जमाती प्रवर्गात समाविष्ट करून त्यांना त्या प्रवर्गाच्या सर्व सोयी सवलती द्याव्यात (दि. 5-12-2012)
6. केंद्रिय शिक्षण संस्था (प्रवेशातील आरक्षण) दुरुस्ती विधेयक 2020 वरील चर्चेत सहभागी होऊन आरक्षणाच्या बाजूने विचार मांडले. (दि.16-05-2012)
7. मेहकर तालुक्यातील लोणार सरोवराला राष्ट्रीय पर्यटनाचा दर्जा देऊन त्याचा विकास करण्यात यावा. (दि.27-07-2009)
8. अतिवृष्टीमुळे आणि पुरपरिस्थिती उद्भवलेल्या डेंग्यू, मलेरिया, कावीळ, चिकन गुणिया इत्यादी रोगराईने त्रस्त जनतेला केंद्राने वैद्यकीय मदतीचे पॅकेज द्यावे. (दि.30-11-2010)
9. नांदेड ते पैठण हा राष्ट्रीय महामार्ग 220 करावा. (दि.20-12-2011)
10. परभणी जिल्ह्यातून जाणारा राष्ट्रीय महामार्ग क्रमांक 222 हा चौपटरी करावा. (दि.22-08-2012)

बापूसाहेबांनी लोकसभेत विचारलेल्या 418 प्रश्नांपैकी वरील दहा प्रश्न आणि त्यांचे स्वरूप पाहिले तर प्रत्येक प्रश्नातून बापूसाहेबांची सामाजिक जाण, बांधिलकी आणि विकासाची दृष्टी अशा अनेक बाबी त्यातून दृष्टीपथात येतात. लोकसभा असो की विधानसभा प्रश्न विचारणे चर्चेत भाग घेणे इत्यादी संसदीय आयुधांचा वापर बापूसाहेबांनी जनसामान्यांच्या प्रश्नांना वाचा फोडण्यासाठी केल्याचे दिसून येते.



## सामाजिक जाणीवा जपणारे अॅड. गणेशराव दुधगांवकर

श्री. अशोक पाटील (माजी मंत्री, केज, जि. बीड)

माजी खासदार अॅड. गणेशराव दुधगांवकर हे 9 सप्टेंबरला 75 व्या वर्षात पदार्पण करीत आहेत. अॅड. दुधगांवकर हे अत्यंत शांत, संयमी, हुशार, संवेदनशील, जाणीव असणारे व्यक्तिमत्त्व. सर्वसामान्यांचे हित पाहणारे तसेच राजकीय परिघाबाहेर समाजजीवनाच्या अनेक क्षेत्रात सातत्याने काम करणारे नेते म्हणून त्यांची ओळख आहे. उद्योग, सहकार क्षेत्रापर्यंत अशा अनेक विविध क्षेत्रांमध्ये त्यांनी महत्त्वपूर्ण योगदान दिलेले आहे.

अॅड. दुधगांवकर यांना विद्यार्थी दशेपासूनच समाजसेवेचा छंद होता. औरंगाबाद येथे विधीचे शिक्षण घेत असताना ते मराठवाडा विद्यापीठ विद्यार्थी संघ या संघटनेशी जोडले गेले. या संघटनेच्या माध्यमातून त्यांनी अनेक विद्यार्थी चळवळी चालविल्या आहेत. मग ते परभणी येथील कृषी विद्यापीठाचे आंदोलन असो की, मराठवाडा विकासाचे आंदोलन, या आंदोलनांत ते हिरीरीने पुढाकार घेत असत. संघटनेचे काम करीत असताना त्यांनी कधीही प्रसिद्धीचा हव्यास बाळगला नाही किंवा संघटनेमध्ये पद मिळाले पाहिजे, याचा कधीही आग्रह धरला नाही.

अॅड. दुधगांवकर यांनी विधीचे शिक्षण पूर्ण केल्यानंतर खऱ्या अर्थाने परभणी येथे येऊन सामाजिक कार्याला सु रुवात केली. शेतकऱ्यांची, कष्टकरी जनतेचे कामे करीत असतानाच त्यांना महाराष्ट्र राज्य पणन महासंघावरती संचालक म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. ही संधी मिळाल्यानंतर त्यांनी सहकार क्षेत्रात अतिशय उल्लेखनीय कार्य केले. 1980 च्या विधानसभेच्या सार्वत्रिक निवडणुकीत काँग्रेस पक्षाने वसमत मतदारसंघातून उमेदवारी दिली. या निवडणुकीत लोकांनी प्रचंड मते देऊन विधानसभेमध्ये काम करण्याची संधी दिली. अॅड. दुधगांवकर यांच्या समाजाभिमुख कामाची दखल घेत वसंतदादा पाटील यांच्या मंत्रिमंडळात तंत्र शिक्षण व हमी योजना व रोजगार या खात्याचे मंत्री म्हणून काम करण्याची संधी त्यांना प्राप्त झाली. त्यांनी रोजगार हमी योजनेच्या माध्यमातून अनेक लोकोपयोगी योजना महाराष्ट्रात राबविल्या. या कामाची दखल पक्षश्रेणींनी घेऊन त्यांना 1985 च्या विधानसभेच्या सार्वत्रिक निवडणुकीत काँग्रेस पक्षाने जिंतूर मतदारसंघातून उमेदवारी दिली. या निवडणुकीत ते प्रचंड मतांनी निवडून आले.

अॅड. दुधगांवकर विधानसभेत व राज्यपातळीवर नेतृत्व करीत असताना त्यांनी आपल्या कार्यकर्त्यांना आणि युवक वर्गांना सामाजिक क्षेत्रात, राजकीय क्षेत्रात संधी उपलब्ध करून दिल्या व त्यांच्यामध्ये नेतृत्वाचे गुण विकसित व्हावे यासाठी सतत प्रयत्नशील राहिले.

तसे पाहता अॅड. दुधगांवकर विद्यार्थीदशेत सतत खाजगी चर्चेत बोलत असताना म्हणत असे की, लोकसभेमध्ये प्रतिनिधी म्हणून काम करण्याची संधी मिळावी, ही संधी 2009 च्या लोकसभेच्या सार्वत्रिक निवडणुकीच्या रूपाने त्यांना प्राप्त झाली.

परभणी जिल्ह्याचे खासदार असताना अॅड. दुधगांवकर यांनी अनेक लोकोपयोगी कामे केली. केंद्र सरकारच्या कोळसे, खाण आणि पोलाद या स्थायी समितीचा सदस्य होण्याचा बहुमान मिळविला. संसदीय कामकाजात सर्वाधिक उपस्थितीचा विक्रम त्यांनी आपल्या नावावर केला. याच काळात 'अमेरिकन कॅलिफोर्निया बेव्हरीज बिअर' कंपनीने गणपतीचे लेबल बाटलीला लावले होते, हा हिंदू धर्माचा अपमान असल्याचा भावनिक मुद्दा त्यांनी सर्वप्रथम लोकसभेच्या सभागृहात मांडला. परभणी नगरपालिकेला महानगरपालिकेचा दर्जा मिळावा यासाठी करण्यात आलेल्या धरणे आंदोलनाचे नेतृत्व केले. तसेच महागाईच्या विरोधातील 'जोडे मारो' आंदोलनाचे नेतृत्वही त्यांनी केले. 2011 च्या हिवाळी अधिवेशनात कापूस

खरेदी प्रकरणी झालेल्या धरणे आंदोलनात महत्त्वाची भूमिका त्यांनी निभावली.

बेळगाव, निपाणी, कारवार या मराठी लोकांच्या हक्कांसाठी झालेल्या धरणे आंदोलनात सहभाग घेतला. अल्पसंख्यांक बांधवांसाठी शादीखाना उभारणीसाठी निधी मंजूर करुन घेणे, सिद्धेश्वर धरणाच्या वाढीसाठी राज्य व केंद्र सरकारकडे पाठपुरावा करणे तसेच मराठवाड्याच्या विकासासाठी शासनाने नेमलेल्या केळकर समितीला महत्त्वाच्या सूचना देणे, मराठवाड्यात हाजीरा ते नांदेड गॅस पाईप लाईन मंजूर करावी म्हणून बाजू मांडली.

एवढेच नव्हे तर परभणीच्या विकास कामात त्यांचे अमूल्य योगदान राहिले. वसमत रोड राष्ट्रीय महामार्गाच्या रुंदीकरणाच्या कामासाठी यशस्वी पाठपुरावा केला. याचबरोबर शैक्षणिक संस्थांच्या उभारणीत त्यांचे बहुमूल्य योगदान राहिले असून त्यांनी परभणी जिल्ह्यामध्ये ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळाच्या माध्यमातून अनेक शाळा, महाविद्यालय सुरु केली. त्यामुळे शहरी विद्यार्थ्यांबरोबरच ग्रामीण भागातील विद्यार्थ्यांना शिक्षणाची संधी उपलब्ध झाली. त्यांचे अनेक विद्यार्थी राज्य, राष्ट्रीय पातळीवर अनेक क्षेत्रात प्रतिनिधित्व करीत आहेत.

अॅड. दुधगांवकर यांना सहकार क्षेत्रात महाराष्ट्र राज्य को. ऑप. कापूस उत्पादन समिती, इफको, नाफेड, कृषक भारती को. ऑप. जि. नवी दिल्ली यांचे संचालक म्हणून काम करण्याची संधी प्राप्त झाली. याचबरोबर त्यांना महाराष्ट्र राज्य पणन महासंघाचे अध्यक्ष म्हणून काम करता आले. परभणी जिल्ह्यातील शेतकऱ्यांना खते उपलब्ध व्हावीत म्हणून दाणेदार मिश्र खत कारखाना जिंतूर तालुक्यात सुरु केला होता. तसेच सहकारी साखर कारखान्यांना शक्य होईल तेवढी मदत करण्याचा प्रयत्न केला.

अॅड. दुधगांवकर आज एवढ्या प्रदीर्घ राजकीय, सामाजिक प्रवासानंतरदेखील सर्वसामान्य जनतेशी त्यांचे संबंध अतिशय स्नेहाचे असून लोकांच्या सर्व अडीअडचणी सोडविण्यासाठी आजही सतत प्रयत्नशील असतात. त्यांचा आणि माझा विद्यार्थीदशेपासून युवक संघटनेच्या माध्यमातून अतिशय जवळचा संबंध आलेला असून त्यांचे आम्हाला सतत सहकार्य मिळालेले आहे व मिळत आहे.



## राज्याच्या राजकारणाला कलाटणी देणारा आणि नेतृत्व ठरविणारा नेता

श्री. मुस्ताक अहेमद

संपादक, उर्दू दैनिक मुकद्दस, औरंगाबाद

माजी अध्यक्ष, शहर जिल्हा राष्ट्रवादी काँग्रेस, औरंगाबाद

मराठवाड्याच्या भूमित जन्मलेले आणि राज्याच्या राजकारणात एकेकाळी आपला ठसा उमटविणारे माजी मंत्री गणेशराव दुधगांवकर यांनी वयाची पंचाहत्तर वर्षे पूर्ण केली. दूधगावकर यांचे पंचाहत्तर वर्षे पूर्ण होत आहेत त्याचा मला आनंद होत आहे. ते दीर्घकाळापासून समाजकारणात राहिलेली व्यक्ती आहेत.

आज पाठीमागे वळून बघितले तर त्यांच्या कार्यकर्तृत्वाचा ठसा उमटलेला दिसतो. त्यांनी निर्माण केलेल्या संस्था ज्याद्वारे अनेकांना रोजगार तर मिळालाच परंतु भावी पिढीला ज्ञानाचा मार्ग दाखविला. यातुन अनेक पिढ्या निर्माण झाल्या. अनेकांचे संसार थाटले गेले. शेतीद्वारे समृद्धी आली. मराठवाड्यात सर्वाधिक

सिंचन क्षेत्र असलेला जिल्हा म्हणून परभणीचा उल्लेख होतो. त्याचे श्रेय गणेशराव दुधगांवकर यांना द्यावे लागेल. त्यावेळच्या काँग्रेसच्या राजकारणात अत्यंत महत्वाचे स्थान दुधगावकरांना होते. महाराष्ट्राचे नेतृत्व ठरविणाऱ्यांपैकी एक म्हणजे बापूसाहेब होते.

महाराष्ट्राच्या राजकारणाची दिशा ठरविण्यात बापूसाहेबांचा सिंहाचा वाटा असायचा. राज्यात बाबासाहेब भोसले मुख्यमंत्री झाले तेव्हा त्यांना हटविण्यासाठी बापूसाहेबांनी कंबर कसली होती. अखेर बाबासाहेब भोसले यांना वर्षभरात मुख्यमंत्री पदावरून पायउतार व्हावे लागले. मुख्यमंत्री आदिक झाले नाही. वसंतदादा पाटील मुख्यमंत्री झाले आणि आदिक यांना उपमुख्यमंत्री करण्यात आले होते. त्यावेळी बापूसाहेबांना मंत्रीमंडळात घेण्यात आले होते. अशाप्रकारे राज्याच्या राजकारणात त्यांचा दबदबा होता.

औरंगाबाद विधानसभा मतदारसंघातून 1980 मध्ये अब्दुल अजिम काँग्रेसकडून निवडून आले होते. मी अजिम यांचा कार्यकर्ता होतो. त्यावेळी दुधगांवकर वसमत मतदारसंघातून विजयी झाले होते. दुधगावकरांचं काँग्रेस हायकमांडजवळ वजन होते. राज्याच्या राजकारणात त्यांचा दबदबा होता. मी व इतर पदाधिकारी मिळून दुधगावकरांना भेटलो आणि अब्दुल अजिम यांना आपल्यासोबत मंत्रीमंडळात काम करण्याची संधी द्यावी, अशी विनंती केली. दुधगावकरांना बापूसाहेब या टोपन नावाने ओळखले जाते. एकदा त्यांनी शब्द दिला की काम झाले म्हणून समजा. अजिम यांना मंत्री केल्यास मराठवाड्याच्या विकासाचे प्रश्न धसास लावता येतील, असे त्यांना समजावले. यावर बापूसाहेबांनी आम्हाला शब्द दिला आणि त्याप्रमाणे कामही झाले. अब्दुल अजिम बापूसाहेबांसोबत मंत्री झाले !!

अल्पसंख्यांक समुदायाच्या हितासाठी त्यांनी दिलेला लढा अविस्मरणीय आहे. मराठवाड्यातील अल्पसंख्यांकांच्या हितासाठी त्यांनी नेहमीच प्राधान्य दिले. परभणी येथील सर्व विधानसभा मतदारसंघांची उमेदवारी 1985 मध्ये दुधगांवकर यांच्या सांगण्यावरून देण्यात आली होती. त्यांनी सर्व जणांना निवडून आणल्याने त्यांचे पक्षात वजन अजूनच वाढून गेले होते.

राजकारणात युवकांना संधी देण्यात त्यांचा हातखंडा होता. तरुणांच्या बळावरच त्यांचे राजकारण होते. डॉ.शिंग नेता म्हणून ते सर्वश्रुत होते. राजकारणात त्यांनी कधी आपल्या फायद्याचा विचार केला नाही. सुरेश वरपुडकर यांना काँग्रेसने विधानसभेत उमेदवारी दिली नाही. तेव्हा बापूसाहेबांनी त्यांच्यासाठी खूप प्रयत्न केले, असे असताना राज्यातील राजकारणात बापूसाहेबांचे काँग्रेस श्रेष्ठींनी ऐकले नाही. तेव्हा काँग्रेसचे पदाधिकारी असताना त्यांनी सुरेश वरपुडकर यांना शिंगणापूर विधानसभा मतदारसंघातून अपक्ष उभे केले आणि निवडून आणले. काँग्रेस पक्षश्रेष्ठींनी त्यांना कारणे दाखवा नोटीस बजावली. त्यांनी राजकारणात स्वतःच्या स्वार्थासाठी काही केले नाही. कार्यकर्त्यांसाठी सदैव तयार राहायचे आणि प्रसंगी कुठल्याही थरावर जाऊन मदत करायचे.

स्व. शंकरराव चव्हाण यांना मुख्यमंत्री बनविण्यात बापूसाहेब अग्रेसर होते. मराठवाड्याच्या वाट्याला मुख्यमंत्रीपद यावे यासाठी पक्षाच्या स्तरावर त्यांनी भूमिका लावून धरली होती. त्याचा परिपाक स्व. शंकरराव चव्हाण यांना मुख्यमंत्रीपद मिळाले.

बापूसाहेबांनी त्यांच्या कारकिर्दीत युवकांना उभे केले. अल्पसंख्यांकांचे प्रश्न धसास लावले. सर्व समाज, जात, धर्म, पंथ यांना खऱ्या अर्थाने सोबत घेऊन चालणारा नेता म्हणजे गणेशराव दुधगांवकर आहेत. पंच्याहत्तरांनिमित्त त्यांना खूप खूप शुभेच्छा !



## कर्मयोगी : गणेशराव दुधगांवकर

श्री. साहेबराव लबडे (निवृत्त सहायक पोलिस आयुक्त, पुणे)

माननीय गणेशराव उपाख्य बापूसाहेब दुधगांवकर हे आमचे जवळचे नातेवाईक. त्यामुळे लहानपणापासून त्यांचा परिचय होताच. परंतु त्यांचा खरा परिचय 1965-66 साली मी शिवाजी महाविद्यालय, परभणी येथे कॉलेजसाठी गेल्यानंतरच झाला. बापूसाहेब सायन्स साईडला होते. तर मी आर्ट्सला. बापूसाहेब त्यांच्या स्वभावामुळे विद्यार्थी प्रिय होते. त्यांचे व्यक्तिमत्त्व छाप पाडणारे होते. त्यामुळे इतर विद्यार्थी त्यांच्या पाठीमागे सतत असत. बोलणे करारी व ठाम. धाडसी वृत्ती व अचूक निर्णय क्षमता यामुळे त्यांनी विद्यार्थी वर्गावर चांगली छाप पाडली होती.

कॉलेजच्या जनरल सेक्रेटरीच्या निवडणुकीस बापूसाहेब उभे राहिले त्यावेळी मी सावलीसारखा त्यांच्याबरोबर होतो. त्यामुळे त्यांच्या स्वभावाचे अनेक पैलू मला जाणवले व दिसून आले. दिलदार वृत्ती, शांत व विचारी स्वभाव, मुद्देसूद विचारसरणी व आक्रमक मांडणी यामुळे त्यांची मते पटवून देण्यात ते यशस्वी होत. ही निवडणूकही त्यांच्या भावी आयुष्याच्या चित्रपटाचे जणू ट्रेलर होते. निवडणूक अटीतटीची होती. जाहिरातीपासून सर्व प्रसिद्धीचे मार्ग चोखाळले जात होते. विरोधकांनी प्रयत्नाची शर्थ केली. पण जिंकले बापूसाहेबच!! यातूनच त्यांच्या आयुष्याचा भविष्यातील मार्ग दृगोच्चर झाला.

बापूसाहेबांनी शिवाजी महाविद्यालयातून पदवी परीक्षा पूर्ण केली. परंतु त्यांच्यातील ज्ञानपिपासुवृत्ती त्यांना तिथे थांबू देणार नव्हती. पुढे कायद्याचे शिक्षण घेऊन ते एल.एल.बी. झाले. तेवढ्यावरही न थांबता त्यांनी पोस्ट ग्रॅज्युएशन करून एल.एल.एम.ची पदवीही संपादन केली. ज्या क्षेत्राचा सर्वसामान्यांना पदोपदी संबंध येतो त्या वकिली-व्यवसायास त्यांनी सुरुवात केली व त्यात उत्तम यशही मिळवले. त्यानंतर त्यांना राजकारणातील संधी खुणावू लागल्या.

बापूसाहेबांसाठी राजकारण नवीन नव्हते. ते यांच्या घरातच होते. त्यांचे मोठे बंधू लिंबाजीराव उर्फ दादा जिल्हा परिषदेचे अध्यक्ष होते. सध्याच्या जगात राजकारण हा झटपट श्रीमंत होण्याचा मार्ग म्हणून ओळखला जातो. पण बापूसाहेब त्या मार्गातले नव्हते. ते खानदानांनी श्रीमंत होते व पैसे मिळवणे हे त्यांच्या आयुष्याचे ध्येय त्यावेळीही नव्हते आणि नंतरही आयुष्यात कधीही नव्हते. त्यामुळे राजकारणातील त्यांचा प्रवेश हा सहज अपेक्षित होता. प्रवेश जरी सहज, सुलभ झाला तरी राजकारणात टिकून राहणे आणि यशस्वी होणे हे त्या व्यक्तीच्या अंगभूत गुणावर, लोकप्रियतेवर आणि लोकांचे प्रश्न सोडवण्याच्या योग्यतेवर अवलंबून असते. बापूसाहेबांचे व्यक्तिमत्त्व, लोकांचे प्रश्न सोडवण्याची तळमळ आणि सुसंस्कृत वारसा यामुळे बापूसाहेब या क्षेत्रातही अपेक्षेप्रमाणे यशस्वी झाले. सर्वात महत्त्वाचे म्हणजे निस्पृहवृत्ती. कोणाकडून कसल्याही मोबदल्याची अपेक्षा नसल्याने निस्पृह वृत्तीतून केलेल्या कामामुळे त्यांना जनतेचे पाठबळ नेहमीच मिळत गेले. निवडणुकीपुरते पक्षभेद असले तरी निवडणुकीनंतर ते कोण कोणत्या पक्षाचा याचा विचार न करता लोकांची कामे करत. तसेच केलेल्या कामाचे श्रेय मिळावे याची त्यांनी कधीही काळजी केली नाही. न केलेल्या कामांचे श्रेय लाटण्याच्या सध्याच्या युगात बापूसाहेब यांच्यासारखा राजकारणी मिळणे कठीणच. त्यांच्या या अंगभूत गुणामुळे लोकांनी त्यांना सतत भरभरून पाठिंबा दिला व ते आमदार, खासदार, मंत्री अशा यशाच्या पायऱ्या चढतच गेले.

Politics is a dirty game असं म्हटलं जातं. त्याचा अनुभवही बापूसाहेबांना आला. त्यांनी ज्यांना राजकारणात बोट धरून चालायला शिकवले, ज्यांच्यावर डोळे झाकून विश्वास टाकला त्यांनीच बापूसाहेबांच्या पाठीत खंजीर खुपसण्याचा प्रयत्न केला. बापूसाहेबांचा स्वभाव खुनशी नसल्याने व सूड घेणे ही त्यांची प्रवृत्ती



नसल्याने त्यांनी या लोकांना माफ करून आपले काम सुरु ठेवले. 'ऐकावे जनाचे व करावे मनाचे' असा स्वभाव असल्याने दुसऱ्याच्या सांगण्यावरून बापूसाहेबांनी कोणाला जवळही केले नाही अथवा कोणाला दूरही लोटले नाही. तसेच झाल्या परिणामाची जबाबदारी दुसऱ्यावर ढकलली नाही. विचारसरणीशी मतभेद होत आहेत असे ज्यावेळी दिसले तेव्हा त्यांनी पक्षांतरही केले. त्यांनी इतकी मोठी मानमरातबाची व सत्तेची पदे भूषवली, परंतु ती सत्ता त्यांच्या कधीही डोक्यात गेली नाही. त्यांचे सहकाऱ्यांशी व कार्यकर्त्यांशी वर्तन कधीच बदलले नाही. ते स्वतः एक हाडाचे कार्यकर्ते असल्याने तळागाळातल्या व्यक्तींपासून उच्च पदस्थपर्यंतच्या व्यक्तीपर्यंत त्यांचे वागणे साधर्म्यपूर्ण असे.

'प्रत्येक यशस्वी पुरुषामागे एका स्त्रीचा हात असतो' असे म्हणतात. बापूसाहेबांच्या सहधर्मचारिणी सौ. संध्याताई त्यांचे उत्तम उदाहरण आहेत. बापूसाहेब राजकारणात व्यस्त असताना संध्याताईंनी घरची घडी व्यवस्थित बसवली. मुलांचे शिक्षण व शेती या दोन्ही गोष्टी उत्तम प्रकारे सांभाळल्या. शिक्षण क्षेत्रातील सर्वोच्च पदवी मिळवून त्यांनी आपली बुद्धीची झेप सिद्ध केली आहे. तसेच ज्ञानोपासक महाविद्यालयाच्या प्राचार्या म्हणूनही त्यांनी उत्तम कामगिरी करून एक उत्कृष्ट प्रशासक असल्याचे दाखवून दिले आहे. बापूसाहेब यांना त्यांची आयुष्यभर उत्तम साथ मिळाली आहे. प्रपंचाची ही दोन्ही चाके एक विचाराने एकाच सूरलयीत चालल्याने त्यांचा प्रपंचही उत्तम झाला आहे.

मुलगा समीर व मुलगी मधुरा अशी दोन गुणी, हुशार व आज्ञाधारक मुले बापूसाहेबांना लाभली आहेत. आई व वडील दोघेही हुशार व कर्तबगार. त्यामुळे 'शुद्ध बिजा पोटी फळे रसाळ गोमटी' या उक्तीप्रमाणे ही दोन्ही मुलेही हुशार निघून Scholarship वर अभ्यासासाठी अमेरिकेला गेली व उच्च विद्याविभूषित झाली. समीर आता परत भारतात आला असून आपल्या बुद्धी व ज्ञानाचा उपयोग आपल्या देशाला व्हावा अशा विचारसरणीचा आहे. बापूसाहेबांच्या मार्गदर्शनाखाली तोही उत्तम प्रगती करतो आहे.

बापूसाहेब हे एक कर्मयोगी आहेत. श्रीमद्भगवद्गीतेत सांगितलेला कर्मयोग जो फळाची आशा न धरता कर्म करायला सांगतो तो कर्मयोग बापूसाहेब आयुष्यभर जगले आहेत. त्यामुळे कर्मयोगी हे त्यांच्या नावामागचे विशेषण हे योग्यच आहे.

निस्वार्थी, निष्कलंक आयुष्य जगलेल्या बापूसाहेब यांचे माझ्या आयुष्यातील महत्त्व अनन्यसाधारण आहे. कॉलेजमधील एक मित्र, एक नातेवाईक या पलीकडे जाऊन त्यांनी माझी वेळोवेळी मदत व मार्गदर्शन केले आहे. पोलिस खात्यातील माझ्या प्रवेशाची प्रेरणा त्यांनीच मला दिली व पुढेही आयुष्यभर दीपस्तंभ बनून मला मार्गदर्शन केले. त्यांच्या या अमूल्य सहकार्य व मार्गदर्शनाचे माझ्यावर कायमच ऋण राहिल व त्या ऋणातच राहणे पसंत करीन.

बापूसाहेब व माझे मित्रत्वाचे संबंध आजही जीवाभावाचे आहेत. बापूसाहेब जरी मला मित्रत्वाच्या बरोबरीच्या नात्याने वागवत असले तरी त्यांच्या प्रति माझे मनात एक आंतरिक आदरभाव असून तो कायमच राहणार आहे. विविध कौटुंबिक कार्यक्रमानिमित्त आमच्या वारंवार भेटी होत असतात. आमची दोन्ही कुटुंबे एकमेकांना चांगली परिचित असून एकमेकांकडे येणेजाणे सुरुच असते. गावी परभणीला जाता येता माझा हमखास मुकाम बापूसाहेबांकडे असतो. छान दिलखुलास गप्पा होतात. आमच्या मैत्रीने सुद्धा आता साठी गाठली आहे. ती तशीच शेवटपर्यंत राहणार आहे.

बापूसाहेब यांच्या अमृत महोत्सवानिमित्त मी त्यांना सादर प्रणाम करतो व त्यांना दीर्घायुष्य लाभो, त्यांचे उर्वरित आयुष्य निरामय होवो, त्यांचे अखंड मार्गदर्शन आम्हा सर्वांना अविरत लाभो अशी ईश्वरचरणी प्रार्थना करतो.

**शृणुयात शरद शतः**

**प्रबरवरम शरद शतः**

**जीवेत शरद शतः**

**भुयात शरद शतः**



## ज्ञानोपासक गणेशराव दुधगांवकर

- श्री. स. सो. खंडाळकर  
विशेष प्रतिनिधी, लोकमत, औरंगाबाद

हाफ दाढी... टोकदार मिशावाला... उंचापुरा, धिप्पाड अशा व्यक्तिमत्त्वाचा धनी म्हणजे गणेशराव दुधगांवकर. एखाद्या मराठी चित्रपटात व्हिलनची भूमिका करण्याची संधी मिळाली असती तर त्याला गणेशरावांनी नक्की न्याय दिला असता. हा गमतीचा भाग सोडला तर खऱ्या अर्थानं गणेशराव दुधगांवकर हे 'हिरो' आहेत. विशेषतः शैक्षणिक क्षेत्रातील त्यांची भरीव कामगिरी बघता ते शिक्षणमहर्षीच आहेत. सहकार क्षेत्रातलं त्यांचं काम पाहता, त्यांना सहकारमहर्षी म्हटल्यास वावगं ठरू नये.

गणेशराव दुधगांवकर हे ज्ञानोपासक आहेत, हे वेगळं सांगायला नको. त्यांनी स्थापन केलेल्या शाळा, महाविद्यालये व वसतिगृहांची नावांवर सहज नजर टाकली तर याची साक्ष पटल्याशिवाय राहणार नाही. आपल्या प्राणप्रिय संस्थांना 'ज्ञानोपासक' असं नाव देणं, ही सहज घडणारी गोष्ट नव्हे. ती जाणीवपूर्वक केलेली कृती !

'ज्ञानोपासक' या शब्दात सारं काही समावलेलं आहे. हा शब्दच अर्थपूर्ण. तो पकडून गणेशराव दुधगांवकर हे जणू छत्रपती शिवाजी महाराज, महात्मा जोतिबा फुले, राजर्षी शाहू महाराज, सयाजीराव गायकवाड आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचा वारसा अधोरेखित करीत आहेत, हे स्वागताहं तर आहेच, तेवढीच अभिनंदनीय व अभिमानास्पद घटना होय. मला तर खरे गणेशराव इथं उठून दिसताहेत. याच ज्ञानोपासक गणेशराव उर्फ बापूसाहेबांचा समाजाला खरा उपयोग झाला असल्याचे दिसून येईल. त्यामुळेच त्यांच्या हातून एक नव्हे कितीतरी पिढ्या घडल्या, हे त्यांचं कार्य अतुलनीयच. म्हणूनच परभणी, जितूर, सेलू, मानवत, पाथरी हा सारा परिसर किंबहुना सारा मराठवाडा गणेशराव दुधगांवकर यांच्या कर्तृत्वाचे गीत गायल्याशिवाय राहणार नाही.

ख्यातकीर्त कवी प्रा.फ.मुं. शिंदे, प्रख्यात बासरीवादक दिवंगत प्रा. दत्ता चौगुले तसेच शिक्षणाचा कसलाही वारसा नसलेले पण फ.मुं. आणि चौगुले यांचे बोट धरून त्याकाळी एम.ए. पर्यंत शिकलेले धों.ज. गुरव यांच्या तोंडून गणेशराव दुधगांवकर यांचं नाव सतत येत असे. हेलिपिंग नेचरच्या गणेशराव यांचे किस्से ऐकावयास मिळत असत. परभणीला ही सारी मंडळी शिकायला असताना गणेशरावांचं मोलाचं सहकार्य मिळत गेलं. ही मंडळी, हे सहकार्य विसरतो म्हटलं तरी विसरू शकत नाही. ते तेवढंच खरं की फाईव्हस्टार हॉटेलमध्येही मिळणार नाही अशा धों.ज. गुरव यांच्या हातच्या खास मराठवाडी आमटीची चर्चा आजही फ.मुं. सर, डॉ. नागनाथ कोत्तापल्ले सर, प्रा. शेख शफी सर, प्रा. अजित दळवी सर आणि स्वतः गणेशराव दुधगांवकर तेवढ्याच चवीनं करतात, हे एक आगळंवेगळं वैशिष्ट्य म्हणावं लागेल.

गणेशराव दुधगांवकर यांनी राजकारणात चमकदार कामगिरी केली नसती तर नवलच. दोन टर्म आमदारकी आणि एक टर्म खासदारकी त्यांच्या वाट्याला आली. ती त्यांनी मराठवाड्याच्या विकासासाठी कारणी लावली.

देशाचं, महाराष्ट्राचं सुसंस्कृत नेतृत्व यशवंतराव चव्हाण आणि वसंतदादा पाटील हे गणेशरावांचे आदर्श. वसंतदादा पाटील यांच्या मंत्रिमंडळात तर गणेशरावांना तंत्रशिक्षण, रोजगार हमी योजना व सेवायोजन या खात्याची जबाबदारी सांभाळण्याची संधी मिळाली. या संधीचं सोनं करणार नाही, ते गणेशराव कसले... त्यांनी 45 आयटीआय, 45 टेक्निकल हायस्कूलस तसेच उदगीर आणि निलंगा येथील अभियांत्रिकी महाविद्यालयाच्या माध्यमातून जणू त्यांनी त्याकाळी मराठवाड्यात तंत्र शिक्षणाची गंगाच खेचून आणली. यात गणेशरावांच्या

दूरदृष्टीचा तर प्रत्यय येतोच. पण त्यांचं शिक्षणावरचं अतीव प्रेमही लक्षात येतं. या अर्थानंही बधितल्यास गणेशराव हे 'ज्ञानोपासक'च ठरतात.

मंत्री असताना औरंगाबादला ते अनेकदा आलेले. काँग्रेसच्या शहागंजातील गांधी भवनात आयोजित कार्यकर्त्यांच्या मेळाव्यात त्यांची भाषणं ऐकण्याची संधी मला लोकमतचा प्रतिनिधी म्हणून मिळालेली. ते मला एक सहृदयी, सामाजिक भान असलेले राजकारणी वाटले.

प्रचंड लोकसंग्रह असलेल्या या नेत्याचा राजकीय प्रवास कसाही झाला असला तरी तो खरा 'ज्ञानोपासक' आहे, चांगला माणूस आहे, चांगला मित्र आहे, हे त्यांचा शत्रूही नाकारणार नाही. या ज्ञानोपासकाला उदंड आयुष्य मिळो, त्यांच्या हातून उत्तमोत्तम चांगली कामगिरी घडो, अशा मनापासून आभाळभर शुभेच्छा...!



## स्वाभिमानी नेता : गणेशराव दुधगांवकर

श्री. गोपीकिशन दायमा

अगदी कॉलेज जीवनापासून अॅड. गणेशराव दुधगांवकर यांना राजकारणाची आवड आहे. त्यांचा मनमिळावू स्वभाव, स्मित हास्य व स्वाभिमान यामुळे अनेक मित्र परिवार त्यांच्याबरोबर जोडला गेला आहे. खरं तर स्वाभिमान बाळगून राजकारण करणे, हे अत्यंत कठीण काम आहे, पण हे अॅड. गणेशराव दुधगांवकर अगदी कुशलतेने करतात, हे त्यांचा राजकीय प्रवासाचा अभ्यास केल्यानंतर प्रकर्षाने समोर येते.

माझ्या कॉलेज जीवनापासून ते आजपर्यंत मला अॅड. गणेशराव दुधगांवकर यांच्या कार्याची जवळून ओळख आहे. यांची राजकारणात जेवढी उंची आहे किंबहुना त्यापेक्षाही अधिक उंची समाजकारणातही आहे, असे म्हटले तर वावगे होणार नाही. समाजकारण असो की, राजकारण असो हे सैद्धांतिक पातळीवर झाले पाहिजे, हा गुण त्यांच्या अंगी उत्तम आहे.

अॅड. गणेशराव दुधगांवकर यांचा महाराष्ट्राच्या राजकारणामध्ये अद्वितीय राजकारणी म्हणून उल्लेख होतो. ठामपणे उभे राहून ते राजकारण करतात. म्हणूनच समाज आपोआप पाठीशी उभा राहतो, हे त्यांच्या राजकीय शैलीतून लक्षात येते. निवडणुकीच्या सभेची व्यूहरचना ते अगदी कल्पकतेने करवून घेतात. त्यांचे सभेतील भाषण सामान्य लोकांना समजेल असेच असते. अॅड. गणेशराव दुधगांवकर हे उच्च विद्याविभूषित आहेत. पण औतावरच्या अशिक्षित शेतकऱ्यांची भाषा समजून घेण्याची खुबी त्यांच्यामध्ये बघायला मिळते.

महाराष्ट्राच्या राजकारणात अॅड. गणेशराव दुधगांवकर यांनी मंत्री पदाची शपथ घेतल्यानंतर हाजीरा गॅस पार्इपलाईन मराठवाड्यात कशी आणायची याची ब्लूप्रिंट खिशात ठेवणारा मराठवाड्यातील हा पहिला नेता. अॅड. गणेशराव दुधगांवकर यांनी अनेक विकासात्मक बाबी मतदार संघात घडवून आणल्या. त्यामुळे साहजिकच त्यांना चाहता वर्ग कधीच विसरणार नाही. ज्ञानोपासक महाविद्यालयाच्या रोपट्याचे महा वटवृक्षात रुपांतर करण्यासाठी जादू त्यांनी केली. खरे तर त्यासाठी त्यांच्या सुविद्य पत्नी डॉ. संध्याताई दुधगांवकर यांचे त्यांना मोलाचे सहकार्य लाभत आहे. अनेक कुटुंबातील सुशिक्षित मुलांना नौकरी देण्यासाठी सामाजिक भावनेतून सदैव तत्पर आहेत, हे वैशिष्ट्यपूर्ण आहे. राजकारणातील एक उत्तम कर्तव्य शैलीची पावती म्हणून समाजाने अॅड. गणेशराव दुधगांवकर यांना 'बापूसाहेब' ही पदवी बहाल केली.



## युवा नेते - गणेशराव

कै. डॉ. बापू अडकिने

मित्र कसा असावा? असे कोणी विचारले तर मी एकाच शब्दात सांगेन “गणेशरावांसारखा” मित्रत्वाची एवढी चपखल व्याख्या दुसरी होऊच शकत नाही. परिचितांनाही व्याख्या समजेल; पण अपरिचित संभ्रमात पडतील. गणेशरावांसारखा म्हणजे कसा? असे ते विचारतील त्याचा पण उलगडा दोनच शब्दात “गणेशा सारखा” आता राहिली का काही शंका? आढेवेढे घेऊन शब्दच्छल करत बसायची गरज नाही. गणेशाचे देवत्व वर्णन करण्यासाठी ऋषीमुनींनी अनेक ग्रंथ लिहिले तो किती विशाल ऱ्हदयी, प्रेमसिंधू, विघ्नहर्ता, दुःखहर्ता, सर्वांच्या मनोकामना पूर्ण करणारा, जगात आनंदाची उधळण करणारा, निसर्गाएवढा सुंदर, निर्मळ, निरागस, एवढा लोभस, की सर्वांना वंदनीय आणि हवाहवासा वाटणारा जो जगावर प्रेम करतो, जग त्याच्यापुढे नतमस्तक होते, असा सदगुणांचा पुतळा श्रीगणेश. गणेशराव गणेशासारखे म्हटले की लंबीचवडी वर्णने करायची गरजच नाही.

मुसमुसत्या जवानीत बेधुंद हुंदडायच्या काळात आमची भेट झाली. भेट आणि मैत्री या दोन वेगळ्या घटना नव्हत्याच. एकाच घावात एकजीव! मी कृषीच्या शेवटच्या वर्षात आणि गणेशराव शिवाजीत बी.ए. च्या अंतिम वर्षात. विद्यार्थी संसद्दाचा जनरल सेक्रेटरी म्हणून मी कृषी महाविद्यालयात नुकताच निवडून आलो होतो. साधासुधा नाही अटीतटीची निवडणूक भलतीच रंगली होती. ती महाविद्यालयाच्या इतिहासात दणकेबाज ठरली. माझ्या त्यावेळच्या भाषण कौशल्याच्या जोरावर पॅनॉलमधून मी एकटाच आवाजी मतांनी निवडून आलो होतो. मुख्यमंत्री एकटाच एका पक्षाचा आणि मंत्रिमंडळ दुसऱ्या पक्षाचे असा पोरखेळ झाला होता. असे मंत्रिमंडळ जगाच्या पाठीवर झाल्याचे अजून तरी ऐकिवात नाही. भलेही तो पोरखेळ असेल; पण जागतिक इतिहासातला तो वेगळा नमुना होता, हे नक्की.

त्यानंतर लगेच शिवाजीची निवडणूक लागली. गणेशराव विद्यार्थी संसदेच्या अध्यक्ष पदासाठी उभे होते. विरोधात होते विजय गव्हाणे. पोरसोराची निवडणूक असली तरी ती दोन राजकीय घराण्यांमधली चुरस होती. प्रचार सुरु झाला. वर्गावर जाऊन भाषण देणे, रात्री सांस्कृतिक सभागृहात सभा घेणे, गावात जिथे विद्यार्थी खोल्या करून राहायचे तिथे घोघर जाऊन भेटी घेणे. असा धूमधडाका सुरु झाला. विजय चांगला डिबेटर होता. स्टायलिश बोलायचा. त्याची टकराघुसारखी भाषणे पोर- पोरींना भुरळ घालू लागली. त्याचा प्रभाव वाढू लागला. तशात मला पाहुणा म्हणून प्रचारासाठी बोलावणे आले. मला तो बहूमान वाटला. खूप आनंद झाला. शिवाजीत जाऊन भाषणे घ्यायची मोठी पर्वणी वाटली. अभ्यास गुंडाळून क्लासेसला दांड्या मारून मी गणेशरावांच्या टोळीत सामील झालो.

टाऊन हॉलमध्ये पहिलीच सभा होती. परभणी शहरातल्या तमाम तरुणांचा तो भव्य जलसा होता. उत्साह, जोश, आनंद हॉलमध्ये आणि समोरच्या मैदानात तुडूंब भरला होता. मी एक विजेता होतो. आणि चार हिताच्या गोष्टी सांगायच्या भूमिकेत होतो. गणेशरावांना चांगले भाषण जमत नाही या मुद्यावर गव्हाणे यांचा जास्त जोर होता. त्यांनी गणेशरावांची जेवढी वैगुण्ये दाखवली ती वैगुण्ये नसून आदर्श सामाजिक कार्यकर्त्यांचे

गुण कसे आहेत त्यावर मी भाषण तयार केले. मोजके मुद्दे योग्य शब्दात मांडल्यामुळे माझ्या प्रत्येक वाक्याला श्रोत्यांनी टाळ्या आणि शिट्ट्या वाजवून उत्स्फूर्त प्रतिसाद दिला. माझे भाषण संपताच गणेशरावांनी धावतच येऊन मला मिठी मारली. त्याचक्षणी आम्ही दोघे एकजीव झालो ! आम्ही जेव्हा केव्हा भेटतो तेव्हा दोघांचीही हृदये आनंदाने उचंबळून येतात एकमेकांना. बघून आनंद होणे, हे सच्च्या मैत्रीचे लक्षण आहे.

झाले ! निवडणुकीचा रंग पालटला. फ. मुं. शिंदेना नुकतीच काव्यबाधा झाली होती. ते दररोज एक दोन कविता प्रसवू लागले. सुरेश जाधवच्या प्रतिभेला उकळी फुटू लागली. शफीने मराठीच्या लळ्यापायी उर्दूला तलाक दिला होता. हे पोट्टे पुढे मान्यवर होणार असल्याचे काळालाही कळले नव्हते. वसेकर, लबडे अशा दीडशे दोनशे टोळभैरवांची टोळी कामाला लागली आणि वातावरण गणेशमय झाले. घोषवाक्ये लिहायाची कोणीतरी कल्पना सुचवली.

**काय होती घोषवाक्ये ?**

जो गरजता है वो बरसता नहीं!

आम्हाला सोन्याचे डुक्कर म्हणता, सोन्याचे गाढव व्हायला तुम्हाला कोणी रोकलेय ?

गर्वाचे घर खाली ! विजय मंदिराला पराजयाचा पाया !

देव हवा की दानव ?

वगैरे वगैरे फक्त एवढीच अक्षरे पण वाचकांना बरोबर अर्थ कळायचा. कागदाच्या लांब रुंद पट्ट्यांवर बोरुने लिहिलेली ही घोषवाक्ये. रस्त्यातल्या भिंती भिंतीवर झळकू लागली. त्यामुळे वातावरण अधिकच अनुकूल होत गेले आणि गणेशरावांचा संपूर्ण पॅनॉल थॅपिंग मेजॉरिटीने निवडून आला.

**निवडणुकीचा धुराळा शांत होतो न होतो तोच “महाराष्ट्र कृषी विद्यापीठ” स्थापनेची चर्चा सुरु झाली.** तज्ज्ञांच्या समितीने राज्यातल्या काही ठिकाणांना भेटी देऊन योग्य जागेची शिफारस शासनाला करायची होती. मराठवाड्यात सध्याच्या हिंगोली जिल्ह्यातील गोळेगाव फार्मला समितीने भेट दिली. विद्यापीठ कुठे तरी पश्चिम महाराष्ट्रातच होणार, जागेची पाहणी हा केवळ फार्स होता, हे आम्हाला माहित होते. म्हणून विद्यापीठाच्या मागणीसाठी आंदोलन करायचे आम्ही ठरवले. भन्नाट कल्पना होती. सर्व मित्रांना आवडली. माझे आणि गणेशरावांचे २००-३०० सवंगडी कामाला लागले. रेल्वे स्टेशनला लागून कुंजबिहारी हॉटेल आहे. त्याची रुंदी आणि लांबीची बाजू उघडी म्हणजे भिंती नसलेली हॉटेल. परभणीत २४ तास उघडे असणारे हे एकमेव हॉटेल होते. सहाजिकच सर्व कॉलेज कुमारांचा तो अड्डा होता. रेडिओ ऐकत चहावर चहा पीत रात्री उशीरापर्यंत अनेक टोळकी तिथे बसून मनमुराद गप्पा मारायची. आमच्या आंदोलनाच्या विचारमंथनाचे तेच केंद्र बनले.

फ. मुं. च्या विनोदबुध्दीला सर्वात जास्त धुमारे फुटले ते कुंजबिहारी हॉटेलातल्या बैठकात. त्याने लहानसा विनोद किंवा कोटी केली, की आम्ही मोकळ्या मनाने खळखळून हसायचो. आमच्या टेबलावर सगळ्यांच्या हसण्यापेक्षा एकट्या गणेशरावांचे हसणे मेघ गडगडल्यासारखे असायचे. तशी त्याकाळी परभणी दिलखुलास हसण्यासाठी सर्वत्र प्रसिध्द होती. परभणीची बरीच नेतेमंडळी पहाडी आवाजात हसायची. काहीजण तर शब्द उच्चारयाच्या आधी आणि उच्चारल्यावर कारण नसताना खो - खो - खो करून हसायचे.

समोरच्याला हसावे की रडावे तेच कळायचे नाही. एक दोघे तर एकदम बांध फुटल्यासारखे भाडकन हसायचे आणि उबळ न आवरल्यामुळे कुक कुक कुक करत राहायचे. विनोदा शिवाय त्यांचे असे हास्य लोकांना हास्यास्पद वाटायचे. फ. मुं. च्या विनोदावर आम्ही मोकळे हसायचो आणि गणेशराव मनातून हसायचे. एवढे मोकळे “लफिंग ग्राउंड ” फ. मुं. ला कुठेच मिळाले नसते. बेट्याने प्रयोगशाळेतल्या चंचूपात्रासारखा आमचा उपयोग करून घेतला आणि आपण एकटाच महाराष्ट्राचा हास्यसम्राट झाला. आम्ही नुसतेच हसत राहिलो. ते काही असो; पण आम्ही जे हसणं खिदळणं अनुभवलं ते अनेकांच्या वाट्याला येत नाही. आमच्यासारखे नशीबवान आम्हीच !

आंदोलन करायचे होते; पण नक्की काय करायचे हे समजत नव्हते. होईल तेवढ्या पुढ्यांच्यांच्या भेटी घेतल्या. कृषीमंत्री, मुख्यमंत्र्यांच्या भेटी घेऊन निवेदने द्यावी, असे मनात होते; पण मुंबईला जाणे-येणे मंत्र्यांच्या भेटी घडवून आणायची जबाबदारी एकाही पुढ्यांनी घेतली नाही. मग आम्हीच निर्णय घेतला, विद्यार्थ्यांचा मोर्चा काढायचा आणि जिल्हाधिकाऱ्यांमार्फत शासनाकडे निवेदन द्यायचे. मोर्चाची तारीख ठरली. पोलिसांची परवानगी मिळाली. घोषणांचे फलक तयार झाले. सर्व शाळांना भेटी देऊन मुलांना मोर्चात येण्यासाठी आवाहन करण्यात आले. स्वयंसेवकांची यादी त्यांचे बॅजेस, जबाबदाऱ्या वाटण्यात आल्या. प्रत्येक शाळेतून दहा मुले निवडून त्यांनी त्यांच्या शाळेतल्या मुलांना शिस्तीत सांभाळायला सांगितले. मोर्चाच्या मार्गावर जागोजागी पाणपोया उभ्या केल्या. अशा सर्व बारकाव्यांसकट जय्यत तयारी झाली.

सकाळी दहा वाजता शनिवार बाजार मैदानावर मुले जमायला सुरुवात झाली. अपेक्षेपेक्षा कितीतर जास्त गर्दी झाली. बँड पथक, त्यांच्यामागे लेझीम पथक आणि मागे मुले अशा सर्व शाळांच्या रांगा तयार झाल्या. पाच टांग्यात लाउडस्पीकरवरून शिस्तीबद्दल सूचना देण्यात आल्या. लढायला सज्ज झालेल्या सैन्याची सेनापतीने पाहणी करावी, अशा थाटात गणेशराव ओळी रांगात फिरून पाहत होते. काही सूचना देत होते. कुतूहल आणि उत्साहाने वातावरण बेधुंद झाले होते. ठरल्याप्रमाणे बरोबर अकरा वाजता दहा हजार बालके आणि युवकांच्या मोर्चाला सुरुवात झाली. अग्रभागी २५ वाद्यांचे मोठे बँड पथक होते. त्यांच्यामागे मोठे कापडी बॅनर आणि प्रमुख विद्यार्थी नेते होते. त्यानंतर शाळेच्या नावाचे मोठे बॅनर, मुलांचे बँड पथक, लेझीम पथक आणि मागे मुलांच्या चारओळी काही जणांच्या हातात घोषणा फलक अशी एकंदर रचना होती. वाजतगाजत जोरात घोषणा देत मोर्चाला सुरुवात झाली. बँडवाले, टांगेवाले सोडले तर मोर्चात एकही प्रौढ माणूस नव्हता. सर्व पोरसोरी मामला!

धीम्या गतीने मोर्चा पुढे सरकत होता. बघणारांनी रस्त्याच्या दूतर्फा प्रचंड गर्दी केली होती. झाडून सर्व जनता घराबाहेर, दुकानासमोर उभी राहून कौतुकाने बघत होती. दुसऱ्या मजल्यावरच्या गॅलरीत बाया, मुली उभ्या होत्या. दर पंधरा मिनिटांनी मिरवणूक थांबायची. लेझीम पथके कवायत करायची. जोरजोरात घोषणा व्हायच्या. शिवाजी चौकात पत्रकार, फोटोग्राफर आले. कोणाच्या ध्यानी मनी नसलेले काहीतरी अजब घडत आहे, याची सर्वांना जाणीव झाली. कुठे थोडेही शिस्त ढळून देता तो शांती मोर्चा जिल्हाधिकारी कार्यालयावर धडकायला दुपारचे दोन वाजले. एवढा भव्य सुनियोजित स्वयंम्-उत्साही आणि शांतीपूर्ण मोर्चा परभणीच्या इतिहासात आजतागायत झाला नाही.

बाहेरच्या गेटवर पोलिसांनी मोर्चा अडवला. फक्त पाच प्रतिनिधींना चर्चा आणि निवेदन देण्यासाठी

बोलावले. जिल्हाधिकाऱ्यांचे दालन पुढारी आणि पत्रकारांनी खचाखच भरले होते. आण्णासाहेब गव्हाणे, शेषरावजी देशमुख, लिंगबाजीराव दुधगावकर, नखाते, बाबुराव पाटील गोरेगावकर, जामकर अशी त्यावेळची सर्व मातब्बर नेते मंडळी अगोदरच येऊन बसली होती. आम्ही दालनात प्रवेश करताच जिल्हाधिकाऱ्यांनी प्रश्नांची सरबत्ती सुरु केली. ते म्हणाले, “एवढा मोठा मोर्चा काढायची काय गरज होती?” नुसते निवेदन दिले असते तरी चालले असते. गणेशराव म्हणाले, “साहेब हे निवेदन स्वीकारा आणि त्याचे काय करायचे ते करा, आम्ही विद्यार्थी प्रतिनिधी आहोत. तुम्ही आम्हाला बसायला खुर्च्या सुध्दा ठेवल्या नाहीत. तुमच्याशी उभे राहून बोलायला आम्ही गुन्हेगार नाहीत.” हा बाणेदार गुस्सा खूप शोभला आणि बसलेल्या मंडळीला तेवढाच भावला. जिल्हाधिकारी थोडे ओशाळले. एका मिनिटातच फटाफट खुर्च्या आल्या. आम्हाला बसायला सांगितले गेले. गणेशराव म्हणाले, “मोर्चाची गरज नव्हती असे आपण म्हणता, पण महाराष्ट्राचे लक्ष वेधण्यासाठी मोर्चा काढावा लागला. आम्ही चार दोघांनी निवेदन दिले असते तर कोणी दखल घेतली नसती. मोर्चा काढला म्हणून कृषी विद्यापीठाची मागणी काय आहे? ते परभणीकरांना कळले. पत्रकार आले. उद्या राज्यातल्या वृत्तपत्रात बातम्या येतील. महाराष्ट्राला आमच्या भावना कळतील. जिल्हाधिकारी म्हणाले, “अहो पण तुम्ही शाळा महाविद्यालये बंद करून मोर्चा काढला. तुम्ही विद्यार्थ्यांचे नुकसान करत आहात.” दबक्या आवाजात मिशिकलपणे फ. मुं. म्हणाले, “कुछ पाने के लिए कुछ खोना पडता है” आवाज न काढता सगळे पोटातल्या पोटात हसले; पण जिल्हाधिकारी बिथरले. त्यांचा ताव शेंडीत उतरला. आपण सर्वज्ञानी सर्व हितकारी असल्याच्या आवेशात म्हणाले, “तुम्ही गुंडागिरी करून लहान मुलांना वेटीला धरता आहात. एक्सपर्ट कमिटी ठरवील तिथे विद्यापीठ होईल, कोणी मोर्चे काढले म्हणून ते मिळणार नाही आणि विद्यापीठ म्हणजे काय? हे कळते का तुम्हाला? सांगा बरं फॅकल्टी म्हणजे काय? हा प्रश्न ऐकून आमची डोकी फिरली. सर्वजण तटातट उठले. टेबलावर जोरात हात आपटून मी त्वेषाने म्हणालो, “साहेब फॅकल्टी म्हणजे काय ? हे सांगितले तर तुम्ही विद्यापीठ देता का? आमचे निवेदन सरकारकडे पोचवायचे आपले काम आहे. प्रश्न विचारून आमची परीक्षा घ्यायचा आपल्याला अधिकार नाही.” असे म्हणून आम्ही तावातावाने बाहेर पडलो. आमची बॉडी लॅंग्वेज कंपाउंड बाहेरच्या पोरांच्या लक्षात आली. गेट ढकलून प्रचंड लोंढा आत घुसला. जे दिसेल त्याची मोडतोड सुरु झाली. आवारातल्या बागेचा पूर्ण विध्वंस करूनच पोरं थांबली.

दुसऱ्या दिवशी मोर्चाचे फोटो आणि बातम्या सर्व वर्तमानपत्रात आल्या. जिल्हाधिकाऱ्यांचे कसे चुकले? त्याची चौकटीत वर्णने आली. मराठवाडा पेपरमध्ये अनंतराव भालेरावांनी विद्यापीठ मराठवाड्यातच का व्हावे? म्हणून जळजळीत अग्रलेख लिहिला. विद्यार्थी मोर्चाचे सर्वच पेपरवाल्यांनी कौतुक केले. तेव्हापासून कृषी विद्यापीठाची मागणी जनतेच्या मनात धुमसत राहिली. पुढे चार वर्षांनी पुन्हा ठिणगी पडली आणि संपूर्ण मराठवाड्याच्या जनतेच्या मनाचा भडका उडाला. सरकारला विद्यापीठ द्यावेच लागले. अख्ख्या महाराष्ट्रात कृषी विद्यापीठाची मागणी करणारे पहिले युवा नेते गणेशराव होते, याची इतिहासाला नोंद घ्यावी लागेल.

आम्ही वर्षभर निरनिराळे कार्यक्रम आयोजित केले. प्रसिध्द लेखक, कवी, इतिहासकार विनोदमूर्ती आणि उत्तम वक्ते बोलावले. ऑर्केस्ट्रा आणि नाट्यप्रयोगसुद्धा केले. कार्यक्रम कृषी महाविद्यालयात असो की शिवाजी महाविद्यालयात, प्रेक्षक दोन्ही महाविद्यालयांचे असायचे. त्यामुळे प्रत्येक कार्यक्रम बेफाम रंगायचा. वार्षिक स्नेहसंमेलन तर चार दिवसांची मोठी यात्राच होती. हौशा, नौशा, गौशांनी आपापल्या परीने अक्षरशः

जिरवून घेतली. महाविद्यालयातल्या सर्व विद्यार्थ्यांना ते वर्ष आयुष्यभर आठवणीत राहिल, असे मौज मजेत गेले. मनावर कुठलाही ताणतणाव न येता अभ्यास सहज होऊन गेला. वर्षारंभ कधी झाला आणि वर्ष कधी संपले ते कळले सुध्दा नाही.

महाविद्यालयातले वातावरण धुंदफुंद ठेवण्यात गणेशरावांचे नेतृत्व बेफाम यशस्वी ठरले. त्यांनी ओढून ताणून नेतृत्वाचा कधी आव आणला नाही. त्यांच्यासाठी ती एक सहज क्रिया होती. त्यांचा प्रत्येक शब्द उचलून धरणारे शेकडो जिवलग मित्र होते. पुढे राजकारणात ते आमदार, खासदार आणि मंत्री सुध्दा झाले. कुठल्याही पदावर असले तरी त्यांचे मित्रप्रेम जराही कमी झाले नाही. त्यांचे आनंदी व्यक्तिमत्त्व दीर्घकाळ असेच आनंदी राहो, ही सदिच्छा !!







## मा. बापूसाहेब उर्फ श्री गणेशराव दुधगांवकर - एक निर्भीड, निर्भेळ, निर्मळ, सात्विक व्यक्तिमत्त्व

श्री. सुभाषराव सूर्यवंशी

Ex. CEO (Projects)

Marathwada Development Corporation

वर्ष 2020 अनेक समस्यातून जात आहे. न भुतो न भविष्य अशा संकटांना आपण सर्वजण तोंड देत आहोत. सर्वांना ईश्वर आत्मबल प्रदान करो.

मला हे वर्ष एक योगायोग वाटतो. बापूसाहेब व माझ्या निर्मळ व शुध्द मैत्रीची गोल्डन ज्युबली आहे. मा. बापूसाहेबांच्या वयाची प्लॅटिनम ज्युबली आहे. मा. बापूसाहेब व सौ. संध्याताई वहिणीसाहेब ह्यांच्याही लग्नाची गोल्डन ज्युबली, ही एक माझ्यासाठी अविस्मरणीय घटना आहे.

मी राहणार दाती, ता. कळमनुरी जि. परभणी (तेव्हाचा). 1968 वर्षी नांदेडसारख्या ग्रामीण भागातून गव्हर्नमेंट इंजिनिअरिंग कॉलेज, औरंगाबाद येथे प्रवेश घेतला होता. आम्ही 7 ते 8 जण बन्सीलाल नगर येथे डॉ. भातलवंडे ह्यांच्या बंगल्यात किरायाने राहत असू. श्री पंडीतराव क्षीरसागर, श्री सुभाष वेदपाठक, श्री जगन्नाथ कदम, श्री कै. माधव कोडे, श्री. कुलकर्णी, श्री राठोड इत्यादी ४ वर्ष शिक्षण पूर्ण होईपर्यंत ह्याच बंगल्यात राहत असू. आमच्या ग्रुपमध्ये सर्व जातीचे व मराठवाड्यातील सर्व जिल्ह्याचे मित्र इंजिनिअरिंग शिक्षणासाठी राहत होतो.

कै. श्री वसंतराव कोसलगे, डॉ. बा. आं. मराठवाडा विद्यापीठात (तेव्हाचे मराठवाडा विद्यापीठ) कार्यरत होते. त्यांचा अर्धा बंगला मा. बापूसाहेबांनी किरायाने घेतला होता. त्याचे असे झाले की, एका दुपारी आमच्या बंगल्याच्या बाजूला एक विल्ली जीप व एक अॅम्बॅसेडर कार आली. त्या गाडीतून 7 ते 8 मुले व 2 मुली उतरल्या. एकजण सफारीमध्ये कडक पिळदार मिशाचा वरच्या दिशेला आकडा असलेले एक तरुण होता व दुसरी व्यक्ती पांढऱ्या शुभ्र धोतर, नेहरु शर्ट व कडक गांधी टोपी परिधान केलेले एक राजबिंडा चेहऱ्याचा व्यक्तीसुध्दा गाडीतून उतरला. हे मुले सर्व त्यांच्याबरोबर आले होते. आम्हाला अंदाज आला कोणीतरी मोठ्या कुटुंबातील हे सर्वजण आहेत.

दुसऱ्या दिवशी सफारीवाले इसम आम्हाला बघून आमच्याकडे आले. अगदी सहजपणे आमच्याशी चर्चा करून कोण कोठून आले विचारले ? परिचय झाल्यानंतर सफारीमध्ये आकडेदार टोकदार मिशा असलेले श्री. गणेशराव दुधगावकर व शुभ्र कपड्यातील राजबिंडा व्यक्ती म्हणजे श्री लिंगाजीराव दुधगावकर आपल्या सर्व भावाची मुले, मुली हे शिक्षणासाठी परभणीहून इथे आले. शिक्षण हा त्यांचा किती आवडता विषय आहे, हे तेव्हाच कळले. सर्व मुले, मुली हे त्यांचे पुतने व पुतऱ्या होत्या. सर्वजण त्यांना बापूसाहेब म्हणत. त्यांचा सर्वांना फार धाक होता. त्यांची जणु काही छोटी शाळाच. बापूसाहेब बाह्यदर्शनी कडक वाटत होते; पण जेव्हा संवाद सुरु होतो तेव्हा त्यांच्या हृदयातला हळुवारपणा व ओलेपणा जाणवत होता. त्याकाळात शिक्षणाचे महत्त्व त्यांनी जाणले होते.

माझे वडील मराठवाडा मुक्तिसंग्राम स्वातंत्र्य सैनिक कै. दिपाजी पाटील (मा. बापूसाहेब) यांना श्री. लिंबाजीराव ओळखत होते. बापूसाहेबही ओळखत होते. त्यांना आमच्या मा. बापूसाहेबांबद्दल नितांत आदर होता. ते आपल्या पुतऱ्यांना सांगायचे तुम्ही या काकासारखे शिक्षण घेऊन मोठे व्हा. आम्ही दोन ते तीन वर्षे बरोबरच राहिलो. दोघांचा कॉलेजचा वेळ संपला, की अनेक विषयावर मुक्त चर्चा करत असू. याकाळात आम्ही मॉर्निंग वॉक बन्सीलाल नगर ते रेल्वे स्टेशन, ओव्हर ब्रीज विना चप्पल वा बूट करत असूनंतर कच्चे दूध घेत असू.

बापूसाहेब एम. पी. लॉ कॉलेज, औरंगाबादमध्ये असताना अनेक विद्यार्थी संसदवर निवडणुकात भाग घ्यायचे व निवडूनही यायचे. याचे आम्हाला आश्चर्य वाटे. मला तसेच काही तरी करावे म्हणून मीही इंजिनिअरींग कॉलेजच्या विद्यार्थी संसदेच्या निवडणुकीत भाग घ्यायचा; पण मी नेहमीच पराभवाला सामोरे जात असे. ते निवडणूक कसे जिंकायचे? याचे मला कोडे असायचे.

त्याकाळात एक महत्त्वपूर्ण मराठवाडा विकास आंदोलन उभे राहिले. मराठवाडा मागासलेला असल्यामुळे अनेक पिढ्यांपासून अन्याय होत होता. संयुक्त महाराष्ट्रात सामील झाल्यानंतरही आर्थिक क्षेत्र, शैक्षणिक क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र अशा अनेक बाबतीत मराठवाड्यावर अन्याय सतत चालू होता. त्यावर आम्ही बरीच चर्चा करायचो. मलाही अशी जाणीव व्हायची. मराठवाड्यातील सर्व जिल्ह्यास अस्वस्थता जाणवू लागली. मराठवाड्याचा आता मुख्यमंत्री झाला पाहिजे, अशी मागणी सर्व थरातून होत होती. पुढे मा. बापूसाहेब व मा. आ. कमलकिशोर कदम व प्रत्येक जिल्ह्यातून तरुण नेते पुढे येऊ लागले. इंजिनिअरींग कॉलेज, मेडीकल कॉलेज, लॉ कॉलेज व अनेक महाविद्यालयातून विद्यार्थी आंदोलनात अग्रेसर होते. मी मा. बापूसाहेबांबरोबर अनेक आघाड्यांमध्ये सहभागी होतो. कै. माननीय श्री. शंकरराव चव्हाण साहेब यांच्या मार्गदर्शनाखाली आंदोलन यशस्वी झाले. असो हा एक वेगळाच विषय आहे.

मा. बापूसाहेबांना राजकारणाची आवड विद्यार्थी दशेपासूनच होती; पण ते विकास प्रेरीत व सकारात्मक होते. त्यांनी स्वयंकेंद्रीत राजकारण कधीच केले नाही. सन 1971 वर्षी बापूसाहेबांचे लग्न सौ. संध्या वहिनीसाहेबांबरोबर उदगीर येथे झाले. त्यांच्या लग्नास मी, श्री. फ. मु. शिंदे, अॅड. मोकाशे इत्यादी मित्र हजर होतो. लग्न आर्य समाजी पध्दतीने झाले. मा. बापूसाहेब हे स्वतः जमीनदार व श्रीमंत असूनही एका सामान्य कुटुंबातील पण संस्कारीत कुटुंबातील मुली सोबत लग्न केले. कै. श्रीधरराव रावणराव कदम साहेब त्यांचे सासरे. हुंडा न घेता त्यांनी लग्न केले. तो त्या काळातील आश्चर्याचा विषय होता.



लग्नाच्या वेळेस वहिनी एच.एस.सी. होत्या. मोठे घराने, श्रीमंत कुटुंब त्यात पुढे आपल्या शिक्षणाचे काय होईल? हे वहिनींना त्यावेळेस कळत नव्हते; पण शिक्षणाचे महत्त्व मा. बापूसाहेबांना होते. त्याला अनुसरून मा. बापूसाहेबांनी, वहिनींना, पदवी, पदव्युत्तर व पुढे पीएच.डी. हे शिक्षण दिले. प्रस्थापित परंपरेपासून दूर जाऊन पत्नीला पी एच. डी. पर्यंत शिक्षण घेऊ दिले. ही त्या काळातील नवलाची बाब होती. सौ. संध्याताई वहिनी साहेबांचे सर्व शिक्षण औरंगाबादला झाले.

मा. बापूसाहेबांनी विधीज्ञ (लॉ) शिक्षण पूर्ण केल्यानंतर परभणीला गेले व ते तिथे स्थायिक झाले. स्थानिक राजकारणात हळूहळू रस घेऊ लागले. स्वतः प्रस्थापित कुटुंबातील असून सुध्दा त्यांनी प्रस्थापिता विरुद्ध नव्या उमेदीचे विकास प्रेरीत बंड उभे केले. मराठवाड्यातील तरुण राजकारणी म्हणून ते ओळखले जात असत. विकास प्रेरीत आंदोलन करत. ते राजकारणात परभणी जिल्ह्यात नव्हे तर मराठवाड्याच्या राजकारणात एक झपाटलेले तरुण नेतृत्व म्हणून उदयास आले.

मी 1972 इंजिनिअर बी. ई. (मेकॅनिकल) म्हणून पदवी घेतली व औरंगाबाद सोडले. पुढे काही दिवस दुष्काळी कामावर शासनातर्फे उस्मानाबादमध्ये काम केले. तिथे माजी मा. मुख्यमंत्री स्व. ना. श्री. शिवाजीराव पाटील निलंगेकर ह्यांच्या आडत दुकानाच्या एका खोलीत काही दिवस राहत होतो. तेव्हा साहेब निलंग्याचे आमदार होते. नंतर वेस्टर इंडिया इरेक्टर्स, पुणे ह्या थरमल पॉवर प्रोजेक्ट उभारणी करणाऱ्या कंपनीत लागलो. कंपनीचे हेड ऑफीस पुणे येथे होते. त्यांचे प्रकल्प उभारणीचे काम आंध्र प्रदेश, उत्तरप्रदेश अशा अनेक राज्यात चालू होते. मी आंध्रातील खम्मम, कोत्तागुडम जिल्ह्यात काम केले. ह्या कंपनी मार्फत कुवैत, यु. पी., बिहार, हरियाणा, गुजरात इत्यादी ठिकाणी जवळजवळ 10 वर्ष काम केले; पण या दहा वर्षात आमच्या पत्रव्यवहारांमार्फत संपर्क असायचा. मी खाजगी कंपनीत असताना एखाद्या वर्षानंतर सुट्टीवर आल्यानंतर मा. बापूसाहेबांना परभणी येथे भेटत असे व जुन्या आठवणीतल्या गप्पा मारत असे. मा. बापूसाहेब वसमत मतदार संघातून प्रथमच आमदार बहुधा 1980 ला झाले. त्यावेळेस मी पतरातु जि. हजारीबाग (आता झारखंड राज्य) येथे थरमल पॉवर प्रोजेक्टवर काम करत होतो व ते प्रथमच कै. मा. श्री वसंतदादा पाटील यांच्या मंत्रीमंडळात स्वतंत्र राज्यमंत्री म्हणून सामील झाले. हे मला पुण्याहून (WIE) मधील माझ्या मित्राकडून टेलिग्रामद्वारे कळाले. मा. बापूसाहेबांनी मला पत्र लिहून कळविले होते. मी वेळोवेळी कुठे काम करतो ते मा. बापूसाहेबांना कळवित असे.

मा. बापूसाहेबांना भेटण्यासाठी मी बिहारमधून नांदेडला आलो. तेथून माझे सर प्रोफेसर श्री रामचंद्रराव भोसले यांच्याबरोबर मोटार सायकलवर जिंतूरला अभिनंदन करण्यास आलो. जिंतूरला साहेबांचा जंगी सत्कार होत होता. गर्दीतून स्टेजकडे वाट काढून जात होतो. मा. बापूसाहेबांनी स्टेजवरून मला पाहून 'सुभाषराव या' अशी हाक मारली. मला ओशाळल्यासारखे झाले. मला स्टेजवर घेऊन गेले व शेजारी बसविले. हा जीवनातला प्रसंग माझ्यासाठी कायम अविस्मरणीय राहिल.

कधी कामाचा ताण, सुट्ट्या कमी, सर्वापासून दूर ह्या कारणामुळे मला वाटत असे इकडे कुठेतरी मंडळ, महामंडळांत काम करावे. तसे बापूसाहेबांना विनंतीही केली; पण त्यांनी असा सल्ला दिला, की तुम्ही जेथे आहोत तेथेच रहा. अनुभव घ्या. अनुभवानंतर पूर्ण जग पाहिल्यानंतर खरा व्यक्तिमत्त्वाचा विकास होतो व माणसाचा दृष्टिकोन विशाल होऊन प्रगती होते. मग त्याचा उपयोग आपल्या भागाचा विकास करण्यासाठी होतो. त्यांचा सल्ला मी ऐकला.

मी 1983 मराठवाडा विकास महामंडळात नोकरीला लागलो. त्यावेळी मा. बापूसाहेब कै. श्री. वसंत दादांच्या मंत्रीमंडळात राज्य मंत्री म्हणून कार्यरत होते. मी इंटरव्युला आलो असता त्यांच्याकडेच 'सारंग' शासकीय निवासस्थानांत थांबलो होतो. कै.मा.श्री. रायभानजी जाधव अध्यक्ष होते. माझी नोकरीसाठी मा. श्री. रायभानजी जाधव साहेबाकडे शिफारस करावी, अशी विनंती मा. बापूसाहेबांना केली. त्यावर मा.

बापूसाहेब म्हणाले, 'मा. श्री. रायभान जाधव कडक शिस्तीचे नेते आहेत. त्यांना शिफारस जमत नाही. तसे तुमचा अनुभव व विविध ठिकाणी काम केल्यामुळे तुम्हाला प्राधान्य देतील.' मी आग्रह केला म्हणून मा. बापूसाहेबांनी फोन केला. सुभाष सुर्यवंशी हे मित्र असले तरी ते एक अनुभवी इंजिनियर आहेत. आपण त्यांचा विचार करावा.

मी जाधव साहेबांना भेटल्यानंतर ते जरा कडक शब्दात मला बोलले. माझ्याकडे शिफारस चालत नाही. मुलाखतीला या. योग्य वाटले, तर निवड होईल. असो, मी 1983 ला प्रोजेक्ट इंजिनियर म्हणून एम. डी. सी. त लागलो. (मराठवाडा विकास महामंडळ, औरंगाबाद).

महामंडळात प्रकल्प कक्ष हा नवीन होता. विकास महामंडळाचे असे साचेबंद काम नव्हतेच. फक्त शासनाची सामूहिक प्रोत्साहन योजना लघू उद्योगांच्या विकासासाठी अशी काही साचेबंद कामे होती. सबसिडी, प्रोत्साहन या योजना राबविल्या जात होत्या. नांदेड, किनवट, बीड, औरंगाबाद, जांब समर्थ येथे महामंडळाचे प्रकल्प होते.

नवीन प्रकल्प कक्ष असल्यामुळे काय काम करावे, हे प्रथम लक्षात येत नव्हते. हळूहळू मा. श्री. रायभानजी जाधव व मा. बापूसाहेबांशी चर्चा होत गेली. विकासाच्या विविध योजना आकार घेऊ लागल्या. मा. बापूसाहेबांच्या मते मा. श्री. रायभानजी जाधव अभ्यासू व विकास विषयक जाण असलेले नेते होते. त्यांच्या ज्या विकासाच्या कल्पना आहेत. त्याला मूर्त स्वरूप देण्यासाठी हळूहळू मा. बापूसाहेबांच्या सल्याने काम सुरु झाले. मा. बापूसाहेब जरी वरून शांत जाणवत असले तरी आत एक धगधगते व्यक्तिमत्त्व आहे. मुंबईला मी मंत्रालयात वारंवार जात असे तेव्हा मुक्काम सारंग बिल्डींग वा आमदार निवास येथेच त्यांच्याबरोबर राहत असे. ह्या दरम्यान अनेक योजनावर चर्चा करायची संधी मिळत असे. मागासलेल्या भागाला न्याय मिळावा व विविध योजना आपल्याकडे कशा येतील याबद्दल त्यांचे संपूर्ण सहकार्य व मार्गदर्शन मिळत असे.

एक मजेशीर प्रसंग. एके दिवशी मा. बापूसाहेब विकास भवन, एम.डी.सी. ला अचानक लाल दिव्याच्या गाडीत आले. सर्वांना कळालेच नाही. लाल दिव्याची गाडी अचानक कशी आली. मा. बापूसाहेब सरळ माझ्या कॅबिनला आले. श्री. रायभानजी जाधव ह्यांना कळल्यावर ते सरळ वर माझ्याकडे आले व मा. बापूसाहेब म्हणाले, मी फक्त माझ्या मित्राला भेटायचा आलो. शासकीय काम असते तर प्रोटोकॉल पाळला असता. मित्र म्हणून मला जो मान दिला तो अविस्मरणीय आहे.

त्याच दिवशी माझ्या कामकाजाबाबत मा. श्री. रायभानजी जाधव साहेबांना, मा. बापूसाहेबांनी विचारपुस केली. मा. श्री. रायभानजी जाधव म्हणाले, अधिकारी मनातून काम करतो. त्याची निवड गणेशरावांचे मित्र म्हणून नाही तर माननीय भुजंगराव कुलकर्णी निवड समितीने केली आहे. त्यामुळे सुर्यवंशीच्या कार्याविषयी प्रश्नच उद्भवत नव्हता. एम.डी.सी.चे महत्वाचे प्रकल्प इंडो जर्मन टोल रुम, सी. ई. डी. टी., एम.सी.ई.डी. हाजीरा, नांदेड-नागपूर गॅसपाईप लाईन सारख्यांना मा. बापूसाहेबांचा सक्रीय पाठींबा होता. दिल्लीला बहुतेक आम्ही बरोबर जात असू व मुक्कामही महाराष्ट्र सदनला असायचा. मा. श्री. शंकरराव चव्हाण साहेब केंद्रात अर्थमंत्री, नियोजन मंत्री असल्यामुळे दिल्लीत सर्व स्तरावर आम्हाला सहकार्य व पाठींबा असायचा. तेथे मी बघीतले मा. बापूसाहेबांचे सर्व राज्यातील तरुण नेत्यांशी अत्यंत स्नेहाचे संबंध होते. हे

त्यांचा राजकीय मित्र परिवार बघून मलाही आश्चर्य वाटायचे. दिल्लीत बऱ्याच मंत्रालयात त्यांचे स्नेहाचे संबंध होते. सेक्रेटरी, जॉईंट सेक्रेटरी, हे त्यांना सन्मानाने वागवत. त्यांचा वैयक्तिक ओलाव्याच्या स्वभावामुळे जो त्यांना भेटेन त्याला मा. बापूसाहेब आपलेच वाटत. त्यांच्याशी मैत्री करणारे बरेच मित्र आले आणि दुरावले (अनेकांनी केसाने गळाही कापला); पण मा. बापूसाहेब त्यांच्याविषयी कधीही कटुता बाळगत नसत. त्यांना त्याबाबत खंतही वाटत नसे; पण एकदा त्यांचा दृष्टिकोन व विचार मित्राला समजला की, ते मित्र कधीही त्यांच्यापासून दुरावले नाही. त्यांच्याशी मैत्री निरपेक्ष व स्वच्छ व अहंकाररहित असेल तर फारच उत्तम.

### माझा शिकागो (अमेरिका) दौरा :

मी मजल-दरमजल करित एम.डी.सी.त चांगला स्थिरावलो. मा. बापूसाहेबांच्या मार्गदर्शनाखाली नवीन प्रकल्प व योजना आकार घेऊ लागल्या. मी सतत त्यांच्या संपर्कामध्ये असे.

सन 1984 वर्ष दर चार वर्षांनी शिकागो येथे मशीन टूल प्रदर्शन भरत असे. तत्कालीन अध्यक्ष मा. श्री. रायभानजी जाधव साहेबांनी संचालक मंडळाची मान्यता घेऊन मला अमेरिकेला ह्या प्रदर्शनासाठी पाठविण्याची सूचना दिली. ज्या ग्रुपबरोबर जायचे होते त्याला फक्त तीन ते चार दिवसाचा अवधी होता. इतक्या लवकर कसं काय जाता येईल? असे मी मा. श्री. रायभान जाधव साहेबांना विचारले. ते म्हटले, तुमचे मित्र श्री. गणेशराव दुधगावकर मंत्री आहेत. त्यांच्याकडे तात्काळ जा व सर्व मदत घ्या. त्यांनी मा. बापूसाहेबांना ह्या बद्दल फोन करून सांगितले.

मी दुसऱ्या दिवशी 'सारंग' येथे बापूसाहेबांकडे गेलो व त्यांना अमेरिकेला जाण्याची कल्पना दिली. त्यांनी तात्काळ त्यांचे पी.ए. व पी. एस. ह्यांना बोलावून सांगितले की, "हे माझे मित्र आहेत व महामंडळानी त्यांना शिकागोला पाठविण्याचे ठरविले. ते शिकागोला गेलेच पाहिजे." त्यांच्या पी.ए. व पी.एस. नी दोन दिवसांत पासपोर्ट, व्हीसा, चलन सर्व व्यवस्था केली.

दरम्यान मी ज्या ग्रुपमध्ये जाणार होतो त्या एजन्सीकडे जाऊन मी अमेरिकेला जाण्यासंबंधी बोललो. त्या मॅनेजरला फार आश्चर्य वाटले. तो म्हणाला "ग्रुप के लोग दो महिने से तैयारी कर रहे हैं, आपका दो दिन मे यह कैसा होगा. कहाँ से आए हो?", असे उपरोधक बोलले. जेव्हा दुसऱ्या दिवशी सर्व कागदपत्र दाखविले. त्यांना आश्चर्य वाटले व म्हणाले "यह कैसा मुमकिन हो गया? आप कहाँ से आए हो?" थोडक्यात अशक्यप्राय बाब मा. बापूसाहेबांनी शक्य करून दाखविली.

ह्या परदेश दौऱ्यात शासनाची परवानगी नव्हती. बापूसाहेब म्हणाले, काळजी करू नका. आपण श्री. कांगो साहेब, (सचिव उद्योग) यांना प्रत्यक्ष भेटू. शासनाचे सचिव हे किती उच्च व प्रभावी पद असते ते मला माहीत नव्हते. मला वाटले सचिव म्हणजे आपल्या गावाकडील सोसायटीचे सचिव. जे अतिशय नम्र व प्रतिष्ठित व्यक्तीशी अत्यंत नम्रपणे वागणारे. कारण मी आमच्या मा. बापूना (कै. दिपाजी पाटील) सचिवाकडून सर्व प्रकारचे कामे करवून घेताना पाहिले. मा. बापूसाहेब मंत्री असूनही अचानक श्री कांगो साहेबांकडे मला घेऊन गेले. सचिवांना फार आश्चर्य वाटले. त्यांना मा. बापूसाहेबांबद्दल खूप आदर होता. श्री. कांगो साहेब कडक शिस्तीचे व निस्पृह आय. ए. एस. अधिकारी होते. मा. बापूसाहेबांनी सांगितले, हे माझे मित्र एम. डी. सी. मध्ये अधिकारी आहेत. ते ग्रामीण भागातील असून इंजिनिअर आहेत. त्यांना आम्ही प्रकल्प अभ्यासासाठी

शिकागोला पाठवत आहोत. परवा त्यांचे शिकागोला जाण्याचे विमान तिकीट बुक केले आहे. हे सांगितल्यावर श्री. कांगो साहेबांचा आवाज थोडा करडा झाला व जरा नाराजीच्या स्वरुपात मा. बापूसाहेबांना बोलले ‘‘हे शक्य नाही, परदेश दौऱ्यासाठी मंत्रीमंडळाची परवानगी घ्यावी लागते. इतक्या लवकर शक्य नाही’’. मा. बापूसाहेब शांतपणे बोलले. ह्यांना तर मी पाठविणारच. आपण मान्यता नाही दिली तरी आम्ही आमच्या खर्चाने पाठवू, असे बोलून सरळ केबीनमधून बाहेर आले. पुढे मी अमेरिकेला जाऊन आलो. चौकशी झाली अखेर कै. मा. सुधाकरराव नाईक साहेबांनी कार्यान्तर् मान्यता दिली व मला समजही दिली, की शासनाचे नियम या पुढे पाळत जा. श्री. कांगो साहेब म्हणाले, ‘‘तुम्ही श्री गणेशरावांचे मित्र म्हणून वाचलात, नसता पूर्ण खर्च तुमच्याकडून वसूल केला गेला असता. प्रोटोकॉलप्रमाणे काम करायचे शिका.’’ मी अमेरिकेला जाण्याच्या तयारीने मुंबईला आलो नव्हतो; पण सौ. संध्याताई वहिनी साहेबांनी काही गरम कपडे, बॅग व इतर सामान दसम्या सर्व तयारी करून मला दिले. मी औरंगाबादला माझी पत्नी सौ. सिमा हिला ह्या बदल कल्पना दिली. तिला जास्त माहीत नव्हते. ती नेहमीप्रमाणे उद्या सकाळी येणार का? मी सांगितले, मी अमेरिकेला जात आहे, मग येईल. तिलाही फार आश्चर्य वाटले. असो.

सांगायचा मुद्दा असा, की बापूसाहेबांनी एकदा कुणाला आपले मित्र मानलं, की त्यांना सर्व प्रकारची मदत करित व एखाद्या बाबतीतील निर्णय घेतला की ते तडीपार नेत.

**पॅफको खत कारखाना (सिंगलसुपर फॉस्फेट) :** जिंतूर, ता. जिंतूर, जि. परभणी

शेतकऱ्यांच्या फायद्यासाठी त्यांचा मालकीचा सिंगलसुपर फॉस्फेट खत कारखाना सहकारी क्षेत्रात असावा. अशी एक कल्पना त्यांच्या डोक्यात आली. सर्व एस.एस.पी.चे कारखाने खाजगी क्षेत्रात आहेत. अशी त्यांना खंत होती.

तज्ज्ञ मंडळीशी सल्ला मसलत करून एस.एस.पी. हा प्रकल्प अहवाल तयार केला व राज्य शासनाकडे सादर केला. पण त्याला केंद्र सरकारशी मान्यता लागत असे ही कल्पना तेव्हाचे अर्थमंत्री मा.श्री. शंकरराव चव्हाण साहेबाकडे दिल्लीच्या भेटीत मांडली. त्यांनी तात्काळ ह्या कल्पनेस मान्यता दिली. मा.श्री. शंकरराव चव्हाण साहेब हे मा. बापूसाहेबांचे अत्यंत जवळचे व आराध्य दैवत होते. मा.श्री. शंकरराव चव्हाण साहेबांनी सांगितले, ‘‘गणेशराव, खूप चांगली कल्पना आहे. येथून सर्व मदत व सहकार्य दिले जाईल. मा.श्री. शंकरराव चव्हाण साहेबांनी संबंधित मंत्रालय, मंत्री, सेक्रेटरी व इतर शासकीय यंत्रणेस सर्व सूचना दिल्या.

आमचा 15 दिवस मुक्काम दिल्लीलाच होता. श्री. चव्हाण साहेबांना रोज वेळापत्रकानुसार फीडबॅक देत होतो. सर्व संबंधित मंत्री, सचिव, संचालक ह्यांचेकडे सांगोपांग चर्चा झाली; पण सहकारी क्षेत्रातला एस.एस.पी.चा भारतात एकमेव प्रस्ताव असल्यामुळे पुढे प्रोसेस कशी करावी? हे लक्षात येत नव्हते. तेव्हा एक बाब सतत जाणवत होती, की सर्व संबंधित अधिकारी, मंत्री हे सर्वजण अत्यंत आदराने, स्नेहाने व आपुलकीने मा. बापूसाहेब यांच्याशी चर्चा करित.

सर्व संबंधित मंत्र्यांशी चर्चा केली. मा. श्री. बापूसाहेबांनी असे सुचविले की, ‘‘मी आमच्या खासदार मित्रांकडून तारांकित प्रश्न उपस्थित करण्यास विनंती करतो. प्रश्न काय व त्यांचे मंत्री महोदयांनी लोकसभेत काय उत्तर असावे असा एक प्रारूप तयार करून दाखवितो.’’ आम्ही लगेच कामाला लागतो. एस.एस.पी.

प्लॅन्टचे महत्त्व शेतकऱ्यांना किफायती भावामध्ये खत मिळावे. इत्यादी बाबी लक्षात घेऊन आम्ही संभावित प्रश्न व त्या प्रश्नाचे संभावित उत्तर ह्यांचा ड्राफ्ट तयार केला व मंत्री महोदय व सचिव साहेबांनी चर्चा करून प्रारूप तयार करून ते सादर केले. आठ दिवसात लोकसभेत प्रश्न विचारला गेला व मा. मंत्री महोदयांनी हा भारतातील शेतकऱ्यांसाठी महत्त्वपूर्ण प्रकल्प असल्यामुळे या प्रकल्पाला विशेष म्हणून मान्यता देत आहोत, लोकसभेत असे जाहीर केले. हा अनुभव आमच्या सारख्यांना “जरा हटकेच” होता. बापूसाहेबांची ह्यातून कार्यप्रणाली स्पष्ट होते. सर्व शासकीय यंत्रणेकडून असे निर्णय करवून घेणे, हे एक अवघड काम होते; पण मा. बापूसाहेबांचे निस्पृह वागणे, शुध्द विचार, मन मिळावूपाचा व निस्वार्थ विचार ह्यामुळेच असे अवघड कार्य सोपे झाले.

पुढे पॅफको अनेक अडचणीला तोंड देत उभारण्यास सुरुवात झाली. शेतकऱ्यांच्या मालकीचा पाहिला एस.एस.पी. खत कारखाना होता. पारंपरिक राजकीय कारखानदारीस छेद देणारा हा प्रकल्प होता. सहकारी कारखानी क्षेत्रात शासन नियुक्त व्यवस्थापकीय संचालक म्हणून उभारणीच्या काळात मी काम पाहिले. प्रकल्प उभारणीचा खर्च जवळजवळ 20 टक्के कमी येणार होता. पहिला टप्पा मिश्रखत भाग एक उत्पादन सुरु झाले बाजारात गणेश ब्रँड खताची विक्रीही सुरु झाली.



### इंडोजर्मन टुलरुम व सिईडीटी औरंगाबाद

मराठवाड्यात फक्त कारखानदारी वाढून चालणार नाही, तर विविध प्रकल्पाला लागणारे कौशल्यपूर्ण मनुष्यबळ मराठवाड्यात तयार व्हावे व त्यास स्थानिक कारखान्यात सेवेची संधी मिळावी व रोजगार वाढावा, असा मा. बापूसाहेबांची व श्री. कै. रायभानजी जाधव साहेबांचा आग्रह असे. त्यावर सतत चर्चा करत. एम.डी.सी. ने नवे प्रकल्प सादर करावे. केंद्रशासनाची मंजूरीची जबाबदारी मा. बापूसाहेबांना सर्वस्वी घेतली होती. श्री. रायभानजी जाधव साहेबांविषयी मा. बापूसाहेबांना नितांत आदर होता. मा.श्री. रायभानजी जाधव साहेबांशी बुद्धिमत्ता, अभ्यासवृत्ती व भविष्यातील विकासाचा वेध अशा बाबीमुळे मा.श्री. रायभानजी जाधव साहेबांनी जे जे प्रकल्प एम.डी.सी. तर्फे प्रस्तावित केले, त्या प्रकल्पांना केंद्र शासनाकडून मंजूरी मिळविण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य मा.बापूसाहेबांनी केले. मा. बापूसाहेब स्वतः माझ्याबरोबर विविध केंद्रीय संबंधित मंत्रालयात येत होते. त्यांची विविध सचिवाशी जवळीक होती व सर्व सचिव मा. बापूसाहेबांच्या उमद्या स्वभावामुळे बिनदिक्कत सहकार्य करित. कारण मा. बापूसाहेबांचा विभागाचा विकास सोडून इतर स्वार्थी हेतू नसल्यामुळे सर्व कार्य सुरळीत झाले. आमच्या सर्व प्रस्तावास मा. श्री. शंकररावजी चव्हाण साहेबांचा सतत आशीर्वाद असे. इंजिनिअरींग क्षेत्रातील इंडोजर्मन टुलरुम व इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्रातील सी.ई.डी.टी. हे महाराष्ट्र नव्हे तर भारतातील मनुष्यबळे विकास प्रकल्पापैकी एक असे, अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रकल्प ठरले असून एम.डी.सी. चे

मराठवाड्याच्या विकासात फार मोठे योगदान आहे. हे प्रकल्प उभारणी प्रस्ताव समन्वय व कार्यान्वित करण्याचे भाग्य मला लागले. तत्कालीन एम.डी.सी. चे व्यवस्थापकीय संचालक श्री. अरविंद मिरीकर (आय.ए.एस.) साहेबाची यात फार महत्त्वपूर्ण भूमिका होती. तसेच 15 वर्ष उशीरा का होईना केंद्रीय प्रकल्प CIPET (Central Institute of Plastic Engineering Technology) हा सुध्दा मा. बापूसाहेबांच्या प्रयत्नामुळे औरंगाबादला कार्यान्वित झाला. असे प्रकल्प आणताना कै. मा. शंकरराव चव्हाण साहेबांचे अमूल्य सहकार्य मराठवाडा कदापीही विसरू शकणार नाही.

मा. श्री. शंकरराव चव्हाण साहेबांना आम्ही अशा नवनवीन कल्पना असलेल्या प्रकल्पा संदर्भात भेटत असू. जेव्हा इंडोजर्मन टुलरूम, CEDT प्रकल्पाची कल्पना मांडली त्यावेळेस मा. श्री चव्हाण साहेब, केंद्रीय अर्थमंत्री, नियोजन मंत्री होते व Planning Commission चे उपाध्यक्ष होते. त्यांनी त्यांच्या पी.ए. ला बोलावून सांगितले, “हे आमच्या मराठवाड्यातील अधिकारी आहेत. त्यांना प्लॅनिंग कमिशनचे प्रकल्प ग्रंथालयाला भेट देण्याची व्यवस्था करा.” मी आठ दिवस प्रोजेक्ट लायब्ररीत गेलो व अनेक प्रकल्प अहवाल चाळले. सिपेट, इंडोजर्मन टुलरूम इत्यादी प्रकल्पाची माहिती मिळाली. माझ्या शिकागो भेटीत या प्रकल्पाविषयी मला कल्पना होती.

कुशल मनुष्यबळ विकास प्रकल्प हे मराठवाड्यासाठी अति आवश्यक होते. अखेर विकास म्हणजे, रस्ते, वीज, कारखाने इतर मूलभूत सोई हा विकास नव्हे तर ज्या लोकांसाठी जे आपण करतो त्यांचा विकास, त्यांचे दरडोई उत्पन्न वाढविणे, अशी विचारधारा घेऊन आम्ही नवनवीन प्रकल्प शोधत होतो. तीन ते चार प्रकल्प मराठवाड्याच्या तरुणासाठी सर्वांच्या सहकार्याने कार्यान्वित केले.

- 1) IGTR (INDO GERMAN TOOL ROOM),
- 2) CEDT (CENTRAL FOR ELECTRONIC DESIGN AND TECHNOLOGY)
- 3) CIPET (CENTRAL INSTITUTE OF PLASTIC ENGINEERING TECHNOLOGY)
- 4) MCED (MAHARASHTRA A CENTRE FOR ENTERPRENEURSHIP DEVELOPMENT)

हे सर्व प्रकल्प राज्य व केंद्र शासन यांच्या संयुक्तरित्या कार्यान्वित झाले. ह्या प्रकल्पाची मूळ कल्पना प्रोजेक्ट रिपोर्ट, मंजुरी ही सर्व कामे मराठवाडा विकास महामंडळाने केली. मा. बापूसाहेब व मा.श्री. रायभानजी जाधव साहेब यांच्या सतत संयुक्त प्रयत्नाने हे मनुष्यबळ विकासाला चालना देणारे प्रकल्प सध्या औरंगाबादला स्थापित झाले असून आज दिमाखाने मराठवाडाच नव्हे तर महाराष्ट्राच्या विकासात मोलाची भर टाकत आहेत.

मी नशीबवान आहे की, अशा दुरदृष्टी असलेल्या मा. बापूसाहेब व मा.श्री. रायभानजी जाधव ह्यांच्या मार्गदर्शनाखाली, असे प्रकल्प कार्यान्वित करण्यास मुख्य कार्यकारी अधिकारी म्हणून सहभागी होतो.

**हजिरा - नांदेड - नागपूर गॅस पाईप लाईन :**

नैसर्गिक वायुचे महत्त्व व त्यांच्या विभागासाठी विकास प्रक्रियेत सहभाग ह्याचे महत्त्व मा. बापूसाहेबांना व मा.श्री. रायभानजी जाधव साहेब ह्यांनी त्यांच्या आमदार कालावधीत ह्या बद्दल नेहमी पोटतिडकीने प्रश्न मांडले होते; पण त्यांच्या या प्रयत्नांना चालना मिळत नव्हती.

मराठवाड्याचा विकास पर्यायाने महाराष्ट्राचा विकास या कल्पनेने बापूसाहेब भारावले होते. त्यांनी नॅचरल गॅस विषयी श्री रायभानजी जाधव बरोबर चर्चा केली आणि असा विचार मांडला, की MDC मार्फत



तसा प्रयत्न व्हावा. मी सर्वोत्तोररी केंद्रीय मान्यतेसाठी व पार्ठीब्यासाठी प्रयत्न करतो.

आम्ही ह्या संदर्भात तत्कालीन अर्थमंत्री मा. श्री. शंकररावजी चव्हाण साहेबांना भेटलो व ह्या संदर्भात चर्चा केली. श्री शंकरराव चव्हाण साहेबांनी तात्काळ संबंधित मंत्र्यांच्या अधिकाऱ्यांना त्यांच्या सचिवा मार्फत इंजिनिअर्स इंडिया लि. च्या चेअरमनला निरोप पाठविला व आम्हाला दुसऱ्या दिवशी त्यांना भेटण्यास सांगितले.

आम्ही दुसऱ्या दिवशी इंजिनिअर्स इंडिया लि. ह्या कंपनीच्या हेड ऑफिसला गेलो. सकाळी 11 वाजता आम्ही कार्यालयाच्या मुख्य दरवाजासमोर गेलो तर काय आश्चर्य तीन ते चार उच्चस्तरीय अधिकारी आमच्या स्वागतासाठी उभे होते. आम्हालाच कसे तरी वाटले. स्वागत केल्यानंतर आमची E.I.L. चे चेअरमन मॅनेजिंग डायरेक्टर इंजिनिअर्स इंडिया लि. चे चेअरमन ह्यांनी श्री चव्हाण साहेबांचे आभार मानले व आम्हाला महाराष्ट्राच्या विकासासाठी काम करण्याची संधी मिळाली. आम्हाला आणखी आश्चर्य वाटले. मा. श्री. बापूसाहेबांशी ते सर्व वरिष्ठ अधिकारी खेळीमेळीच्या वातावरणात चर्चा करत होते.

**पुढे हा रिपोर्ट तयार झाला.** त्याकाळात 15,000 कोटींची गुंतवणूक असलेले प्रकल्प मराठवाडा, विदर्भ व उत्तर महाराष्ट्र भागातून जाणारी हाजिरा, नांदेड, नागपूर भागातून जाणारी गॅस पाईप लाईन टाकण्याचा प्रारूप अहवाल तयार झाला. या प्रकल्पामुळे या मागासलेल्या विभागाचा कायापालट झाला असता. रोजगार निर्मिती झाली असती. खत कारखाने, रिफायनरी, प्लास्टीक उद्योग, घरगुती गॅस पाईप लाईन इत्यादी कारखान्यांचे जाळे पसरविणारे असा हा फार महत्वाकांक्षी प्रकल्प अहवाल होता.



राज्य व केंद्र सरकारकडे आम्ही खूप पाठपुरावा केला. तीन ते चार वर्षात अनेक राजकीय घडामोडी झाल्या व हा अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रकल्प सुरु होऊ शकला नाही, हे आपले दुर्दैव.

### विकासाचा पाया - शैक्षणिक क्षेत्र - ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ

सर्व सामान्यांना, ग्रामीण भागातील युवकांना गुणवत्तापूर्वक शिक्षण मिळावे, अशी बापूसाहेबांची मनोधारणा होती. मा. बापूसाहेबांच्या या कल्पनेचे मूळ 1983 साली धरले. ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ स्थापन केल्यानंतर एक शिक्षण विकासाच्या ध्येयाने भारावलेली टीम त्यांनी तयार केली. मराठवाड्यातीलच उच्च शिक्षित प्राध्यापक व या मिशनला पूर्ण समर्पित टीम असे मा. बापूसाहेबांच्या नेतृत्वाखाली ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळचे रोपटे लावले. प्राध्यापक निवडीत गुणवत्ता हाच निकष ठेवला. नातेगोते, मित्रमंडळी, शिफारस या बाबी त्यांच्यापासून कोसो दूर होत्या. आदर्श व गुणवत्तापूर्वक शिक्षणाचे निकष कायम ठेवल्यामुळे आज ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ ही एक आदर्श संस्था म्हणून केवळ मराठवाड्यात नाही तर महाराष्ट्रात नावारुपाला

आली व आज दिमाखाने उभी आहे.

मा. बापूसाहेब हे उच्च तंत्रशिक्षण मंत्री म्हणून स्व. वसंतदादा पाटील यांच्या मंत्रीमंडळात कार्यरत असताना इंजिनिअरींग कॉलेज खाजगी संस्थांना चालविण्यास परवानगी द्यावी, असा धोरणात्मक निर्णय झाला. मा. कमलकिशोर कदम, मा. श्री. वाय. पाटील, मा. श्री. विश्वनाथराव कऱ्हाड इत्यादी मंडळी मा. वसंतदादानीही या संदर्भात चर्चा करून त्यांना खाजगी इंजिनिअरींग कॉलेज चालविण्यास परवानगी दिली, हे सर्व प्रस्ताव मा. बापूसाहेब यांच्या सहभागाने मंत्रीमंडळाच्या मंजूरीसाठी जात असत व पुढे या सर्व संस्था नावारुपाला आल्या.

आम्हीही मा. बापूसाहेबांना परभणीसाठी इंजिनिअरींग कॉलेज घ्यावे, असा अनाहूत सल्ला दिला; पण बापूसाहेबांनी उच्च तांत्रिक शिक्षण ऐवजी आपण जनरल एज्युकेशमध्ये गुणवत्तापूर्वक काम करू. इंजिनिअरींग कॉलेज यासाठी गुंतवणूक मोठी असून आमच्या भागात तशी क्षमता कमी आहे. अर्थ व्यवहार फार मोठा असल्यामुळे बापूसाहेबांना ते योग्य वाटले नाही व रसही घेतला नाही.

ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळाच्या माध्यमातून मा. बापूसाहेबांनी गुणवत्तापूर्वक शिक्षणाचे दालन सामान्य लोकांसाठी उघडे केले. गोरगरीब गरजू मुलांना अशी संधी उपलब्ध करून दिली. आज ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ एक शिक्षणाचे तीर्थक्षेत्र व आजच्या भाषेत ब्रॅण्ड नाव आहे. सर्व प्राध्यापक संच व कर्मचारी एक मिशन म्हणून आजही कार्यरत आहेत. ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळामध्ये नियुक्त्या या अर्थपूर्ण नसल्यामुळे अनेक सगेसोयरे, संधीसाधू मित्र हे मा. बापूसाहेबांवर नेहमी नाराज असत. त्याचा त्यांच्या राजकारणावर परिणाम होत होता, हे जाणून देखील या बाबतीत तडजोड केली नाही. म्हणून आज या शिक्षण संस्थेची शिक्षण क्षेत्रांत नामवंत संस्थेपैकी एक अशी गणना होते.

मी दिल्लीला सी.इ.डी.टी. प्रकल्पासाठी फॉलोअप म्हणून जात असे. तिथे चर्चेत D.O.E. (Department of Electronics) चे वरिष्ठ संचालक श्री ओबेराय साहेबांना त्यांच्या खात्याचे कंप्युटरमधील काही कोर्सेस एम.जी.एम. व डी.एस.एम. ला सुरु करण्यासाठी विनंती केली. तेव्हा स्व. राजीवजी गांधी पंतप्रधान यांनी रुजविलेली Computer Revolution रोपटे भारतात मूळ धरू लागली. संगणक क्रांती ही तिसरी जागतिक क्रांती होती. तेव्हा पंतप्रधान राजीव गांधी म्हणायचे we missed two buses, but we should not miss third bus i.e. computer and electronics revolution या धोरणाशी सुसंगत Electronics Ministry ने बरेचसे कोर्सेस भारतात राबविण्यास सुरुवात केली होती. ती खरीच Blood less revolution होती. एक नवचैतन्य भारतात निर्माण झाले होते.

श्री ओबेराय यांचा मी एम.जी.एम. औरंगाबादला कार्यक्रम घेतला. तेथील अद्यावत सुविधा पाहून त्यांना नवीन कोर्सेस देण्यास काही अडचण आली नाही; पण जेव्हा ते माझ्याबरोबर परभणीला ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळात आले तर त्यांना आश्चर्य वाटले. ना इमारत ना विकसित परिसर सर्व क्लास साध्या टिनच्या खोल्यात चालत असत. बापूसाहेब यांचे नाव त्यांना माहीत असल्यामुळे ते साध्या ऑफीसमध्ये प्रथम आले. चर्चा झाली. नंतर त्यांना संगणक विभाग दाखविला. त्यांना फार अवघडल्यासारखे वाटू लागले; पण ते जेव्हा कंप्युटर लॅबमध्ये गेले तर दंगच राहिले. टिनच्या रुममध्ये Latest Computer सुसज्य Computer Lab, तज्ज्ञ शिक्षक पाहून दंग झाले.

जेव्हा कंप्युटर विकासाचे वारे सर्व क्षेत्रात वाहत होते; पण मूलभूत सोईच्या अभावामुळे विकास होत नव्हता त्या काळामध्ये मा. बापूसाहेबांच्या दुरदृष्टीमुळे शैक्षणिकदृष्ट्या अत्यंत मागासलेल्या परभणी जिल्ह्यात इवलेसे रोप मा. बापूसाहेबांनी लावले. जिल्ह्यातील सर्व सामान्य जनतेच्या आर्थिक परिस्थितीमुळे आपल्या पाल्यांना शहरामध्ये उच्च शिक्षणासाठी पाठवू शकत नव्हते, हे लक्षात घेऊनच मा. बापूसाहेबांनी ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळाच्या माध्यमातून ज्ञानगंगेचा उगम सुरु केला. प्रस्थापित प्रथेनुसार बापूसाहेबांचा “अर्थकारण” हा उद्देश नव्हता; पण त्याऐवजी “ज्ञानकारण” हा उद्देश होता. सामान्य कुटुंबातील गरीब व होतकरु विद्यार्थ्यांना गुणवत्तापूर्वक शिक्षण देण्याचे त्यांनी व्रत घेतले होते. ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळाच्या इवल्याश्या रोपाचा आज मोठा वटवृक्ष तयार झालेला आहे.

प्राध्यापक भरतीमध्ये मा. बापूसाहेब यांनी तज्ज्ञ प्राध्यापकांची व विना शिफारशीने फक्त गुणवत्तेच्या आधारावर निवड केलेली आहे. तिथे सोयरेधायरे, अर्थहितकारण इत्यादी बाबींना त्यांच्याकडे मुळीच थारा नव्हता. त्यांच्यामुळे आज शिक्षणाच्या अनेक शाखा याप्रमाणे 16 शाखांचे पदव्युत्तर शिक्षण तज्ज्ञ व पीएच.डी. धारक प्राध्यापकांद्वारे शिक्षण दिले जाते. ही एक आजच्या काळात दुर्मिळ बाब आहे.

त्यांच्या व्यक्तिगत जीवनातील आणखीन हृदयद्रावक प्रसंग म्हणजेच त्यांची कन्या रुपालीचे निधन. मी त्यावेळेस परभणीत त्यांच्याकडे राहत असे. आठवड्यातले तीन ते चार वेळा पॅफको कं. च्या निमित्ताने मी मुक्कामी मा. बापूसाहेबांच्या घरीच असायचो. मी पॅफको कं. चा शासन नियुक्त मॅनेजिंग डायरेक्टर होतो. मा. बापूसाहेब शासनाचे अनुदान, शेअर्स गोळा करणे, बँक कर्ज इत्यादी कामाच्या निमित्ताने मुंबई, दिल्लीचा दौऱ्यास असत. खत कारखान्याची उभारणी चालू असल्यामुळे मी जितूरला काम पहात होतो.

मा. बापूसाहेबांचा एक वेगळा विचार प्रवाह अनुभवास आला. ते स्वतः जमीनदार व गर्भश्रीमंत कुटुंबातील आहेत; पण त्यांचे मन मोठ्या घराण्यातील मित्रांमध्ये जास्त रमलेले दिसले नाही. माझ्या ५ वर्षांच्या सानिध्यात त्यांचे मित्र हे कष्टकरी, मध्यम वर्ग, छोट्या कुटुंबातील होते. ते गरीब माणसात जास्त रमत असायचे.

माझे वडील मराठवाडा मुक्ती संग्राम स्वातंत्र्य सैनानी दिपाजी पाटील त्यांना नेहमी काँग्रेसमधील कम्युनिस्ट म्हणत. कारण त्यांचा राजकीय प्रवास पारंपरिक नव्हता. मोठ्या व प्रस्थापित लोकांचे राजकारण त्यांना मान्य नव्हते. ते गरीब कामगार, दलित व मध्यम वर्गाच्या लोकांना न्याय देण्याचे राजकारण करत असत.

त्यांचा राजकीय प्रवास अनेक चढउतार, खडकांनी भरलेला होता. “राजकारण” याची व्याख्या ते सतत करीत असत. असे राजकारणासाठी राज्य करणे, हे त्यांना मान्य नव्हते. एक ध्येय, उद्देश व मिशन म्हणून राजकारण करण्यास त्यांचा नेहमी अट्टहास होता व आहे.

मा. बापूसाहेबांनी काँग्रेस आमदार, मंत्री, मार्केटींग फेडरेशनचे अध्यक्ष, पक्षाचे सरचिटणीस, पक्षाचे उपाध्यक्ष असे अनेक महत्त्वाचे पद भुषविले; पण या कालावधीत त्यांच्याकडे बोट दाखवावे, असे एकही उदाहरण पहावयास मिळाले नाही. उलट असे साधु संत “अर्थकारणाशिवाय” हे राजकारण करतात, हे पाहून अनेकांना आश्चर्य वाटायचे अनेक पक्षाच्या मंत्र्यांनी व कार्यकर्त्यांनी त्यांना “अर्थकारण” युक्त राजकारण करण्यास आग्रह धरला; पण त्यांनी आपल्या वैचारिक बैठकीला तसुभरही सोडचिठ्ठी दिली नाही. त्यांचे खरे

राजकीय गुरु म्हणजे कै. मा. श्री. शंकरराव चव्हाण साहेब व मा. श्री. लिंबाजीराव दुधगावकर (त्यांचे जेष्ठ बंधू), मा. बापूसाहेबांनी कै. मा. श्री. शंकरराव चव्हाण साहेबांचा वैचारिक वारसा अनेक वर्षे चालविला, ते त्यांचे राजकारणातील अटल व दीपस्तंभ होते. आपल्या शिक्षणाचा, राजकारणाचा, अभ्यासाचा फायदा हा गोरगरीब सामान्य जनतेला झाला पाहिजे, असे त्यांना वाटे.

त्यांच्या राजकीय मिशन प्रवासात आजपर्यंत सामान्य मनुष्य हे केंद्रबिंदु. त्यांनी विशिष्ट परिस्थितीत काँग्रेस सोडली नंतर शिवसेना सोडली, आज ते राष्ट्रवादी या पक्षात मा. शरदचंद्रजी पवार साहेब यांच्यासोबत आहेत; पण त्यांनी त्यांच्या विचारांचा केंद्रबिंदु बदलला नाही. मा. बापूसाहेब व भ्रष्टाचार याचा 36 चा आकडा आहे. अनेक मित्र व हितचिंतकांनी त्यांना पैसे कमविण्याचे अनेक मार्ग दाखविले; पण त्यांचे नेहमीच असे सांगणे, की राजकारण हा काय व्यवसाय नाही. मा. बापूसाहेबांच्या राजकीय, आर्थिक, वैयक्तिक जीवनात अनेक मित्र सगोसोयरे आले व गेले. आजही त्यांची वैचारिक बैठक ज्यांना मान्य होती व आहे ते आजही त्यांच्याबरोबर आहेत; पण प्रमाण कमी झाले.

मा. बापूसाहेब ज्या राजकीय परिस्थितीत, सामाजिक परिस्थितीत उदयाला आले तो काळ झपाटलेला होता. मा. यशवंतरावजी चव्हाण यांचा वैचारिक खरा वारसा चालविणारे प्रत्येक जिल्ह्यात मोठमोठे नेते झाले. 1960 ते 1980 या काळात, हे कार्य म्हणजे क्रांतीचा काळ होता. अनेक ग्रामीण भागातील बहुजन समाजाचे नेते एक मिशन म्हणून राजकारणात काम करत. त्यापैकी मा. बापूसाहेब होते. समाजाचे काही देणे लागते या विचाराचा मोठा प्रभाव त्यांच्या कार्यशैलीवर दिसून येतो. “अर्थकारण” या विचाराचा प्रभाव महाराष्ट्रातील नेतृत्वावर झाला होता. म्हणून महाराष्ट्र हे देशातील एक अग्रगण्य राज्य म्हणून उदयास आले.

हे काही असले तरी बापूसाहेब आजही आमच्यासारख्या मित्रांस एक आदर्श नेता, आदर्श समाजकारणी म्हणून दीपस्तंभासारखे आहेत. आजच्या या राजकारणात ते सर्वाना Out Dated वाटत असले तरी, त्यांचा विचार व त्यांच्या ध्येय, धोरणासाठी जीवनभर कष्ट करत राहणे, ते विसरण्यासारखे आहे? ते नेहमी समाधानी हसतमुख व मिळावू वृत्तीचे आहेत. त्यांचा मित्रमंडळ परिवार हा साहित्य, खेळ अशा विविध क्षेत्रातही आहे. त्यांचे स्नेहाचे संबंध सर्व स्तरातील लोकांबरोबर आहे. त्यांची प्रकृतीही वाखाण्यासारखी आहे. ते आजही तितकेच अॅक्टीव्ह आहेत जसे 1970 मध्ये पहावयास मिळाले. त्यांच्या बरोबरचा मैत्रीचा प्रवास माझ्यासारख्या सामान्य मित्रांसाठी हा प्रेरणादायक व दीपस्तंभासारखा ठरला.

मा. बापूसाहेबांच्या या प्रवासामध्ये त्यांना सौ. संध्याताई वहिनीसाहेब यांचे मोलाचे सहकार्य व पाठींबा मिळाला. त्यांनी ज्या कणखरपणे, वेळोवेळी त्यांना साथ दिली व एक व्रत म्हणून पाठीशी उभ्या राहिल्या. त्यांचे कौतुक करावे तेवढे कमीच.

अशा आमच्या अद्वितीय, सरळ, स्वच्छ मनाच्या मित्राच्या अमृतमहोत्सवा निमित्त शुभेच्छा ! त्यांचे उर्वरित आयुष्य आनंदी व आरोग्यदायी जावो, हीच ईश्वर चरणी प्रार्थना.

मी फार भाग्यवान आहे की, मला आयुष्यात अशा मित्राची साथ मिळाली आहे व पुढे मिळतही राहील.

धन्यवाद !



# मुल्याधिष्ठीत राजकारण करणारा लोकनेता : बापूसाहेब

समीर गणेशराव दुधगांवकर

M.S. Mech Engg. USA | Doubling of Jobs संकल्पना सुचक

सन 2002 पासून श्रीमदभगवद्गीता अभ्यासक | भाजपा परभणी जिल्हा जनसेवक

उपाध्यक्ष (2014-2018) सन 1927 स्थापित महाराष्ट्र चेंबर ऑफ कॉमर्स इंडस्ट्री अँड अँग्रीकल्चर. राज्य वाणिज्य शिखर संघटना

तुमची पंचाहत्तरी येणार म्हणून जानेवारी 2020 मध्ये टीम समीर दुधगावकरने कृतज्ञता व्यक्त करण्यासाठी हा सोहळा मोठा झालाच पाहिजे यासाठी तयारी सुरु केली. परंतु लगेच लॉकडाऊन आले आणि त्यानंतर ब्रेक लागत-लागत आता 2022 च्या शेवटी कार्यक्रम होण्याच्या मार्गावर आहे.

साहेबराव लबडे काका जे की तुमच्या आईच्या मामाचे पुत्र आहेत, त्यांच्या लिखाणात माझा आणि मधुरा ह्या तुमच्या दोन अपत्यांबद्दल लिहिताना संत तुकाराम महाराज यांच्या 'शुद्ध बिजापोटी फळं रसाळ गोमटी' असे उद्गार काढले ते वाचून छान वाटले आणि जबाबदारी वाढली हे ही नक्कीच. माझे विचार आणि अनुभव वाचणार्यांना सुद्धा छान वाटतील अशी अपेक्षा करतो आणि पुढचे लिहितो.

श्री. गणेशरावांचा गौरव ग्रंथ म्हणजे एका व्यक्तीने आयुष्यभर केलेल्या प्रामाणिक प्रयत्नांसाठीचा गौरव ग्रंथ. गणेशरावांचा गौरव ग्रंथ म्हणजे GGG..!! हे असे लिहिण्याचे कारण म्हणजे युवा पिढी सध्या RRR पिकचर पाहून खूपच जास्त उत्साहित होत आहे; तश्याच खर्या माणसाची गाजलेली उत्साह वाढवणारी अशी गणेशराव यांची खरीखुरी कहाणी नागरिक म्हणुन मला उत्साहित करुन गेली आणि जो समजून घेईल त्यालाही उत्साहित करेल हा विश्वास आहे. RRR छान होता आणि त्याला जनतेचा आशीर्वाद मिळाला (movie खूप चालला..) 52 वर्षे मेहनत घेणाऱ्या अश्या व्यक्तीच्यासाठी बनलेल्या GGG साठी आणि सत्य आग्रह अमृत महोत्सव कार्यक्रमासाठी अनेकांचे शुभाशिर्वाद असतील हा विश्वास आहे.

सन 1927 स्थापित महाराष्ट्र चेंबर ऑफ कॉमर्स इंडस्ट्री अँड अँग्रीकल्चर या राज्य शिखर संघटनेचे राज्य उपाध्यक्ष म्हणुन मी कार्य करित असतांना संपर्कात आलेले माजी केंद्रीय मंत्री आरिफ मोहम्मद खान साहेब यांच्या एका लेक्चर नंतर त्यांच्या व्यक्तिमत्त्वाचा प्रभाव माझ्यावर पडला. जितूर विधानसभा भाजपाकडून

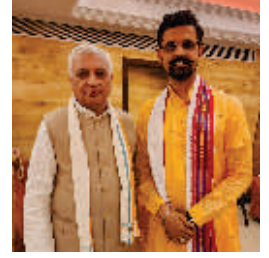


लढण्यासाठी एक युवक म्हणुन प्रयत्न करतांना खान साहेब यांनी मला चांगली मदत केली होती. तुम्ही पण एक गाजलेले नेतृत्व आहात म्हणुन खान साहेब तुमच्या अमृत महोत्सव कृतज्ञता सोहळ्याचे अध्यक्ष झाल्यास तुमचा योग्य सन्मान होईल असे टीम समीर यांना वाटले. केरळ राज्याचे महामहिम राज्यपाल असूनही आरिफ मोहम्मद खान साहेब यांच्या सारख्या व्यस्त नेत्याने मोठ्या मनाने कार्यक्रमाचे अध्यक्ष होण्याचे मान्य केले.

काँग्रेस पक्ष चुकीचा वागत आहे म्हणून तुम्ही दोघांनीही एकाच वर्षी काँग्रेससोबत लढाई केली. इतर लेखकांनी मांडले आहेच की 1985 च्या विधानसभा निवडणुकीत तुम्ही आमदारकी ची काँग्रेस ची अनेक तिकिटे तुमच्या सांगण्यात दिली होती आणि तुम्ही सगळ्यांना निवडून पण आणले होते. तुम्ही निवडून आणलेल्या गमे काका ह्यांचा 1987 मध्ये दुर्दैवी मृत्यू झाला म्हणून सिंगणापूर मतदारसंघात पोटनिवडणूक

लागली. 1987 च्या ह्या पोटनिवडणुकीमध्ये काँग्रेसने दिवंगत आमदार गमे काका यांच्या मृत्यूनंतर त्यांच्या पत्नीला तिकीट द्यावे असे तुमचे म्हणणे असताना सुद्धा फक्त तुमच्यावर अन्याय करायचा ही बाब मनात ठेवून, तुमचं खच्चीकरण करायचं हे समोर ठेवून इतरांना तिकीट देण्यात आले असे जाणकार मांडतात. असा आकस ठेवून केलेला अन्याय लोकशाहीमध्ये सहन करण्याची गरज नसते हे शिकवणारे तुम्ही!! तुम्ही तुमचे शिष्य सुरेश वरपूडकर ह्यांना अपक्ष उभे केले आणि अभूतपूर्व असा अपक्षाचा विजय घडवून आणलात. हि कहाणी राज्यभर गाजली होती. हे मी लहान असतांना पासून खूप ऐकले होते.

अरिफ मोहम्मद खान हे केंद्रीय मंत्री होते. त्यांनी देखील 1987 ला काँग्रेसचे काही निर्णय पटले नाहीत म्हणून एकदम तरुण वयात केंद्रीय मंत्री असताना देखील राजीनामा देऊन काँग्रेस सोडली होती. सध्याची 2022 मध्ये जी भाजपाची परिस्थिती आहे, देशातील सर्व निवडणुकांमध्ये भाजपा विजयी पक्ष म्हणून समोर येतो आहे, उत्तर प्रदेश सारखे राज्य देखील योगी जी आणि मोदी जी यांच्या टीमने जिंकले आहेत अशी तत्कालीन 1987 मध्ये ताकद असलेल्या त्या



काळच्या काँग्रेस पक्षाच्या विरोधात जाणे, पक्ष चुकत असताना तसे कणखरपणे मांडणे - असे करण्याची हिंमत असणारे तुम्ही दोघे हे निश्चितच गर्व वाटण्यासारखी गोष्ट आहे. Power corrupts and absolute Power absolutely corrupts असे म्हणतात. Corrupt वागणाऱ्या काँग्रेस पक्षाला न जुमानता तुम्ही दोघे एक मोठे उदाहरण युवकांच्या पुढे घालून दिले आहे आणि म्हणून तुमचा गर्व गौरव होणे योग्य आहे.

तुमचा मुलगा म्हणून आणि वाणिज्य क्षेत्रात राज्य संघटनेचे उपाध्यक्ष म्हणून कार्य केलेला व्यक्ती म्हणून काही ऑब्झर्वेशन या लिखाणातून व्यक्त करणार आहे. श्री. गणेशराव यांचा नेता म्हणून गौरव करण्यासारख्या खूप साऱ्या गोष्टी आहेत त्या येथे मांडत आहेत. सन्माननीय माणूस कसा जगला पाहिजे, गौरव कुणाचा केला पाहिजे हे श्रीमद्भगवद्गीतेमध्ये सांगितले आहे.

आता जवळपास सर्वच जण जाणतात की मी अमेरिकेमध्ये मला जेव्हा काही अडचणी आल्या तेव्हा मार्गदर्शन घेण्यासाठी थेट देवालाच विचारावं म्हणून सन 2002 पासून श्रीमद्भगवद्गीतेचा अभ्यास सुरु केला. त्या श्रीमद्भगवद्गीतेतील एक श्लोक शिकवतो की एका सन्माननीय व्यक्तीसाठी बदनामी ही मरणापेक्षाही वाईट.! बापूसाहेब आपण कायमच हे विचार मनात ठेवून जगण्याचा प्रयत्न करणारी व्यक्ती हे मीच काय पण संपूर्ण महाराष्ट्र जाणतो. एक हिंदू म्हणून ह्या श्लोकावर आधारित खूप गौरव वाटावं अशा पद्धतीने तुम्ही जगले आहात.

तुमच्या काही साथीदारांनी सांगितलेल्या माहितीप्रमाणे तुम्ही खासदार असताना बियरच्या बाटल्यांवर हिंदू देव-देवतांची चित्रे जेव्हा लावण्यात आली तेव्हा त्याविरोधात आवाज उठवणारे पहिल्या व्यक्तीपैकी एक म्हणून आपण पुढे आलात. म्हणजे त्या श्लोकात सांगितले तसे हिंदू म्हणून आयुष्य जगण्याचा प्रामाणिक प्रयत्न केलात आणि देवतांचा मुद्दा आला तेव्हाही गर्व वाटेल असे वागलात. आपल्या परिवाराने परभणी, हिंगोली आणि जालना ह्या परिसरामध्ये फक्त हजारो एकर जमीनच नाही सांभाळली किंवा परिसरातील सर्वांची रझाकारीत काळजी घेणे, सर्वांचा आदर करणे या गोष्टी सुद्धा केल्या आणि हिंदू म्हणुन योगदान सुद्धा आवर्जून दिले. ह्यासाठी माझ्या पणजी तानुबाई ज्ञानोबा पाटील परिवाराबाबत गर्व आणि तुमच्याबद्दल एक दुर्मिळ असा नेता म्हणून आदर वाटतो.

एक चांगला नेता म्हणून तुमच्याबद्दल अनेक गोष्टी माझ्या ऐकिएवत होत्याच. प्रज्ञावंताचे आभार मानले पाहिजेत, यांची पूजा केली पाहिजे असे श्रीमद्भगवद्गीतेतील एक श्लोक सांगतो. हे सर्व मनात असल्यामुळे टीम समीरला जानेवारी 2020 मध्येच हे सर्व सुचले होते की अमृत महोत्सव निश्चितच केला पाहिजे. पारिवारिक न ठेवता फक्त नेता म्हणून तुमचे आभार मानले पाहिजेत म्हणून येथे व्यक्त करण्याची संधी मी लेखाच्या रूपाने घेत आहे.

तुमच्या प्रामाणिक प्रयत्नांच्या उदाहरणामुळे आणि चांगल्या रोल मॉडेल्स कडून शिकून आज मी काही चांगले करू शकलो. राज्य शिखर संघटनेचे उपाध्यक्ष होणे किंवा त्या पदावर कार्य करत शिक्षणक्षेत्राला उद्योग क्षेत्राशी जोडण्याचे सगळ्यात मोठे काम चेंबरने केलंच पाहिजे असा हट्ट धरून मी काम केले. त्या क्षेत्रात खूप मोठ्या स्तरावर काम करणे किंवा देशाचे भले करणाऱ्या बाकीच्या पॉलिसीज साठी प्रयत्न करणे - हे जे काही करू शकलो त्यामागील इन्स्पिरेशन म्हणजे तुम्ही सगळे ग्रेट लोक आहात.

ईतर लेखात लिहिल्याप्रमाणे त्या काळात काही संधीसाधु लोकांनी तुमच्या मागे-मागे राहून, तुम्हाला धोका देऊन, फायदे काढून घेऊन रंकाचा राजा झाले. मात्र ते आज असं बोलतात, वागतात जसे की ते गेल्या शंभर पिढ्यांपासून श्रीमंत आहेत आणि कोणाचीच मदत न घेता पुढे आलेले लोक आहेत. अशा लोकांविषयी काय बोलणार? त्यापेक्षा तुमच्यासारख्या प्रामाणिक जनसेवा, (न खाता मेवा) अश्या योग्य गोष्टींचा आग्रह धरणाऱ्या व्यक्तींचा गौरव करणे कैक पटिने संयुक्तिक!

त्या काळातील वातावरणच वाईट होते. मग त्यात पंतप्रधानपद स्वतःकडे हिसकावून घेणारी व्यक्ती असो किंवा 1975 ची आणीबाणी लावणारी व्यक्ती असो; अशा वाईट काळात देखील तुमच्यासारखी चांगली उदाहरणे सांगूनही लोकांना समजत नव्हती. काही जणांचा स्वभाव गुणच असतो किंवा सतीश सातोनकर म्हणतात तसं बिब्याचा मूळ गुणधर्म आपल्याला चांगला माहित असून देखील आपण आपले सत्कर्म करत राहिलात. काँग्रेसच्या अनेक चुकीच्या निर्णयानंतर तुम्ही जनतेसाठी लढाई चालूच ठेवली आणि त्याकरिता तुमचा गौरव हा यथोचितच व्हायला हवा..

गौरव तुमच्यासारख्या लोकांचा करायचा नाही तर मग कुणाचा करायचा? बँक लुटणारे, लोकांच्या विम्याचे घोटाळे, राशनचे घोटाळे करणारे किंवा कधीकाळी सामान्य असणारी व्यक्ती जी आता भ्रष्टाचार करून गडगंज संपत्तीची मालक बनली आहे अशा लोकांचा करायचा का ?

बापूसाहेब, तुमच्याबाबत लिहीण्यात आलेले काही लेख वाचल्यानंतर असे जाणवते की तुम्ही नेता म्हणून कार्य करत असताना खूप बिझी होतात, वडील म्हणून कमी वेळ दिलात (तुमच्या मुलांबाबत 95% लेखकांनी उल्लेख नाही); परंतु चांगला समाज घडवावा, समाजाचे भले करावे या गोष्टीने तुम्ही भारावलेले होतात. कारण



लहानपणी पासून वेगवेगळ्या सभा ऐकून तुमच्यावर त्यांचा प्रभाव पडलेला होता. त्यामुळे कदाचित तुम्ही घराकडे थोडंसं दुर्लक्ष केलं. तुमचे साथीदार तुमच्या वागण्याबाबत, स्वभावाबाबत तक्रारीचा सुर धरतात पण हे पण तितकेच खरे की तुमच्या इतकी जनसेवा करणारी उदाहरणे हाताच्या बोटावर मोजण्याइतकी आहेत आणि परभणी मध्ये तर मागील अनेक पिढ्यात कदाचित नाहीत सुद्धा.!

ह्याचा अर्थ असा नाही की तुमचे काही अंदाज चुकत नाहीत किंवा तुम्ही देव आहात.

**उदाहरणार्थ :-** शरद पवार ह्यांच्याकडे जाण्याचा 2014 मधला तुम्हा शिवसेनेच्या तत्कालीन 2/3rd खासदारांचा विचार नंतर गुंडाळला गेला. बाकीच्यांनी सेनेत राहणे पसंद केले पण तुम्ही शिवसेनेच्या नेतृत्वाकडून अयोग्य हाताळणी अमान्य आहे ह्या मुद्द्याला प्रामाणिक राहिलात, अन्यथा तुम्ही आजतागायत परभणी खासदार असता !! शरद पवार यांच्या सोबत झालेल्या चर्चेवर विश्वास ठेवून 2014 मोदी लाटेतील आंधळ्यास सुद्धा दिसणारी सेना खासदार होण्याची संधी नाकारलीत. पण शरद पवार यांची यामागची खेळी लक्षात आली नाही आणि त्यांनी तुम्हाला खासदार निवडणूक लढण्यासाठी संधी देण्याचा शब्द मोडला.

मी 2017-18 पासून मांडत होतो की मला स्वतःला भाजपाचे काम वाढवायचे आहे, नरेंद्र मोदीजींना मदत करायची आहे. संपूर्ण मुद्दे समजावून चर्चा केले, शरद पवार ह्यांनी तुम्हाला कसे फसवले हे सांगितले आणि राष्ट्रवादीचे तत्कालीन नेते तुमच्या सारखे उत्तुंग कर्तृत्व असणाऱ्या नेत्याला सुद्धा मुद्दाम ignore करत होते. जनतेच्या भल्यासाठी आपण भाजपालाच मदत केली पाहिजे हा मुद्दा तुमच्या समोर अनेकदा मांडून देखील तुम्ही अजिबातच त्यामध्ये लक्ष घातले नाही. शरद पवार ह्यांची वाट पाहत राहिलात. तुमचा पण विश्वासघात झाला आणि माझी पण संधी गेली.

तुम्ही मांडलेला सेना नेतृत्वाकडून अयोग्य वागणूक हा मुद्दा घेवूनच शिंदे गट 2022 मध्ये बाजूला झाला, जो मुद्दा तुम्ही 2012 मध्येच मांडला होता.

खूप जणांना बऱ्याचदा वाटते की तुम्ही खासदार म्हणून संसदेत अप्रतिम काम करत होतात, लोकांचे भले केलेत, कामांची यादी [www.Dudhgaonkar.in](http://www.Dudhgaonkar.in) वर कायम राहिल, पण मोदी साहेबांच्या सरकारमध्ये तुमच्या सारख्या महाराष्ट्र गाजवलेल्या नेत्याकडून खासदार म्हणून अगणित कामे झाली असती. असो....!

ज्यांना कम्युनिटीचं पडलेलं आहे ते कम्युनिस्ट अशी सोपी व्याख्या पद्मविभूषण जग्गी वासुदेव म्हणतात. मराठवाडा मुक्ति संग्राम स्वातंत्र्य सैनिक दिपाजीराव सूर्यवंशी काकांचा अनुभव होता की तुम्ही फक्त गरिबांसाठी जगणारे व्यक्तिमत्व असल्यासारखं कायम झपाटलेले होतात. तुम्ही काँग्रेसमध्ये जरी असले तरी तुम्हाला काँग्रेसमधील कम्युनिस्ट असे दिपाजीराव सूर्यवंशी काका म्हणायचे.

जेव्हा मुलाच्या आकांक्षा समजावून न घेण्याचे तुमचे वागणे पाहता मला वाईट वाटायचे तेव्हा मी कित्येक वर्षे एक वाक्य वापरून स्वतःची समजूत काढायचो “समीर, तू मुलगा म्हणून फार काही अपेक्षा त्यांच्याकडून ठेवू नको ते तुला मदत करत नाही कारण त्यांना समाजाचेच पडले आहे. ते कम्युनिस्ट आहेत !”

माझी आणि सूर्यवंशी काकांच्या वडिलांची भेट जरी झालेली नसली तरी तेव्हा ती पिढी असो किंवा आजची पिढी असो पण तुम्ही नातं-गोतं न बघता फक्त कार्य करत राहता हाच बघणार्यांचा अनुभव आहे. सुभाष सूर्यवंशी काकांच्या वडिलांची आणि माझी कधी भेट नाही झाली 😊 क्वा सामाजिक चर्चा झाली नाही पण त्यांचा आणि माझा तुमच्याबाबतचा ठोकताळा सारखा निघाला..!!

माझ्यासारख्या निर्व्यसनी, स्वकर्तृत्व दाखवलेल्या युवकाला पटकन मदत करून आपण आमदार होण्याची संधी मिळवून दिली असती तर माझ्या परदेशातील शिक्षणाचा, उद्योग क्षेत्रातील अनुभवाचा आणि कदाचित भाजपामध्ये मेगाभरती मुळे (इतर पक्षातील बदनाम लोक भाजपात घेऊन तिकीट दिल्यामुळे भाजपचे सरकार तीन वर्षे बनू नाही शकले) जे सरकार महाराष्ट्रमध्ये तीन वर्षे येऊ नाही शकले ते नुकसान पण



टळले असते. त्यामुळे तुमची तशी मदत आणि आशिर्वाद हे कदाचित राज्यातील भाजपचे सरकार तेव्हाच 2019 मध्येच येण्यास कारणीभूत ठरू शकले असते आणि पक्ष/जनता अडचणीत आले नसते, तो भाग वेगळा.!

फलस्वरूप मुलाला मदत न करण्याने माझी 2019 ची जिंतूर आमदारकीची संधी गेली. भाजपासुद्धा बहुमतापासून तीन वर्षे दुर राहिली. दोन त्रितीआंश लोकप्रतिनिधी पक्षातून बाजूला निघणे हि प्रक्रिया करून जून 2022 मध्ये महाराष्ट्रात सत्ता बदल झाला पण मला कार्य करण्यासाठी अडचणी उभ्या झाल्या.

इथून पुढे सर्व काही व्यवस्थित होत आहे; आपण मला 2022 सालापासून सर्व मदत देखील करत आहात. निती आयोगाचा सर्वे आलाय की परभणी दारिद्र्याच्या खाईत लोटला गेलाय. लवकरच जिल्ह्याच्या समृद्धीसाठी भ्रष्टाचाराचा डाग नसलेले नेतृत्व आपल्या आशीर्वादाने आणि मार्गदर्शनाने जिल्ह्याला मिळेल अशी अपेक्षा पूर्ण होतांना दिसते आहे.

मी लहान असताना 80 च्या दशकात लोक मला सांगायचे की तुझा बाप लई खास आहे, पुढे चालुन मुख्यमंत्री होतात बघ!!.. तुमची बोटे धरून राजकारणात बस्तान बसवू शकले अश्या सुरेश वरपूडकर, रामप्रसाद बोर्डीकर, रतनलाल तापडिया, कुंडलिकराव नागरे किंवा इतर अनेक लोकांनी जर त्यांच्या गुरुच्या मोठे राहण्यात आनंद मानला असता तर परभणीची वाताहत झाली नसती. त्यांनी स्वार्थ पाहिला आणि ...

90 च्या दशकात लोक मला म्हणायचे की तुझे वडील प्रत्येक निवडणुकीत का उभे राहतात?? असे करू नये. संयम ठेवावा आणि देशातला सगळ्यात मोठा असा काँग्रेस पक्ष कुठेतरी पुढे संधी देतो.

आज ना पक्ष मोठा राहिला ना संधी देण्याची ऐपत काँग्रेस पक्षात राहिली. 1987 ते 2017 या तीस वर्षात काँग्रेसने चांगले लोकनेते कोण हे लक्षातच घेतले नाही, पक्षाचे नेते धुंदीत होते, फलस्वरूप पक्षाने चारित्र्यहीन नेत्यांना आमदार खासदार केले, स्वतःलाही संपवले आणि एका पिढीचेही आयुष्य उद्ध्वस्त केले. पक्षाने दुसऱ्यांना मोठे केले. तुमचा 'भ्रष्टाचार न करता काम करत राहिले पाहिजे' हा प्रामाणिक हेतु काँग्रेस पक्षाच्या नजरेत कदाचित महत्वाचा नव्हता. काँग्रेसने तुम्हाला डावलायला सुरु केले आणि तुम्ही ते न जुमानता लढत राहिलात.

हे मी तुम्हाला 2022 च्या सुरुवातीला जिंतूर येथे खिस्ते काकांकडे म्हणालो तेव्हा तुमची प्रतिक्रिया अप्रतिम होती की "तेच तर रे समीर, ह्या XYZ भ्रष्ट व्यक्तीची काय ऐपत!! काँग्रेस वरच्या पातळीवर बिघडला म्हणून दुधगांवकरला अवघड गेले."

बिघडलेल्या काँग्रेसी हायकमांडला लढण्याची गरज ओळखणारे तुम्ही होते म्हणून तुम्ही खुप निवडणुका लढले. शेवटी खासदारकीची संधी श्री. बाळासाहेब ठाकरे यांनी तुम्हाला देऊ केली आणि तुम्ही राष्ट्रवादी काँग्रेसच्या मंत्री असलेल्या खासदारकी उमेदवाराला हरवून इतिहास घडविला.

भ्रष्टाचारी नेत्यांनी तुमच्या विरोधात कितीही धोबीपछाड केले तरी 19 वर्षांनंतर परत मोठ्या पदापर्यंत तुम्ही पोहोचले. असे देशपातळीवर क्वचितच झाले आहे. जर कोणी आमदारकी खासदारकी हरले तर परत मोठ्या पदावर पोहोचण्यात शक्यतो यशस्वी होऊ शकले नाही. तुम्ही ती एक यशोगाथा बनवलीत त्याकरिता नेता म्हणून तुमचा गौरव झाला पाहिजे आणि तो होतोय त्यासाठी परत एकदा तुम्हाला अमृत महोत्सवी वर्षाच्या शुभेच्छा..!



## साथीदारांच्या शब्दांतील बापुसाहेब...

पद | लोकनेता | उभारणी | समजुतदार जनसेवक | बापुसाहेबांच्या शब्दांत

### पदे

- \* राजकीय जीवनाची पायाभरणी करणारे जनरल सेक्रेटरी, श्री शिवाजी महाविद्यालय, परभणी
- \* डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठात विद्यार्थी संघटना, सिनेट कार्यकारी मंडळ सदस्य
- \* परभणीच्या मराठवाडा कृषी विद्यापीठाच्या कार्यकारी मंडळ सदस्य
- \* सन 1960 पासून परभणी जिल्हा परिषदमध्ये एक महत्वपूर्ण गट
- \* सन 1980 चे आमदार (काँग्रेस) -

वसमत विधानसभा मतदारसंघ, जिल्हा हिंगोली (जुना जिल्हा परभणी)

- \* सन 1983 राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार) -

- रोजगार हमी योजना, तंत्र शिक्षण, सेवायोजना खाते, महाराष्ट्र राज्य

मा.ना. श्री. वसंतदादा पाटील, मुख्यमंत्री व मा.ना. श्री. रामराव आदिक, उपमुख्यमंत्री यांचे मंत्रिमंडळ

- अमरावती आणि बुलढाणा दोन्ही जिल्ह्यांचे पालकमंत्री

- \* प्रमुख पाहूणे, मराठवाडा पातळीवर संत जनाबाई साहित्य संमेलन गंगाखेड

त्यावेळेस आराखड्याबाबत बापुसाहेब ताडकन म्हणाले, “अरे एवढ्या रकमेनं काय होतय? जरा मोठा आराखडा करा आणि एक दिवशीय नाही आपण दोन दिवसाचे शानदार भव्य साहित्य संमेलन घेऊ.”

- \* सन 1985 चे आमदार (काँग्रेस)

जितूर विधानसभा मतदारसंघ जि.परभणी

- \* 15व्या लोकसभा सदस्य (सन 2009-2014) (शिवसेना)

- केंद्र सरकारच्या कोळसे, खाण आणि पोलाद या स्थायी समितीचे सदस्य

- संसदीय कामकाजात सर्वाधिक उपस्थितीचा विक्रम

- \* संस्थापक, 1989 स्थापित नृसिंह सहकारी साखर कारखाना, लोहगाव

- \* संस्थापक/अध्यक्ष-PAFFCO खत कारखाना जितूर सन 1989 ते 2001

- \* चेअरमन, म.रा.स. मार्केटिंग फेडरेशन, मुंबई सन 1989

- \* संचालक, दुधगाव वि.का.से.स.सो., ता. जितूर

- \* अध्यक्ष, 1960 स्थापित जितूर तालुका सहकारी जिनिंग प्रेसिंग संस्था, जितूर

- \* अध्यक्ष, 1975 स्थापित जि.स. खरेदी विक्री संघ, परभणी

- \* संचालक, म.रा.स. मार्केटिंग फेडरेशन, मुंबई सन 1978

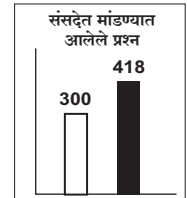
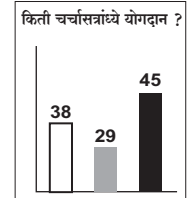
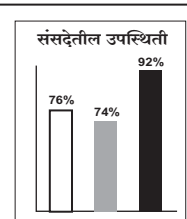
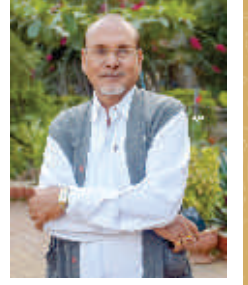
- \* संचालक, IFFCO नवी दिल्ली सन 1989

- \* संचालक, नाफेड सन 1987-88

- \* संचालक, कृषक भारती को.सो. सन 1989

- \* चेअरमन, ज्ञानोपासक नागरी सहकारी बँक, परभणी

- \* अध्यक्ष व संचालक, महाराष्ट्र राज्य पणन महासंघ



- देश पातळीवरील टक्केवारी
- महाराष्ट्रातील संसद सदस्यांची टक्केवारी
- बापुसाहेब यांची आकडेवारी

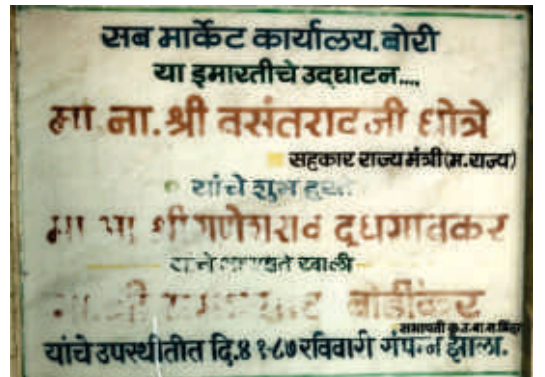
## लोकनेता



- निजामकालीन एका बंगल्यात बापूसाहेब रहात असत. त्या बंगल्याला “गोल बंगला” असे म्हणत. गोल बंगल्यात मित्रांची सारखी वर्दळ असे.
- बापूसाहेबांनी त्याकाळी कॉलेजला असताना मागासवर्गीय शिष्यवृत्तीधारक विद्यार्थ्यांची संघटना बांधली आणि या संघटनेमार्फत व्याख्यानमालेचे विविध उपक्रम राबविले.
- मराठवाड्याच्या वाट्याला मुख्यमंत्रीपद यावे यासाठी पक्षीय स्तरावर त्यांनी भूमिका लावून धरली होती. त्याचा परिपाक स्व. शंकरराव चव्हाण यांना मुख्यमंत्रीपद मिळाले.
- देशातील व महाराष्ट्रातील एक सुस्कृतीक यशवंतराव चव्हाण आणि वसंतदादा पाटील हे गणेशरावांचे आदर्श होते. तर त्यांचे खरे राजकीय गुरु मा.श्री. शंकररावजी चव्हाण आणि मा.श्री. लिंबाजीराव दुधगावकर हे होते. त्यांचा वैचारीक वारसा बापूसाहेबांनी पुढे चालवला. मा.श्री. शंकरराव चव्हाण यांना मुख्यमंत्री बनवण्यात बापूसाहेबांनी आग्रही भूमिका घेतली.
- इ.स. १९७८ मध्ये काँग्रेस अध्यक्षा श्रीमती इंदिरा गांधी यांना तत्कालीन केंद्र शासनाने सूड भावनेतून अटक केल्याची भावना जनमानसामध्ये प्रखरतेने रुजली आणि देशभरामध्ये जेलभरो आंदोलने सुरु झाली. परभणी जिल्ह्यामध्ये देखील जिल्हा युवक काँग्रेसचे अध्यक्ष श्री अॅड. गणेशराव दुधगावकर यांच्या नेतृत्वाखाली जेलभरो आंदोलन सुरु झाले.
- आमदारकीसाठी प्रत्येक वेळा मतदारसंघ बदलण्याचे धाडस हे केवळ बापूसाहेबच दाखवू शकले.
- हाफ दाढी... टोकदार मिशावाला... उंचापुरा, धिप्पाड अशा व्यक्तिमत्त्वाचा धनी म्हणजे गणेशराव दुधगांवकर. एखाद्या मराठी चित्रपटात व्हिलनची भूमिका करण्याची संधी मिळाली असती तर त्याला गणेशरावांनी नक्की न्याय दिला असता. हा गमतीचा भाग सोडला तर खऱ्या अर्थानं गणेशराव दुधगांवकर हे ‘हिरो’ आहेत. विशेषतः शैक्षणिक क्षेत्रातील त्यांची भरीव कामगिरी बघता ते शिक्षणमहर्षीच आहेत. सहकार क्षेत्रातलं त्यांचं काम पाहता, त्यांना सहकारमहर्षी म्हटल्यास वावगं ठरू नये. गणेशराव दुधगांवकर हे ज्ञानोपासक आहेत, हे वेगळं सांगायला नको. त्यांनी स्थापन केलेल्या शाळा, महाविद्यालये व वसतिगृहांची नावांवर सहज नजर टाकली तर याची साक्ष पटल्याशिवाय राहणार नाही. आपल्या प्राणप्रिय संस्थांना ‘ज्ञानोपासक’ असं नाव देणं, ही सहज घडणारी गोष्ट नव्हे. ती जाणीवपूर्वक केलेली बोलकी कृती !
- काँग्रेस पक्षात चैतन्य निर्माण केले. त्यांच्या वसमत विधानसभा सदस्य पदी निवडून येण्यापूर्वी वसमत तालुक्यात काँग्रेस पक्ष दुर्बळ झालेला होता. काही कार्यकर्ते होते; पण त्यांच्यातही मरगळ आलेली होती. बापूसाहेबांच्या संघटन चातुर्यामुळे मरगळलेल्या कार्यकर्त्यांमध्ये नवचैतन्य निर्माण झाले.



- परभणी येथील सर्व विधानसभा मतदारसंघांची उमेदवारी 1985 मध्ये दुधगांवकर यांच्या सांगण्यावरून देण्यात आली होती. त्यांनी सर्व जणांना निवडून आणल्याने त्यांचे पक्षात वजन अजूनच वाढून गेले होते.
- भ्रष्टाचार निर्मूलन चळवळ महाराष्ट्रभर फिरून राबवली. किसान काँग्रेस, महाराष्ट्र कृषक समाज राज्यस्तरीय पत्रकारीता अधिवेशन, जलसिंचन परिषद अशा अनेक चळवळीचे सारथ्य बापूसाहेबांनी केले.
- शेती, सहकार, शिक्षण, आरोग्य, रेल्वे रुंदीकरण, हायवे इ. विषयावर त्यांचा प्रचंड अभ्यास आहे.
- राज्यात बाबासाहेब भोसले मुख्यमंत्री झाले तेव्हा त्यांना हटविण्यासाठी बापूसाहेबांनी कंबर कसली होती. अखेर बाबासाहेब भोसले यांना वर्षभरात मुख्यमंत्री पदावरून पायउतार व्हावे लागले. वसंतदादा पाटील मुख्यमंत्री झाले आणि आदिक यांना उपमुख्यमंत्री करण्यात आले होते. त्यावेळी बापूसाहेबांना मंत्रीमंडळात घेण्यात आले होते. अशाप्रकारे राज्याच्या राजकारणात त्यांचा दबदबा होता.
- अजिम यांना मंत्री केल्यास मराठवाड्याच्या विकासाचे प्रश्न धसास लावता येतील, असे बापूसाहेबांनी मुख्यमंत्री वसंतदादा पाटील यांना समजावले. यावर बापूसाहेबांनी आम्हाला शब्द दिला आणि त्याप्रमाणे कामही झाले. अब्दुल अजिम बापूसाहेबांसोबत मंत्री झाले !!
- महाराष्ट्राच्या राजकारणामध्ये मराठवाड्यातून मुख्यमंत्री पदाच्या शर्यतीमध्ये सर्वांत वरचा क्रमांक असलेल्या पिढीतले आदरणीय अॅड. गणेशराव दुधगावकर खरे तर २० वर्षापूर्वीच महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री झाले असते.
- राज्यातील राजकारणात बापूसाहेबांचे काँग्रेस श्रेष्ठींनी ऐकले नाही. तेव्हा काँग्रेसचे पदाधिकारी असताना त्यांनी सुरेश वरपुडकर यांना काँग्रेसने तिकीट नाकारल्यावर शिंगणापूर विधानसभा मतदारसंघातून अपक्ष घोडा या चिन्हावर उभे केले आणि निवडून आणण्याचा मान त्यांनी मिळवून जिल्हात नवे नेतृत्व उभे केले.
- 'ज्ञानोपासक' या शब्दात सारं काही समावलेलं आहे. हा शब्दच अर्थपूर्ण. तो पकडून गणेशराव दुधगांवकर हा जण छत्रपती शिवाजी महाराज, महात्मा जोतिबा फुले, राजर्षी शाहू महाराज, सयाजीराव गायकवाड आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचा वारसा अधोरेखित करीत आहेत, हे स्वागताई तर आहेच, तेवढीच अभिनंदनीय व अभिमानास्पद घटना होय. मला तर खरे गणेशराव इथं उठून दिसताहेत. याच ज्ञानोपासक गणेशराव उर्फ बापूसाहेबांचा समाजाला खरा उपयोग झाला असल्याचे दिसून येईल. त्यामुळेच त्यांच्या हातून एक नव्हे कितीतरी पिढ्या घडल्या, हे त्यांचं कार्य अतुलनीयच. म्हणूनच परभणी, जितूर, सेलू, मानवत, पाथरी हा सारा परिसर किंबहुना सारा मराठवाडा गणेशराव दुधगांवकर यांच्या कर्तृत्वाचे गीत गायल्याशिवाय राहणार नाही.
- बापूसाहेबांनी जितूर तालुका युवक काँग्रेस अध्यक्ष पदाची जबाबदारी श्री रामप्रसादजी बोर्डीकर यांच्यावर सोपवली. तसेच श्री रामप्रसादजी बोर्डीकर यांना जितूर कृषी उत्पन्न बाजार समितीच्या सभापती पदाची संधी दिली.
- पालम तालुक्यातील भाऊसाहेब भोसले यांना परभणी जिल्हा परिषदेच्या उपाध्यक्षपदी निवडून आणले.
- माणसं आणि मित्र जोडणं हे त्यांच्या स्वभावाचे वैशिष्ट्य आहे. बापूसाहेब यांचे संगठण, कौशल्य कुणाही राजकीय नेतृत्वाला हेवा वाटेल असेच आहे.



- प्रेरणादायी, स्फूर्तीदायी, ऋषीतुल्य व्यक्तीमत्व व दिशादर्शक नेतृत्व, एक उत्साही व्यक्तीमत्त्व, मित्रवेडा, नम्र, वडिलधाच्या मंडळीचा आदर करणारे, निर्व्यसनी, चारित्र्यसंपन्न, सात्विक लोकसंग्रही वृत्ती, विविधतेतून एकता अर्थातच सर्व क्षेत्र व समाजातील गोतावळा बापूसाहेबांनी सांभाळला.
- मराठवाड्याच्या मातीबद्दल अभ्यासपूर्ण बोलणारा दूसरा नेता आज मराठवाड्यात नाही. आपल्या प्रदेशाच्या अविकसित असणाऱ्या कृषी, सिंचन, कृषी उद्योग, लघु उद्योग, गृह उद्योग, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, कला व क्रीडा, तसेच वेगवेगळ्या क्षेत्रातील संशोधनात्मक कार्य यावर त्यांचा अत्यंत विद्वत्तापूर्ण असा अभ्यास आणि भाष्य करण्याची क्षमता आहे.
- जगद्गुरु तुकारामांनी म्हटल्याप्रमाणे 'जे जे आपणाशी ठावे ते ते इतराशी सांगावे, शहाणे करुनी सोडावे सकल जन' अशा सरळ व प्रांजळ स्वभावाचे व्यक्तीमत्व.
- स्व. शंकरराव चव्हाण यांचे उद्गार होते कि, तुम्ही जर अॅड. गणेश दुधगावकर यांना निवडून दिले तर मी तुम्हाला मंत्रीपद देतो. पंडितराव देशमुख यांच्या विरोधात बापूसाहेब निवडून आले. स्व. शंकरराव चव्हाण साहेबांनी दिलेला शब्द पूर्ण केला व बापूसाहेब यांना राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार) रोजगार हमी योजना, तंत्रशिक्षण आणि सेवायोजन खात्याचे मंत्री पद देण्यात आले.
- उच्च शिक्षणाची गंगा त्यांनी जिंतूर तालुक्याच्या दारात आणली. केवळ गुणवत्तेवर आधारित प्राध्यापक वर्गाची नेमणूक केली. दूरदूरच्या जिल्ह्यातील शिक्षकांच्या नेमणूका केल्या. यात त्यांनी जात, धर्म, पंथ काही पाहिले नाही. पाहिली तर ती केवळ गुणवत्ता, असे पारखी व गुणग्राहक असलेले बापूसाहेब दिसून येतात.



- बापूसाहेबांनी सावजी बँकेच्या संदर्भात अनेकदा आर्थिक स्थितीवर वेळोवेळी मार्गदर्शन केले आहे. या बँकेचे संचालक यांना आपुलकितेने "मुकुंद" अशा एकेरी नावाने त्यांनी सदैव संबोधिले आहे.
- बापूसाहेबांनी ७०% समाजकारण व ३०% राजकारण असा पॅटर्न अंगिकारला आहे. त्यांचा राजकारणातील शिष्यवर्ग देखिल फार मोठा आहे. चारित्र्यसंपन्न नेता अशी त्यांची ओळख आहे.

• विधान परीषदेकरीता गणेशराव उभे होते. केवळ सहा मतांनी पराभव झाला. खऱ्या अर्थाने हा पराभव नाहीच. बापूसाहेबांच्या काळात अनेक कार्यकर्ते तयार झाले. परभणीचे मा. रामप्रसाद बोर्डीकर, आ. सुरेश वरपुडकर, वामन मोरे, गंगाखेड-पालमचे भाऊसाहेब भोसले, रतनलाल तापडीया व वसमतचे देवराव जाधव, खलीलभाई, जावेदभाई, पुर्णाचे उत्तमराव कदम, बालाजी पालीमकर, मंगलचंद गोरे इत्यादी कार्यकर्ते तयार झाले.

- परभणीच्या राजकारणात पुढे यशस्वी झालेले आणि जिल्ह्याचे राज्य पातळीवर नेतृत्व करणारे आ. सुरेश वरपुडकर असोत की मा.आ. रामप्रसाद बोर्डीकर असोत एकेकाळी बापूसाहेबांच्याच तालमीत तयार झालेले आहेत.

- बापूसाहेबांनी बाबुराव भालेराव यांची त्यांना न विचारता नेमणूक वसमत तालुका सहकारी जिनिंग प्रेसिंग लि. वसमत या संस्थेच्या अध्यक्षपदी केली. पूर्णा सहकारी साखर कारखाना, संजय निराधार समिती, नियोजन कमेटी ह्या कमेटीवर कार्यकर्त्यांची निवड केली.
- जिल्ह्यात कॉॅंग्रेसला मजबूत करण्याचे काम ज्या घराण्यांनी केले त्यामध्ये दुधगावकर घराण्याचा क्रमांक अगदी वरचा आहे.
- बापूसाहेब हे सत्यशोधक, समाजवादी विचाराशी जवळीकता साधणारे असल्यामुळे त्यांनी सामाजिक व शैक्षणिक उद्दिष्टपूर्तीसाठी राजकारण एक साधन म्हणून वापरले असल्याचे आपणास दिसून येते. 'सत्या' बरोबर राहणारा स्वभाव त्यांना जनमानसामध्ये लोकनेता म्हणून जनाधार लोक मान्यता मिळण्यासाठी त्यांच्यातल्या माणूसकीचा मोठा सहभाग आहे.
- त्या काळात गणेशराव राज्यमंत्रीपद बाजुला ठेवून रसिक, श्रोत्यांप्रमाणे सहभागी होत असत. त्यांच्यासोबतचे कार्यकर्ते सुरेश वरपुडकर व बोर्डीकर हे सहकार क्षेत्रात पदाधिकारी होते.
- वसमत, जितूर आमदार, मंत्री व पुढे परभणी व जालन्याचे परतूर, मंठा, घनसावंगी खासदार असे परभणी, हिंगोली व जालना या तीन जिल्ह्याचे प्रतिनिधित्व करणारे बापूसाहेब हे परभणी जिल्ह्यातील एकमेव नेते.
- मराठवाड्यातील अल्पसंख्यांकांच्या हितासाठी त्यांनी नेहमीच प्राधान्य दिले. तसेच सर्व समाज, जात, धर्म, पंथ यांना खऱ्या अर्थाने सोबत घेऊन चालणारा नेता म्हणजे गणेशराव दुधगावकर आहेत.
- जातीच्या अहंतेपासून गणेशराव कायम दूर राहिले. किंबहुना जाती अहंतेला कधीच जवळ येऊ दिले नाही, त्यामुळे स्वजातीतील जे दुबळे आणि ऊर्जा असलेल्या माणसांना ते सतत आधार देत राहिले. आपण समजातील दुबळ्यांचे देणे लागतो, ही भावना किती तोलामोलाची, किती जबाबदारीची आहे याची जाणिव त्यांना होती आणि आहे.
- समाजकारण असो की, राजकारण असो हे सैद्धांतिक पातळीवर झाले पाहिजे, हा गुण त्यांच्या अंगी उत्तम आहे. अॅड. गणेशराव दुधगावकर यांचा महाराष्ट्राच्या राजकारणामध्ये अद्वितीय राजकारणी म्हणून उल्लेख होतो. महाराष्ट्राचे नेतृत्व ठरविणाऱ्यांपैकी एक म्हणजे बापूसाहेब होते. ठामपणे उभे राहून ते राजकारण करतात. म्हणूनच समाज आपोआप पाठीशी उभा राहतो, हे त्यांच्या राजकीय शैलीतून लक्षात येते. निवडणुकीच्या सभेची व्यूहरचना ते अगदी कल्पकतेने करवून घेतात.
- बापूसाहेब कर्मयोगी व दिलदार मनाचा मित्र कोनताही भेदभाव नाही, जात-धर्म-पक्ष या सर्वांच्या निखळ, स्पष्ट वक्ता आणि कार्यकर्त्यांसाठी जिवाची धडपड करणारा असा नेता, अशी त्यांची छवी होती आणि आहे.



इ.स. 1988 पासून लोकांच्या चर्चेतून ऐकण्यात येते कि जर श्रीमती इंदिरा गांधी यांची हत्या झाली नसती, तर आज बापूसाहेब महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री असले असते.

## उभारणी

- मा. बापूसाहेब व भ्रष्टाचार याचा ३६ चा आकडा आहे. अनेक मित्र व हितचिंतकांनी त्यांना पैसे कमविण्याचे अनेक मार्ग दाखविले; पण त्यांचे नेहमीच असे सांगणे, की राजकारण हा काय व्यवसाय नाही. भ्रष्टाचारापासून दूर असणारा पुढारी सध्या शोधून सापडणार नाही; पण कर्मयोगी बापूसाहेब त्यापैकी एक. त्यामुळे त्यांचे चारित्र्य नवीन पुढाऱ्याला आदर्श म्हणून ठेवण्याची गरज आहे. त्यांचे जीवन एखाद्या पुस्तकात 'पुढारी कसा असावा' ह्याचा धडा म्हणून घेतले तरी वावगे होणार नाही.
- भारताचे पुर्व राष्ट्रपती डॉ. जाकीर हुसेन यांनी फार सुंदर विचार मांडले आहेत की, “कुठलेही कार्य करा ते मनोभावे करा, जर ते करण्यास योग्य आहे असे वाटले तर ते करण्यास योग्यच आहे.” गणेशराव दुधगावकर बापूसाहेब या गोष्टीचे मूर्तीमंत प्रतिक आहेत
- बापूसाहेब एक कर्मयोगी हैं, दिलदार मित्र हैं, उनके पास भेदभाव नहीं है, वे स्पष्ट वक्ता हैं। कार्यकताओं के हित लिए हमेशा वे सक्रिय रहते हैं।
- आदरणीय बापूसाहेबांच्या या बांधिलकीमुळे त्यांना मराठवाडा केसरी ही उपाधी शोभून दिसते. निवडणुकांच्या पक्षीय राजकारणामध्ये किती झुकायचे याची मर्यादा आता राहिलेली नाही. परंतु बापूसाहेबांनी नव्या पिढीतल्या राजकारण्यांना एक संदेश आपल्या वागण्यातून नक्की दिला आहे. कोणाच्याही समोर वाकून अथवा झुकून सत्ता मिळवायची नाही. आदर ही वेगळी बाब आहे आणि लाचारी ही वेगळी बाब आहे. स्वाभिमान या शब्दाचा खरा अर्थ राजकारणामध्ये एका उंचीवर नेऊन ठेवण्याचे काम साहेबांनी केले आहे.
- कृषी विद्यापीठाच्या मागणीसाठी आंदोलन केले, सरकारला विद्यापीठ द्यावेच लागले. अखल्या महाराष्ट्रात कृषी विद्यापीठाची मागणी करणारे पहिले युवा नेते गणेशराव होते, याची इतिहासाला नोंद घ्यावी लागेल.
- मराठवाडा विकास आंदोलनाच्या माध्यमातून मराठवाड्याला विशेष पॅकेज मिळावे, या भागाचा सर्वांगीण विकास व्हावा, यासाठी त्यांनी रस्त्यावर येऊन संघर्ष केला.
- मराठवाडा विकास आंदोलनामुळे मराठवाड्याला मुख्यमंत्रीपद मिळाले. तसेच परभणी येथे कृषी विद्यापीठ स्थापन झाले. त्याशिवाय काही सहकारी साखर कारखाने व सुतगिरण्या पदरात पाडल्या.
- श्री. गणेशराव दुधगावकर यांनी मराठवाडा विकास आंदोलन, रेल्वेचे आंदोलन या सर्व आंदोलनामध्ये सर्व मित्रांना एकत्र ठेवून विद्यार्थी असतानाच आपल्या नेतृत्वाची चुणूक दाखविली होती.
- जून 1975 ला बापूसाहेबांच्या प्रयत्नातून अंबाजोगाई येथे मराठवाड्यातील दुसरे व एशियातील पहिले ग्रामीण वैद्यकीय महाविद्यालय सुरु झाले.
- सर्व महाराष्ट्रातील विद्यापीठासाठी कायदाच केला. लोकनेता नामदार शंकरराव चव्हाणांनी त्यांची धडाडी पाहून मंत्री केले. त्यांनी पुलोद काळात कारखाना प्रशासकीय मंडळाने पुर्णत्वास आणला होता. गणेशराव यांनी त्यांचे नातेवाईक उध्दवराव गरुड यांना चेअरमन करून सहकारी क्षेत्रावर ताबा मिळवला; पण त्यांनी प्रशासकीय मंडळात वाढ केली; पण जुने संचालक कायम ठेवले. पुर्णा कारखान्याची साखर निघण्याचा मान त्यामुळे गणेशराव यांच्या हिश्यात जाऊन मानाचा तुरा लाभला.



## राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार) पदावर असतांनाची उभारणी :-



1. बापूसाहेबांच्या मंत्रीपदाच्या काळात रिधोरा गावात एक प्राथमिक आरोग्य केंद्र व पूर्णा कालव्यावर एक जोड पुल बांधण्याची परवानगी मिळाली होती.
2. बजाज कारखाना, वाळुज - मराठवाड्याचा कायापालट मोठा उद्योग आल्याशिवाय होणार नाही म्हणून 2 फेब्रुवारी 1983 शपथविधीनंतर उपमुख्यमंत्री रामराव आदिक साहेब, राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार) अॅड. गणेशराव दुधगावकर (बापूसाहेब) आणि MDC Chairman

श्री. रायभान जाधव यांनी बजाज ऑटो पुणे यांना औरंगाबाद येथे आमंत्रित केले. 19 जानेवारी 1984 ला वाळूज येथे सदर कारखान्याचे भूमिपूजन झाले. पुढे आशिया खंडातील सर्वात जलदगतीने वाढणारे शहर म्हणुन औरंगाबाद नावारुपाला आले व आज राज्यातील दुष्काळी पट्ट्यातील एक यशोगाथा झाली आहे. मधुर बजाज यांनी जुन 2023 मध्ये मुलाखतीत नमुद केले कि, आम्ही जेव्हा 1983 मध्ये औरंगाबादला आलो तेव्हा हे एक निद्रिस्त असे गाव होते.



3. मा. गणेशराव यांचे उल्लेखनीय सहकार्य लाभल्यामुळे परभणी जिल्ह्यातील साखर कारखाने, जिल्हा बँक, बाजार समित्या, पणन संस्था यांच्या प्रगतीसाठी प्रयत्नशील राहता आले.
4. बापूसाहेबांनी विद्यार्थी काळातूनच विकास विषयक चळवळीत भाग घेतला तसेच लोअर दुधना, जायकवाडी प्रकल्प, विष्णुपुरीचा प्रकल्प, रस्ते आदी विकास विषयक चळवळीत भाग घेतला आहे.
5. औरंगाबादचा भगिरथ सहकारी खत कारखाना, वेंगुर्ला येथील काजू प्रक्रिया उद्योग, चंद्रपूरचा सुगंधा प्रक्रिया उद्योग इत्यादींचा विकास व पुनरुज्जीवन घडवण्यास याच काळात त्यांनी चालना दिली.
6. बापूसाहेबांनी पेय जल योजना, विद्युतीकरण, रस्ते निर्मिती, वसमत येथील बस स्थानक व पुर्णा सहकारी साखर कारखाना इत्यादी रचनात्मक कार्यांच्या माध्यमातुन जन सामान्यांच्या कल्याण्यासाठी भरीव कार्य केले.
7. डोंगरदऱ्यात रस्ते वाहतूक, विद्युतीकरण, पाणी पुरवठा योजनेची मुहूर्तमेढ रोवली, पूर्णा स. कारखान्याला पाठबळ दिले, वसमतचे बस स्टॅंडची निर्मिती केली आणि सत्तेचा उपयोग जनकल्याणाच्या योजना राबविण्यासाठी केला.
8. अॅड. गणेशरावजी दुधगावकर यांचे नेतृत्व वसमत तालुक्याला लाभण्यापूर्वी शिरड, जवळा सर्कलमध्ये आरोग्याच्या सोयी नव्हत्या. डोंगरमाथ्यावर कुणी बिमार पडले तर त्यांना तेथेच आरोग्याविषयी सोय उपलब्ध व्हावी यासाठी त्यांनी लोहऱ्याला प्राथमिक उप आरोग्य केंद्राची निर्मिती केली आहे.
9. मा. श्री. शंकरराव चव्हाण साहेब केंद्रात अर्थमंत्री, नियोजन मंत्री असल्यामुळे दिल्लीत सर्व स्तरावर त्यांचे सहकार्य व पाठींबा असायचा. मा. बापूसाहेबांचे सर्व राज्यातील तरुण नेत्यांशी अत्यंत स्नेहाचे संबंध होते. दिल्लीत बऱ्याच मंत्रालयात त्यांचे स्नेहाचे संबंध होते. सेक्रेटरी, जॉईंट सेक्रेटरी, हे त्यांना सन्मानाने वागवत.
10. शेतकऱ्यांच्या संदर्भात खरोखरच आस्था बाळगणारा असा नेता ह्या शब्दात सुभाष सूर्यवंशी, मुख्य कार्यकारी प्रकल्प कक्ष, मराठवाडा विकास महामंडळ (एम.डी.सी.) बोलून गेलेत ते खरेच पुर्णतः खरे आहे. त्यांचा एक 'शास्ता' म्हणूनही कै. वसंतदादांच्या मंत्रीमंडळातील वावरही तंत्रशिक्षणाच्या क्षेत्रात मोलाचेच ठरले आहे.



## 10. अमरावती जिल्ह्याचे पालकमंत्री असताना

- 1 मे 1983 स्थापित अमरावती विद्यापिठ (आजचे संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापिठ)
  - अमरावती महानगर पालिका - 15 ऑगस्ट 1983 स्थापित
  - ऑफिस ऑफ इन्सपेक्टर जनरल ऑफ पुलिस
  - महसूल विभागाचे कार्यालय
- यांच्या निर्मितीसाठी शिघ्र हालचाली केल्या.



11. बापूसाहेबांच्या मंत्रीपदाचे अनेक फायदे अनेक गावाला मिळाले. पक्का रस्ता, वीज, आरोग्य केंद्र, एक पूल, संजय गांधी निराधार योजनेचे गोरगरिबांना मिळालेले फायदे, यामुळं जगापासून कायम तुटलेली गावे विकासाच्या प्रवाहाला जोडली गेली.
12. मंत्री पदाची धुरा गणेशरावांच्या खांद्यावर आली त्यावेळी पाथरीमध्ये इंदिरा नगरमधील मस्जीदच्या विकास कामासाठी त्यांनी मोठी मदत केली. मंत्री पदाच्या कालावधीत येलदरी कॅम्प येथील शाळेच्या जागेचा प्रश्न सोडविण्यासाठी त्यांनी पुरेपूर प्रयत्न केले.
13. महाराष्ट्राच्या राजकारणात मंत्री पदाची शपथ घेतल्यानंतर हाजीरा गॅस पाईपलाईन गुजरात हून मराठवाड्यात कशी आणायची याची ब्लूप्रिंट खिशात ठेवणारा मराठवाड्यातील हा पहिला नेता. अॅड. गणेशराव दुधगावकर यांनी अनेक विकासात्मक बाबी मतदार संघात घडवून आणल्या.



- हाजीरा गॅस पाईपलाईन (मार्ग : हाजीरा-बुलढाणा-परभणी-नांदेड-नागपूर-पॅराद्विप)

14. मराठवाडा डेव्हलपमेंट कॉर्पोरेशन (एम.डी.सी.) चे महत्त्वाचे प्रकल्प जे मराठवाडा विकास संदर्भात लक्षणीय टप्पे मानले जातात.
  - नव-नव्या तंत्रप्रणाली मराठवाड्यात येत रहाव्यात यासाठी आग्रही भूमिका घेणारे इंडो जर्मन टोल रुम (IGTR) आणि केंद्रीय प्रकल्प Central Institute of Plastic Engineering Technology (CIPET)
  - सेंटर फॉर इलेक्ट्रॉनिक्स डिझाईन अॅण्ड टेक्नॉलॉजी (CEDT) स्थापना 1974, सन 2011 पासुन DESE असे नामकरण
  - महाराष्ट्र सेंटर फॉर इंटरप्रुनरशिप डेव्हलपमेंट (MCED) या सारख्या प्रकल्पांना केंद्र शासनाकडून मंजुरी मिळविण्याचे व औरंगाबादला कार्यान्वित करण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य मा.बापूसाहेबांनी केले.
15. अॅड. दुधगावकरांनी परभणीतील गोरक्षणाची जमीन वाचविण्यासाठी अतिशय चिकाटीने प्रयत्न केले. आणि गोसंवर्धन प्रकल्प संस्थेच्या मालमत्तांना संरक्षण मिळवण्यात यश मिळवले.
16. शिवाजी महाराजांच्या संदर्भात संत रामदास स्वामी यांनी काढलेले उद्गार आठवतात. निश्चयाचा महामेरु । बहूत जनांशी आधारु अखंड स्थितीचा निर्धारु । शिवकल्याण राजा हे सगळं तंतोतंत बापूसाहेबांनाही लागू होतात.

17. रेशनच्या दुकानात दोन रुपये किलोनं गहू, तांदूळ दिला जातो. बापूसाहेब खासदार असताना हे बिल पास झाले, यावर संसदेत अनेकवेळा चर्चा घडून आली होती. त्यासाठी ते AIIMS मधुन शास्त्रक्रिया झालेली असतानाही मतदानाकरिता गेले होते.
18. आसेगाव ता. वसमत त्याकाळचे जिल्हाधिकारी सुधा भावे यांना त्या गावास पाठवून आर्थिक मदतीचा ओघ त्या गावाकडे वळविला.



- डिकसळ-हासेगांव रोडच्या कामाचे भूमीपुजन.
- राष्ट्रीय स्तरावरच्या नाफेड सहकारी संस्थेचे संचालकपद भूषवतांना, गणेशरावांनी कृषी उत्पादनांचे प्रक्रिया उद्योग, कांद्याची निर्यात, तेलबियांवर प्रक्रिया करणाऱ्या ऑईल मिल्स, इत्यादींचे राष्ट्रीय धोरण ठरवण्यात महत्वाचे योगदान दिले.
- जिंतूरचेही Govt. Polytechnic College त्यांनीच आणलेले आहे. संगणक शिक्षणाचे महत्त्व आणि त्याची वाढती गरज ओळखून मराठवाड्यांत

पहिल्यांदा त्यांनी ज्ञानोपासक या संस्थेत पदव्युत्तर संगणक कोर्स (M.Sc. Computer) आणला. परभणी नगरपालिकेला महानगरपालिकेचा दर्जा मिळावा यासाठीच्या धरणे आंदोलनाचे नेतृत्व केले. सन 2010 मध्ये शासकिय रुग्णालयासोबत शासकिय वैद्यकिय महाविद्यालय असावे हि मागणी केली.

- राष्ट्रीय पातळीवर 'ज्ञानोपासक' विसाव्या स्थानी आहे. अल्पावधित "ज्ञानोपासक" हे नाव शिक्षण क्षेत्रात नावारुपास आले. विद्यार्थी संसदेची निर्मिती गुणवत्तेच्या आधारावर सुरु केली. गुणानुक्रमे जो प्रथम असेल तो वर्ग प्रतिनिधी असेल. शिस्त, अनुशासन त्यांना प्रिय आहे. कारण ते स्वतः पालन करतात. ज्ञानोपासकने कॉपीमुक्त परीक्षा सेंटर ठेवण्याचा संकल्प केला आणि ती पध्दत अंमलात आणली. प्रतिकूल परिस्थितीतील गुणवत्तेचा शोध घेण्याच्या ध्यासापोटी हे घडलं. त्यानंतर राज्यशासनाने कॉपीमुक्त अभियान सुरु केले.
- महाराष्ट्र शासनाने 'ज्ञानोपासक पॅटर्न' चा म्हणजेच कॉपीमुक्त परीक्षा सेंटर आणि गुणवत्तेच्या आधारावर विद्यार्थी संसदेची निर्मिती. या दोन बाबीसाठी महाराष्ट्रातील सर्व विद्यापीठासाठी हा कायदाच केला व त्याची अंमलबजावणी केली. हे श्रेय केवळ बापूसाहेबांच्या दृष्टिकोणास दिले जाते.

### संसद सदस्य म्हणून केलेली उभारणी :-

- खासदार असतांना साहेबांनी पार्लमेंटमध्ये सिंचन प्रकल्पासंबंधाने अनेक मागण्या आणि फंड मंजूर करून घेतला. लोअर दुधना, जायकवाडीचा उजवा कालवा त्यात पुर्णा व गंगाखेडचा समावेश आहे. ते सर्व प्रकल्प प्रस्तावित आहेत.
- परभणीला एफ. एम. रेडिओ असावे म्हणून त्यांनी आवाज उठवला.
- परभणीत केंद्रीय विद्यालय असावे. तसेच मराठवाडा कृषी विद्यापीठ, सध्याचे वसंतराव नाईक मराठवाडा कृषी विद्यापीठ, यामध्ये कापूस, रेशीम संशोधनासाठी यंत्रणा उपलब्ध करून देणे, याकरिता निधी उपलब्ध

करुन देणे यासाठी त्यांनी खासदार असताना प्रयत्न केले.

- परभणी - मुद्रखेड रेल्वे मार्गाचे दुहेरीकरण करणे, पैठण ते नांदेड मार्गे पोखर्णी रस्त्यासाठी त्यांनी धडपड केली.
- संसद सदस्य असताना जाणीवपूर्वक विकास प्रक्रिया कार्यान्वित होण्यासाठी दळणवळणावर भर दिला. पैठण, अंबड, घनसावंगी, पोखर्णी, नांदेड हा महाराष्ट्र महामार्ग व्हावा, यासाठी सातत्याने प्रयत्न केले. त्यांच्या प्रयत्नामुळेच हा महामार्ग पूर्णत्वास जात आहे.
- वाटुर फाटा ते परभणी रस्त्याचे चौपदरीकरण पूर्ण करण्यासाठी शासन स्तरावर पाठलाग केला.
- पैठण, उजवा कालवा तसेच जायकवाडी डावा कालव्याचा नवा पुनर्बांधणीसाठी प्रस्ताव तयार करावा, अशी मागणी लावून धरली.
- लोवर दुधना प्रकल्प ए.आय.बी.पी. मध्ये समाविष्ट करण्यासाठी सातत्याने धरपड केली. त्यामुळे मंठा आणि परतुर येथील पाणी पुरवठा योजना पूर्ण होण्यासाठी हातभार लागला.
- बेळगाव, निपाणी, कारवार या मराठी लोकांच्या हक्कांसाठी झालेल्या धरणे आंदोलनात सहभाग घेतला. अल्पसंख्यांक बांधवांसाठी शादीखाना उभारणीसाठी निधी मंजूर करुन घेणे, सिद्धेश्वर धरणाच्या वाढीसाठी राज्य व केंद्र सरकारकडे पाठपुरावा करणे तसेच मराठवाड्याच्या विकासासाठी शासनाने नेमलेल्या केळकर समितीला महत्त्वाच्या सूचना देणे, मराठवाड्यात हाजीरा ते नांदेड गॅस पाईप लाईन मंजूर करावी म्हणून बाजू मांडली.
- मुद्रखेड - परभणी तसेच परभणी - मनमाड या मार्गाचे दुहेरीकरण व्हावे यासाठी प्रयत्न केले.
- जालना - खामगाव रेल्वे मार्गाचे सर्वेक्षण पुन्हा करण्यात यावे, हि मागणी संसदेत सातत्याने लावून धरली.
- मॉडेल कॉलेज आणि केंद्रीय विद्यालये जिल्ह्यात सुरु करण्यासाठी प्रयत्न केले. त्यामुळेच जालना जिल्ह्यात घनसावंगी येथे मॉडेल कॉलेज स्थापन झाले.
- खासदार असताना परभणी आणि पूर्णा येथे केंद्रीय विद्यालय मिळावं, महाराष्ट्रातील 28 जिल्ह्यांमध्ये CBSC पॅटर्न राबवावा, ही त्यांचीच इच्छा होती.
- आपल्या राजकीय कारकीर्दीमध्ये आमदार, मंत्री, खासदार तसेच त्यांनी अनेक पदे उपभोगली. लोकसभा सदस्य असताना अन्न सुरक्षा विधेयक, भूसंपादन पुनर्वसन, महाराष्ट्रातील दुष्काळ, महाराष्ट्रातील धनगर समाजाचा अनुसूचित जातीत समावेश करण्यासाठी आदी प्रश्नांवर आवाज उठवून सरकारचे लक्ष वेधले.
- एन.एच. 222 चे चौपदरीकरण, केंद्रीय शिक्षण संस्थेत आरक्षण दुरुस्ती विधेयक, रेल्वे अर्थसंकल्प, शेतकरी, शेतमजूर, दलित, वंचित घटकांचे आदी विषयांवरचे प्रश्न संसदेत मांडून जनतेचे प्रश्न सोडविण्याला हातभार लावले. संसदीय आयुधांचा वापर करुन त्यांनी लोकशाही मूल्य जपले.



- महाराष्ट्र राज्याच्या विधानसभेत शेतकऱ्यांचे कर्ज, बी-बीयाने, खतांचा पुरवठा, शेतीची अवजारे, आदी प्रश्नांवर लक्ष केंद्रीत करुन शेतकरी व शेतमजुरांचा विश्वास संपादन केला.
- परभणीतील अल्पसंख्यांक बांधवांसाठी शादीखाना उभारणीसाठी निधी मंजूर करुन घेतले.
- बापूसाहेब लोकसभेत सर्वाधिक सलग पाच वर्ष सक्रिय सभासद म्हणून कार्यरत राहिले. संसदीय कामकाजात सर्वाधिक उपस्थितीचा विक्रम त्यांनी आपल्या नावावर केला. संसद पटू म्हणून त्यांना गौरविण्यात आले आहे. तसेच लोकसभा सदस्यत्वाच्या पाच वर्षांच्या कार्यकाळात एकूण 418 प्रश्न त्यांनी विचारले आहेत. या काळात खासदारांनी लोकसभेत प्रश्न विचारल्याचे सरासरी प्रमाण 300 होते. म्हणजे राष्ट्रीय सरासरीपेक्षा जवळपास दीडपटीने जास्त प्रश्न बापूसाहेबांनी सभागृहात विचारुन परभणीच्या जनतेचा आवाज शासनकर्त्यांपर्यंत पोहचविला आहे.
- परभणीच्या विकास कामात त्यांचे अतुल्य योगदान राहिले आहे तसेच वसमत रोड राष्ट्रीय महामार्गाच्या रुंदीकरणाच्या कामासाठी यशस्वी पाठपुरावा केला.

- विद्यापीठाला डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे नाव द्यावे, अशी साधारण चर्चा सुरु होती. तेंव्हा विद्यापीठ कार्यकारणीच्या मिटींगमध्ये पहिल्यांदा हा विषय बापूसाहेबांनीच मांडला.
- मराठवाड्यातील 45 आय.टी.आय. व 45 टेक्निकल हायस्कूलांना तसेच उदगीर आणि निलंगा येथील इंजिनिअरींग कॉलेजला बापूसाहेबांनी परवानगी दिली, या माध्यमातून त्याकाळी त्यांनी जणू मराठवाड्यात तंत्र शिक्षणाची गंगाच खेचून आणली.
- बापूसाहेबांच्या शैक्षणिक कार्यामुळेच मराठवाड्यातील अनेक विद्यार्थी समर्थपणे नोकरी करीत आहेत. आज मोठ्या पदावर विराजमान आहेत.
- 1983 साली ज्ञानोपासक संस्थेची स्थापना जिंतूर व परभणी येथे ज्ञानोपासक महाविद्यालये तर ग्रामीण भागात शाळा सुरु केल्या. आय.एस.ओ. नामांकन 2000 चा दर्जा व स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठाकडून दिला जाणारा 2011-12 चा शहरी विभागासाठीचा उत्तम महाविद्यालय पुरस्कार प्राप्त होऊन गौरव मिळाला.
- परभणीतून नाहिशी झालेली शैक्षणिक संस्कृती ज्ञानोपासक महाविद्यालयानं पुन्हा रुजवली, त्यामुळे ज्ञानोपासकची मराठवाडाभर ख्याती झाली.

जनसेवक दुधगांवकर जी यांचे स्वप्न पूर्ण झाले...



सन 1984 चे ज्ञानोपासक महाविद्यालय परभणी



सन 2022 चे ज्ञानोपासक महाविद्यालय, परभणी  
तिसऱ्यांदा नॅक 'अ' दर्जा प्राप्त

- बेरोजगारांचा मोठा प्रश्न त्यांनी सोडवला : बापूसाहेब स्वतः तंत्रशिक्षण मंत्री होते, त्यामुळे त्यांनी वसमत मतदार संघात औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थेची स्थापना केली.
- हिंगोली आणि जितूर तालुक्यात शासकीय पॉलिटेक्नीकची स्थापना केली. त्यामुळे या दोन संस्थेत तरुणांना नोकऱ्या मिळाल्या. तसेच या विभागातील लोकांनी व विद्यार्थ्यांनी औद्योगिक प्रशिक्षण घेतले व ते सर्व प्रशिक्षित उमेदवार औरंगाबाद व पुर्णा सहकारी साखर कारखान्यात कामावर रुजू झाले. आज ते त्यावर आपली उपजीविका भागवत आहेत. त्यामुळे हे त्यांचे काम चिरस्मरणात वसमतकर व जितूरकरांच्या मनात राहाण्यासारखे आहे.
- शैक्षणिक संस्थेला मदत करणे हा त्यांचा स्थायी भाव असल्याने शहागड येथे स्वामी रामानंद शिक्षण प्रसारक मंडळ संचलित प्रबोधनकार ठाकरे विद्यालयाची इमारत खासदार फंडातून उभी केली.
- न्यायमूर्ती धर्माधिकारी, जगन्नाथ पुरीचे शंकराचार्य जगद्गुरु निश्चलानंद सरस्वती अशा मंडळींना ऐकण्याचा योग बापूसाहेबांमुळे परभणीकरांना प्राप्त झाला.
- औरंगाबाद एम.आय.डी.सी. तील 'Infra structural Development' सुयोग्य हाताळले गेले, त्यात खऱ्या अर्थाने गणेशरावांचे योगदान लक्षणीयच होते. बापूसाहेब त्यांच्यातील ज्ञानपिपासूवृत्ती त्यांना तिथे थांबू देणार नव्हती. पुढे कायद्याचे शिक्षण घेऊन ते एल.एल.बी. झाले. ज्या क्षेत्राचा सर्व सामान्यांना पदोपदी संबंध येतो त्या वकिली व्यवसायास त्यांनी सुरुवात केली व त्यात उत्तम यशही मिळवले.
- 'शुद्ध बिजा पोटी फळे रसाळ गोमटी' समीर आता परत भारतात आला असून आपल्या बुद्धी व ज्ञानाचा उपयोग आपल्या देशाला व्हावा, अशा विचारसरणीचा आहे. बापूसाहेबांच्या मार्गदर्शनाखाली उत्तम प्रगती करतो आहे.
- 2001 पासून गुणवंत विद्यार्थ्यांसाठी 'रूपाली दुधगावकर राष्ट्रीय पुरस्कार' आजपर्यंत अतिशय चांगल्या प्रकारे दरवर्षी वितरीत होत आहे.
- समीर भाऊंच्या शब्दात... "बापूसाहेबांच्या प्रामाणिक प्रयत्नांच्या उदाहरणामुळे आणि चांगल्या रोल मॉडेल्सकडून शिकून आज मी काही चांगले करू शकलो. राज्य शिखर संघटनेचे उपाध्यक्ष होणे किंवा त्या पदावर कार्य करत शिक्षणक्षेत्राला उद्योग क्षेत्राशी जोडण्याचे सगळ्यात मोठे काम चेंबरने केलंच पाहिजे असा हट्ट धरून काम केले."
- शेवटी खासदारकीची संधी श्री. बाळासाहेब ठाकरे यांनी तुम्हाला देऊ केली आणि तुम्ही राष्ट्रवादी काँग्रेसच्या मंत्री असलेल्या खासदारकी उमेदवाराला हरवून इतिहास घडविला.





## समजुतदार जनसेवक



- मराठवाडा मुक्तीसंग्रामसाठी आपले रक्त सांडले. त्यामध्ये क्षत्रीयकुलवंत दुधगावचे राऊत घराने, आ. अॅड. गणेशराव दुधगावकर साहेब यांचे माता-पिता व कुटुंब एक प्रकारे उच्च दर्जाचे स्वातंत्र्यसैनिक होते. स्वातंत्र्य सैनिकांना स्वतः आर्थिक बळ देत लढा कायम चालू राहिला पाहिजे हे

करण्यासाठी दुधगावच्या पंचक्रोशीमध्ये या घराण्याचा अत्यंत आदरयुक्त उल्लेख जुने लोक करतात.

- हैद्राबाद मुक्तिसंग्राम तथा मराठवाडा मुक्तिसंग्राम या महान स्वातंत्र्य लढ्यामध्ये ज्या महान कुटुंबियांनी त्याग केला त्यापैकी दुधगावचे दुधगावकर कुटुंबीय सार्वजनिक जीवनामध्ये काम करत असत. कुटुंब कितीही श्रीमंत असलं तरी त्यामध्ये संस्कृती आणि आपला वारसा जोपासण्याची ताकत असतेच असे नाही.
- गोरगरीब, उपेक्षित, वंचित, वर्गाची भाषा त्याचे दुःख समजून घेणारा. समोरच्याचे दुःख तोंड उघडून ऐकण्यापेक्षा समोरचा आपल्याकडे येत असतानाच त्यांना त्याच्या दुःखाची जाणीव होते. श्री गणेश असल्यामुळे त्यांनी कधी कुणाची जातपात, जन्म, जवळचा, दूरचा, गावाकडचा, परगावचा, तो शत्रू हा मित्र असा भेद त्यांनी कधीच केला नाही. हे त्यांच्या कार्यप्रणालीवर अगदी स्पष्टपणे, ठळकपणे, उठावदारपणे डोळ्यात भरण्याइतके उठून दिसते.
- दुधगावकर साहेबांनी शेतावर काम करणाऱ्या लोकांना अगदी पूर्ण सन्मानाने उच्च पदावर नेऊन बसवले. त्यांना पोटापाण्याला लावले. मोठे केले. अगदी त्यांच्या कर्तृत्वाची दखल घ्यावी इतके फळ आपल्या सहकाऱ्यांना ते सतत देत राहिले.
- बापूसाहेबांबद्दल एका विरोधी जेष्ठ नेत्याच्या पत्नीने उद्गार काढले ति म्हणते, “गणेशरावचे व आमचे मागेपुढे



राजकीय सूत्र जमतील की नाही, ते सांगता येत नाही परंतु त्यांच्या सारखी माणुसकीची वागणूक व त्यांनी केलेले सहकार्य मी कदापी विसरणार नाही.”

- मा. बापूसाहेब हे स्वतः जमीनदार व श्रीमंत असूनही एका सामान्य कुटुंबातील पण संस्कारीत कुटुंबातील मुली सोबत लग्न केले. कै. श्रीधरराव कदम साहेब त्यांचे सासरे. हुंडा न घेता त्यांनी लग्न केले. तो त्या काळातील आश्चर्याचा विषय होता.

- बापूसाहेबांचे कौतुक वेगळ्या शब्दात होते. तेव्हापासून ते मला कॉलेजमध्ये ‘लेखक’ असे म्हणत. कधी फ.मुं. सोबत नसताना म्हणत ‘आपले लेखक कुठं दिसत नाहीत’ त्यांचं हे संबोधन उत्साहवर्धक होतं.
- फ. मु. शिंदे आणि गणेशराव दुधगावकर हे रॅपर (पुस्तक-वह्यांना) लावत असत.” वस्तुतः गणेशराव सधन कुटुंबातून आलेले; पण ना कुठला अहंकार, ना कुठली पोझ. निगर्वीपणा हा गणेशरावांचा स्वभावविशेष. फ. मुं. आणि



गणेशरावांचे काही किस्से पानतावणे सरांनी आपल्या शब्दांत व्यक्त केले आहेत. पानतावणे सरांशी त्यांचे अत्यंत जिद्दाळ्याचे संबंध असल्याचं त्या दोघांच्या संवादातून जाणवत होतं.

- गावाकडील एका आजारी माणसाला बापूसाहेबांनी पंधरा दिवस औरंगाबाद येथे समर्थ नगरमधून पायी चालत जाऊन घाटीत जेवणाचा डब्बा पाठवला, अशी त्यांची सेवाभावी वृत्ती.
- देशपातळीवर बापूसाहेबांसारखे तरुण कार्यकर्ते प्रत्येक जिल्ह्यात निर्माण झाले. बापूसाहेबांचे नवीन नेतृत्व जरी उभारून येत होतं तरी जुन्याही लोकांचा त्यांनी आदरच केला. राजकारणाची आवड विद्यार्थी दशेपासूनच होती; पण ते विकास प्रेरीत व सकारात्मक होते. त्यांनी स्वयंकेंद्रीत राजकारण कधीच केले नाही.
- बापूसाहेबांचा लोकशाही मूल्यांवर विश्वास असल्यामुळे त्यांच्या प्रेरणेने पुण्या, मुंबईत मराठवाड्यातील लोकांसाठी हॉस्टेल उभारणी, जिल्हा परिषद, पंचायत समित्या, मार्केट कमिटी विविध प्रकारचे सहकारी प्रकल्प उभे राहिले.
- पाथरी तालुक्यातील पाथरगव्हाण या गावात प्राथमिक आरोग्य केंद्र आणले गावातील प्राथमिक आरोग्य केंद्र संदर्भात त्यांची मदत मोलाची ठरली. शेका पक्षाची जिल्हापरिषद असताना पाथरगव्हाण बु. येथे पी. एच. सी. मंजूर झाली.
- प्राचार्य रामदास डांगे यांच्या ज्ञानेश्वरीच्या कामाचा गौरव करण्याचे ठरविले. त्यावेळी समितीचे अध्यक्ष शेषेरावजी देशमुख होते. यासाठी मोठी आर्थिक तरतूद करावी लागणार होती. बापूसाहेबांनी पंचवीस हजार रुपयांची मदत त्यांना सहज केली.
- मंत्रीपद मिळताच लाल दिव्याच्या गाडीतून फिरताना त्यांना व्यक्तिगत थाटामाटाऐवजी खेड्यापाड्यातील गोरगरिबांच्या मुलांसाठी कॉलेज काढावे असे वाटले आणि परभणी व जिंतूर इथे कॉलेज काढून पाथरी, सेलू तालुक्यातील गावांत शाळा काढल्या. आज त्या कॉलेज व शाळांचे भव्यदिव्य रूप पाहिल्यावर बापूसाहेबांच्या त्या काळातील वैचारिक दूरदृष्टीची कल्पना येते. छत्रपती शाहूंच्या विचारांचा साक्षात कृतिशील आविष्कार म्हणजे बापूसाहेब !
- कर्मवीर एक प्रदीर्घ आणि समृद्ध अशी परंपरा महाराष्ट्राला लाभली आहे. कर्मवीर विठ्ठल रामजी शिंदे, कर्मवीर भाऊराव पाटील, कर्मवीर दादासाहेब गायकवाड अशा दिग्गज कर्मवीरांच्या कर्तृत्वाने ही भूमी लौकिकसंपन्न झाली आहे. बापूसाहेब देखिल या भूमीतले कर्मवीरच होत.
- 'अमेरिकन कॉलिफोर्निया बेव्हरीज बिअर' कंपनीने गणपतीचे लेबल बियरच्या बाटलीला लावले होते, हा हिंदू धर्माचा अपमान असल्याचा भावनिक मुद्दा त्यांनी सर्वप्रथम लोकसभेच्या सभागृहात मांडला. शेतकऱ्यांना नुकसान भरपाई द्यावी म्हणून त्यांनी हा मुद्दा संसदेत मांडला.
- बापूसाहेब धर्मनिरपेक्ष व पुरोगामी आहेत. फुले-शाहू-आंबेडकरांचा त्यांच्यावर प्रभाव असल्याने मागासवर्गीय, बौद्ध सहकाऱ्यांवर प्रेम करतात; पण ब्राह्मणांचा द्वेष करत नाहीत. 'सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय'.
- पुरोगामी वैचारिक भूमिका आणि व्यक्ति-अभिव्यक्ती स्वातंत्र्याचे बापूसाहेब दुधगावकर भोक्ते आहेत. काँग्रेस, राष्ट्रवादी व शिवसेना अशा पक्ष प्रवासात त्यांनी पक्षीय वैचारिक भूमिकेची चौकट राखून व्यक्तिस्वातंत्र्याची मात्र कधीच गळचेपी होऊ दिली नाही.



- बापूसाहेबांचे व्यक्तिमत्त्व, लोकांचे प्रश्न सोडवण्याची तळमळ आणि सुसंस्कृत वारसा यामुळे बापूसाहेब या क्षेत्रातही अपेक्षेप्रमाणे यशस्वी झाले.
- बापूसाहेबांची मंत्रालयीन स्तरांवर अत्यंत गतीशिल कार्यपध्दती होती. खात्याकडून आलेली फाईल तिसऱ्या दिवशी कॅबिनेटकडे पाठविली जात होती. विरोधकांना अत्यंत सुबक उत्तरे देऊन ते गप्प करत असत.
- बापूसाहेबांचे एक वैशिष्ट्य म्हणजे शासनाचा विनाकारण होणारा खर्च टाळणे हे होय.
- विविध अधिकारी, कर्मचारी यांच्या बदल्या, त्यांच्या सोयीप्रमाणे केल्या जात असत. त्यावेळी भ्रष्टाचार निषिध्द होता.
- बापूसाहेबांनी एका मित्राबद्दल असे उद्गार काढले, “हे माझे मित्र आहेत व महामंडळानी त्यांना अभ्यास दौऱ्यासाठी शिकागोला पाठविण्याचे ठरविले आहे. ते शिकागोला गेलेच पाहिजेत.” त्यांच्या पी.ए. व पी.एस. नी दोन दिवसांत पासपोर्ट, व्हीसा, चलन सर्व व्यवस्था केली. परदेश दौऱ्यासाठी मंत्रीमंडळाची परवानगी घ्यावी लागते. त्यास बापूसाहेबांनी मा. सुधाकरराव नार्डक साहेबांची कार्योत्तर मान्यता घेतली व मित्रास शिकागोला रवाना केले.
- बापूसाहेबाने कोणापुढे मान झुकवली नाही व ते सतत सत्याची पाठराखण करीत राहिले. सुर्याला कोणी हात लावीत नाही, हिमालयाला कोणी वाचवित नाही. बापूसाहेब सत्य बोलतात ते कोणाच्याही बापाला भीत नाहीत. त्यांनी सर्वसामान्य सहकाऱ्यांना पुढे आणण्यास मदत करून विविध पदावर नेतृत्व करण्याची संधी देवून त्यांचे कर्तृत्व फुलविले.
- संपूर्ण महाराष्ट्रात बापूसाहेबांनी विविध ठिकाणी अचानक दौरे करून रोजगार हमीच्या कामातील अनियमीतता उघडी पाडली व त्यामुळे काही अधिकाऱ्यांना शिक्षा झाल्या. त्यांची निलंबने झाली.
- न केलेल्या कामांचे श्रेय लाटण्याच्या सध्याच्या युगात बापूसाहेब यांच्यासारखा राजकारणी मिळणे कठीणच. त्यांच्या या अंगभूत गुणामुळे लोकांनी त्यांना सतत भरभरून पाठिंबा दिला व ते आमदार, खासदार, मंत्री अशा यशाच्या पायऱ्या चढतच गेले.
- परभणी जिल्हा परिषदेतील खरेदीचा घोटाळा उघड केला आणि बापूसाहेबांनी विधीमंडळात हा प्रश्न उपस्थित केला. संबंधीतास शिक्षा देण्यास भाग पाडले.
- काँग्रेसचे ते राज्य उपाध्यक्ष असतांनाही त्यांनी आणीबाणीचे कधीच समर्थन केले नाही. उलट ते आणीबाणीच्या विरोधी मते प्रकट करत असत. शिवसेनेत असताना त्यांनी धार्मिक उन्माद कधीच स्वीकारला नाही. आपली सामाजिक, राजकीय मते ते बिनधास्त मांडत असतात.
- बापूसाहेब वसमत येथे आले असता सांगितले की, ‘मी मुख्यमंत्री ए. आर. अंतुले यांना भेटलो व ह्या गोष्टीची सविस्तर कल्पना दिली व मयत झालेल्या व जखमी झालेल्या लोकांना आर्थिक मदत केली.’
- अतिवृष्टीच्या वेळी बापूसाहेबांनी त्यावेळच्या मंत्री यशोदा बजाज उर्फ दिदी व कलेक्टर सौ. सुदाभावे ह्यांना वसमत येथे बोलावून आणले व सर्व अतिवृष्टी भागात भेटी देण्यासाठी दौरा काढला. वसमत तालुक्यात अतिवृष्टीमुळे दुष्काळ पडला होता त्यावेळी तालुक्याला त्याची जाणीव न होऊ देता शासनाकडून प्रचंड मदत





आणून लोकांची अडचण दूर केली.

- ज्ञानोपासक कॉलेजेस व शाळांमध्ये बहुजन समाजातील, मागासवर्गीय प्रवर्गातील व अल्पसंख्यांक समाजातील गुणवंत मुला-मुलींना प्राध्यापक-शिक्षक होण्याची संधी मिळाली. विशेष म्हणजे कुठलेही तथाकथित डोनेशन न घेता बापूसाहेबांनी गरीबांची मुले नोकरीला लावली. नोकरी देताना त्यांनी जात पाहिली नाही, धर्म पाहिला नाही, की नातेवाईक पाहिला नाही. सर्व जाती-जमातींना नोकरीची संधी दिली. गुणवत्ता व योग्यता असेल अशा गरीब मागासवर्गीय एस.सी., एस.टी. उमेदवारांना प्रसंगी खुल्या जागेवर घेतले. छत्रपती शाहूंच्या आरक्षण धोरणाची ही खरी अंमलबजावणी आहे. छत्रपती शाहू महाराज असेच आपल्या संस्थातील मागासवर्गीय लोकांच्या पाठीशी राहत असत.
- साधी राहणी आणि उच्च विचारसरणी हे बापूसाहेबांचे वैशिष्ट्ये आहे. अहंकार मग तो श्रीमंतीचा, जातीचा ना शिक्षण संस्थांचा बापूसाहेबांना कधीच शिवला नाही. निगर्वी, साधे सरळ व प्रेमळ व्यक्तिमत्त्वाचे धनी अॅड. बापूसाहेब आहेत. बापूसाहेबांचा मित्रपरिवार सर्व जाती व सर्व धर्मातील आहे. सामाजिक समता लोकशाही व धर्मनिरपेक्षता हा बापूसाहेबांचा पिंड आहे.
- बापूसाहेबांविषयी बोललेले मित्र त्यांच्या भावना आजही विसरलेले नाहीत. “इतने अमीर होने के बावजूद, इतनी सादगी से पेश आना, कही कोई गुरु नहीं. कोई दिखावा नहीं, एक नेक इन्सान है, वाकेही सलिखा और इन्सानियत की मिसाल है।” अशाच भावना मित्रांमध्ये चर्चितल्या जायच्या, असं हे खेळाडू व्यक्तिमत्त्व जिकलं म्हणून उतलं नाही मातलं नाही. हारलं म्हणून हिरमुसलं नाही.

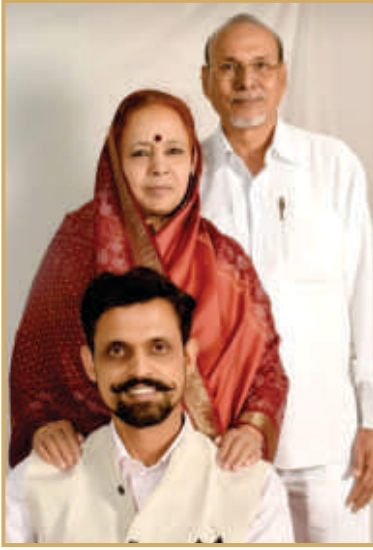


- बापूंच्या मित्रांच्या शब्दात “ आरे देखो भाई शफी सहाब, गणेशराव फरिश्ते जैसे लग रहे हैं, नई, क्या बात है साहब! उनके घुंगराले लंबे-लंबे सर के बाल, मुँहें बढी हुई दाढी, सफेद कुर्ता पायजामा, ओ आगे आगे और हम उनके पिछे-पिछे चले जा रहे है! ऐसा लगता है जैसे मसिहा आगे चल रहा है और काफिला पिछे पिछे बढता जा रहा है। वाह ! क्या खुब मंजर है।”

- गणेश दुधगावकर यांनी खासदार आणि आमदार असलेल्या काळात शेती, शिक्षण, उद्योग आदी विषयावर संसदेत चर्चेत भाग घेऊन आपल्या मतदार संघाचे प्रश्न प्रामुख्याने मांडले.
- चारधाम यात्रेसाठी गेलेले ४० ते ५० लोक प्रायवेट ट्रॅव्हल्समधून दिल्ली जवळील दवाखान्यात दाखल केले. ही बातमी वाऱ्यासारखी ह्यातनगरमध्ये येऊन धडकली व सर्व गावातील लोकांनी आक्रोश केला व छातीवर हात टाकून रडत होती. ही बातमी अगोदरच बापूसाहेब यांना कळली होती. त्यावेळी बापूसाहेब यांनी स्वतः सांगितले की, महाराष्ट्रातील एक शिक्षण मंत्री आहे व ही सर्व मंडळी माझ्या मतदार संघातील आहे. तेव्हा कोठे दवाखान्यातील यंत्रणा हालली.
- परभणी-पाथरी रोडवरील एकरुखा गावात पोळ्याच्या मिरवणूकीचा वाद होता तो समोपचाराने मिटवला.
- गणेशरावांची धडाडी आणि मातीशी असलेली त्यांची घट्ट नाळ ऐकून होतो. फ. मुं. हे तर अस्मितादर्शचं फाईडच! गणेशरावांचं आत्मीय वागणं कमालीचं भावून गेलं होतं.
- इत्र की मिट्टी में मिलकर ही महेक जाती नही, और फोड डाले तोभी हिरि की चमक जाती नहीं. ईश्वराने ‘मित्र’ हे

रसायन बनवले आहे, असे म्हटले जाते. मन मोकळे करायला जेव्हा कोणी नसतो तेव्हा 'मीं हूँ ना' असे जो म्हणतो तो आपला खंबीर मित्र असतो. असाच मित्र म्हणून गणेशराव दुधगावकर.

- डॉ.सौ. संध्याताई यांचे व्यक्तिमत्व फुलण्याला गणेशरावांनी पूर्ण वाव दिला. पाठिंबा दिला. त्यांची जोडी लक्ष्मीनारायणासारखी आहे. त्या केवळ घर संसारच सांभाळतात असं नव्हे तर ज्ञानोपासक महाविद्यालयात प्राध्यापिका, आणि टप्प्याटप्प्याने प्रगती करीत प्राचार्या



पदाचा कारभार

सांभाळीत 'पोखर्णी' या छोट्याशा खेड्या गावात राहून जाणं येणं करीत स्वतः शेतीवर घर करून राहून शेतीचा व्यवहारही सांभाळतात. बापूसाहेबांच्या यशोशिखरात संध्याताईंचाही बरोबरीचा वाटा आहे.

- बापूसाहेबांच्या सहचारिणी सौ. संध्याताई विज्ञानामध्ये पीएच.डी. आहेत. ज्ञानसंपन्न असूनही आपल्या ज्ञानाचा, पदाचा, वेगळेपणाचा, श्रीमंतीचा त्यांच्यात लवलेसही आढळून येत नाही. त्यांच्या मुलांमध्येही असाच साधेपणा मी पाहिलेला आहे. आपण कोणी विशेष आहोत, असं त्यांनी कधी दाखवलं नाही.
- साहित्यिक चळवळीमध्ये त्यांचा मोलाचा वाटा आहे. महाराष्ट्रातील अनेक थोर साहित्यिक त्यांचे मित्र आहेत.
- ज्यांच्या घरची चूल पेटणे शक्यचं नाही पण विषयात पारंगत आहेत अशा प्राध्यापकांची बापूसाहेबांनी जाणीवपूर्वक निवड केली. गुणवत्तेशी

तडजोड करायची नाही. याचा अर्थ गणेशराव हे आर्थिक मोहापासून किती दूर होते ही त्याची साक्ष ! सामाजिक बांधीलकीचं सूत्र किंवा सामाजिक न्यायाचं सूत्र विसरायचं नाही, हा गणेशरावांचा दृष्टिकोन कौतुकास्पदचं मानला पाहिजे.

- बापूसाहेबांचे मोठे बंधू लिंबाजीराव उर्फ दादा जिल्हा परिषदेचे अध्यक्ष होते. सध्याच्या जगात राजकारण हा झटपट श्रीमंत होण्याचा मार्ग म्हणून ओळखला जातो; पण बापूसाहेब त्या मार्गातले नव्हते. ते खानदानांनी श्रीमंत होते व पैसे मिळवणे हे त्यांच्या आयुष्याचे ध्येय त्यावेळीही नव्हते आणि नंतरही आयुष्यात कधीही नव्हते.
- Power corrupts and absolute Power absolutely corrupts असे म्हणतात. तसे वागणाऱ्या काँग्रेस पक्षाला न जुमानता तुम्ही दोघे एक मोठे उदाहरण युवकांच्या पुढे घालून दिले आहे आणि म्हणून तुमचा गर्व गौरव झालाच पाहिजे.
- मुद्दामहून त्यांनी 'मेरीट ओरियन्टेड' शिक्षणाऐवजी 'आप लिफ्टमेंट अँड रिहॅबिलिटेशन मुहमेंट फॉर दी रुरल स्ट्रुडॅन्ट्स. मराठवाड्याच्या शिक्षण क्षेत्रात संगणकशास्त्र हा विषय सर्वापर्यंत नेण्याचे काम ज्ञानोपासक शिक्षण संस्थेने सर्वप्रथम केलेले आहे.

- गणेशरावजी दुधगावकर हे राजकारण, समाजकारण व शैक्षणिक क्षेत्रातील पारदर्शी मन असलेले व्यक्तिमत्त्व. यांच्या नावाला व व्यक्तिमत्त्वाला एक विलक्षण अशी आदरयुक्त दराच्याची किनार आहे. अंतःकरणाने शुद्ध असलेले हे नेतृत्व 'जे पोट्यात तेच ओठात' ही उपमा धारण करून आहे.
- बापूसाहेब जनपरिषद नावाच्या संघटनेचे पदाधिकारी होते, त्यांनी परभणी जिल्ह्यात २००० साली समाजवादी जनपरिषद नावाची एक संघटना स्थापन केली होती.
- बापूसाहेबांबद्दल 'एक व्यक्ती एका ध्येयाने प्रेरित झाली, तर अशक्यप्राय वाटणारं कामही ती सहजपणे करू शकते' हे सुविचार म्हणून वाचलेलं वाक्य आपण प्रत्यक्षात साकार केल्याच्या अनेक घटना साक्ष आहेत.
- जिंतूर तालुक्यातील मैनापूरी येथील सहकारी तत्त्वावरील आशिया खंडातील पहिला खत कारखाना या कारखान्याच्या निर्मितीच्या शुभारंभ प्रसंगी पूजनानंतर बाप्पा (गणेशरावांचे मोठे बंधू लिंबाजीराव) आपल्या भाषणात म्हणाले होते, "खत कारखाना निर्मितीचं हे खूप मोठे काम होतं. मात्र इतर लोकांप्रमाणे माझ्या मनात तीळ मात्र शंका नव्हती. कारण गणेशरावांनी एखादी गोष्ट करण्याचं ठरवलं की, ती गोष्ट, ते काम पूर्ण झालंच पाहिजे ही जिद्द लहान वयापासून त्यांच्याकडे असल्यामुळे हे काम ते निश्चित पूर्ण करणार हा आत्मविश्वास मला होता आणि गणेशरावांनी तो आज खरा करून दाखविला."



- बापूंच्या खासदारकीच्या कारकिर्दीत विलासराव देशमुख काही काळ महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री तर काही काळ केंद्रीय मंत्रीमंडळात होते. दोघांचे राजकीय पक्ष भिन्न होते तरीही दोघांमध्येही परस्परविषयी आस्था व आपूलकी होती. बापूसाहेबांना खासदारकीची संधी बाळासाहेब ठाकरेंनी स्वतः बोलावून दिली होती. साहजिकच बापूंना त्यांच्याविषयी नितांत आदर होता.
- परभणी, जालना लोकसभा मतदारसंघाचे प्रतिनिधीत्व करत असताना त्यांनी खासदार निधीमध्ये कधीही परभणी आणि जालन्यामध्ये दुजाभाव दाखविला नाही. जालना लोकसभा मतदार संघातील घनसावंगी व परतुर या विधानसभा मतदार संघांमध्ये त्यांनी भरपूर प्रमाणात निधी देऊन त्याची माहिती सर्वसामान्यांपर्यंत पोहचविली एवढेच नव्हे तर जालना - नगरसोल डेमो एक्सप्रेससाठी देखील त्यांनी प्रयत्न केले.

वर्तमान राजकारणाबद्दल बापूसाहेबांनी यापूर्वीच भविष्यवाणी केली होती कि, परस्पर विरोधी भूमिकांमुळे यापुढच्या निवडणुकात मतदार निर्णायक ठरतील. काही पक्षांच्या अस्तित्वाचा प्रश्न निर्माण होईल. माझे हे स्पष्ट मत अनेकांना पटणार नाही; पण वस्तुस्थिती आतल्या आत धुमसते आहे.

## बापुसाहेबांच्या शब्दांत...

- अंदाजे सन 1965 ला विद्यार्थी प्रतिनिधीची निवडणूक लढविली. तेव्हा युथ काँग्रेसच्या बॅनरखाली लढलो. युक्रांद आणि शेकापचें विद्यार्थी चळवळीत अस्तित्व होते. पुढे शिवाजी कॉलेजचा विद्यार्थी संसदेचा अध्यक्ष झालो.
- मी औरंगाबादला एम.पी. लॉ कॉलेजला शिकत असताना मराठवाडा विकास आंदोलन सुरु केले. त्याचं नेतृत्व समर्थपणे सांभाळत मराठवाड्याच्या विकासाचा अर्जेडा मी पुढे रेटून यशस्वी झालो.



तत्कालिन केंद्रीय मंत्री मा. माधवराव सिंधीया (शिंदे)  
यांच्या सोबत बापुसाहेब आणि साथीदार

- मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद नामांतराच्या वेळी मी या चळवळीचे खंबीर व प्रभावी नेतृत्व करू शकलो, हे सगळे श्रेय मी माझे कुटुंब प्रमुख कै. लिंबाजीराव दादा व परिवारास देतो. असा की महाराष्ट्र राज्याचा टेक्निकल विभागाचा मंत्री म्हणून माझ्याकडे खाते आले.
- मी एक मंत्री म्हणून विना अनुदानित पद्धतीने इंजिनियर कॉलेज परवानगीचे धोरण राबवले.
- एल.एल.बी. ला प्रवेश घेतला त्यावेळेस एम.पी. लॉ कॉलेज स्टुडंट काउन्सिलचा अध्यक्ष 1971-72 ला झालो. विद्यार्थी चळवळी चालू होत्या. तिथेही विद्यार्थी संसदेचा अध्यक्ष म्हणून निवडून आलो. एल.एल.बी. करतानाच अंदाजे बहात्तर साली मराठवाडा विकास प्रश्नासंबंधी नवी चळवळ उभी राहिली. 'मराठवाडा स्टुडंट युनियन असोसिएशन' (मुसा) च्या अध्यक्षपदी निवडला गेलो.
- आम्ही आमच्या मागण्या थेट मुख्यमंत्र्यांसमोर ठेवल्या. जायकवाडी प्रकल्प, अप्पर पैनगंगा, लोअर दुधना, उजनी प्रकल्पासह इतर नद्यावरची धरणे, विष्णुपुरी प्रकल्प पूर्ण करावीत, ब्रॉडगेज रेल्वे, आकाशवाणी, हायकोर्ट आणि एक नवा मुद्दा मांडला, मराठवाड्याचा व्यक्ती मुख्यमंत्री झाला पाहिजे.
- तेव्हा मी मराठवाडा पदवीधर मतदार संघातून विद्यार्थी चळवळीच्या माध्यमातून निवडून आलो होतो. मराठवाडा विद्यापीठ एकझीकेटीव काउन्सिलचा सदस्य होतो.
- मराठवाड्यातील एकमेव आमदार होतो जो नामांतर चळवळीच्या बाजूने उभा राहिला.



गौरवग्रंथ सारांश



हिंदी/मराठी

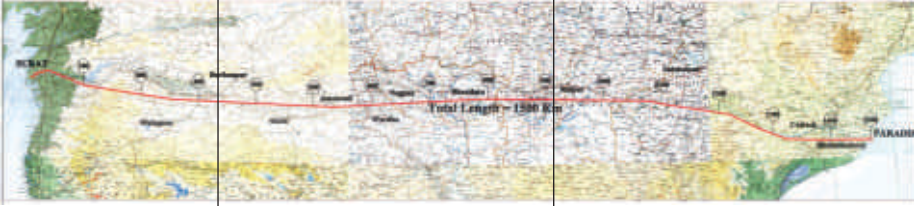
शब्दांकन "कर्मयोगी अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब"  
अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथातुन घेण्यात आले आहे.



प्रकाशित संपुर्ण गौरवग्रंथ




## खासदार अॅड. गणेशराव दुधगांवकर यांनी केलेल्या कामांचा आढावा

	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / सद्य स्थिती
<p>1. हजीरा गॅस पाईपलाईन सन 1983 पासूनचे दूरदर्शी पाऊल (मराठवाड्यातील आणि विदर्भातील औद्योगिक विकास आणि रोजगार निर्मितीसाठी महत्वपूर्ण 25 लाख प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार निर्मितीची क्षमता)</p> 	<p>हजीरा-नांदेड-नागपूर गॅस पाईपलाईन उभारण्यासाठी प्रस्ताव सादर</p> <p>भविष्यात बुलढाप्याहून जालना, औरंगाबाद आणि परभणीसाठी जोडणी देण्यात यावी तर अकोल्याहून वाशिम, हिंगोली, नांदेडसाठी जोडणी देण्यात यावी, यासाठी सातत्याने केंद्र शासनाकडे पाठपुरावा सुरूच आहे.</p>	<p>→ सूरत (गुजरात) ते पॅराव्दिप (ओरीसा) अशा 1550 कि.मी. लांबीच्या गॅस पाईपलाईन प्रकल्पास मान्यता.</p> <p>→ या लाईनवरील महाराष्ट्रातील धुळे, नंदूरबार, जळगाव, बुलढाणा, अकोला, अमरावती, वर्धा, नागपूर, भंडारा या जिल्ह्याची जोडणी असून आगामी 36 महिन्यात. <b>GAIL कंपनीस गॅस पाईप लाईन जोडणीचे कंत्राट</b></p>
<p>2. रेल्वे उपमार्ग</p>	<p>करण्यामध्ये प्रमुख भूमिका</p>	<p>→ दळण-वळण सुविधाजनक व्हावे म्हणून चुडावा-वसमत हा बायपास रस्ता मंजूर करून घेतला.</p>
<p>3. परभणी महापालिका</p> <p>4. परभणी येथे शासकिय वैद्यकिय महाविद्यालय</p> <p>5. केंद्र सरकारचे फुड पार्क</p> <p>6. केंद्रिय विद्यालय</p>	<p>केंद्रिय विद्यालय संघठन यांच्या वतीने परभणी व जालना जिल्हा स्थानी केंद्रिय विद्यालय - प्रस्ताव सादर</p>	<p>→ सर्वांत जुन्या जिल्ह्यांपैकी एक असल्यामुळे हि मागणी केली</p> <p>→ औरंगाबाद येथे मंजूर झाले.</p> <p>→ केंद्रीय विद्यालय संघठन, नवी दिल्ली यांच्या वतीने परभणी व जालना या जिल्ह्याच्या ठिकाणी 1 ते 10वी पर्यंत CBSE पॅटर्ननुसार केंद्रीय विद्यालय सुरू करण्यासाठी रीतसर प्रस्ताव सादर.</p> <p>→ राज्य शासनाकडून जमीन अधिग्रहण प्रक्रिया पूर्ण होताच हे विद्यालय अस्तित्वात येतील.</p> <p>→ ग्रामीण भागातील बुद्धिमान विद्यार्थ्यांच्या जीवनाला विशिष्ट ओळख देण्यासाठी हे विद्यालय महत्वपूर्ण ठरणार.</p>
<p>7. केंद्र सरकारचे मॉर्डन कॉलेज</p>	<p>घनसावंगी, हिंगोली</p>	



	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / सद्य स्थिती
<b>सिंचन (कालवे)</b>		
1) माजलगाव उजवा कालवा	16 वर्षांपासून काम अपूर्ण. 101 कि.मी. पर्यंतचे काम पूर्ण, परंतु प्रकल्प अपूर्ण.	<ul style="list-style-type: none"> <li>→ सातत्याने पाठपुराव्यामुळे कि.मी. 101 ते 114, 114 ते 124 आणि 125 ह्या पुढील कामास प्रशासकीय मान्यता निविदा प्रक्रिया पूर्ण, आता प्रतिक्षा प्रत्यक्ष कामाची.</li> <li>→ कार्यारंभ आदेशाकरीताही सातत्यपूर्ण पाठपुरावा सुरुच.</li> <li>→ प्रकल्प पूर्णतेनंतर म्हणजेच कि.मी. 134 पर्यंत कालवा पूर्ण झाल्यावर <b>गंगाखेड तालुक्यातील १२,००० हेक्टर जमीन सिंचनाखाली येणार.</b></li> </ul>
2) निम्न दुधना प्रकल्प	वेगवर्धित वेगसिंचन कार्यक्रमात समावेश (AIBP)	<ul style="list-style-type: none"> <li>→ सदरील प्रकल्पासाठी AIBP अंतर्गत यावर्षी 45 कोटी रु. चा निधी प्राप्त</li> <li>→ प्रकल्पग्रस्त 'नान्सी' गावाचे पुनर्वसन होऊन धरणाचे काम 99% पूर्णत्वास.</li> <li>→ उजवा कालवा 47% तर डावा कालवा 92% पूर्ण झाला.</li> </ul>
3) करपरा मध्यम प्रकल्प	2009-10 विशेष दुरुस्ती प्रस्ताव शासनाकडे मान्यतेस्तव सादर	<ul style="list-style-type: none"> <li>→ प्रकल्पाच्या विशेष दुरुस्ती प्रस्तावाची किंमत रु. 9.42 कोटी यास शासन मान्यता.</li> <li>→ प्रकल्पाच्या पहिल्या 2 कि.मी. चे अस्तरीकरण पूर्ण होऊन 1041 हेक्टर जमीन सिंचनाखाली येणार.</li> </ul>




	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / सद्य स्थिती
<b>रस्ते</b>		
1) पैठण-आपेगांव-अंबड-घनसावंगी-कुं.पिंपळगांव-आष्टी-पाथरी-पोखर्णी-सिंगणापुर-पुर्णा ते नांदेड	राष्ट्रीय महामार्गासाठी राज्य शासनाकडे प्रस्ताव सादर कै.मा.ना. शंकरराव चव्हाण ह्यांचे जन्म ठिकाण पैठण (नाथसागर) ते कर्मभुमी नांदेड राष्ट्रीय महामार्ग म्हणून अंमलबजावणी, पुर्णतेस येत आहे.	→ राष्ट्रीय महामार्ग मंजुरीकरीता विहित नमुन्यात मार्गाची संपूर्ण माहिती, साखर कारखाने असल्याने शेतकऱ्यांचा फायदा यासाठी राज्य व केंद्र सरकारकडे प्रस्ताव सादर व सद्यस्थितीत रस्ता पुर्णत्वास आला आहे. 
2) वाटूर-जितूर-औंढा नागनाथ-नांदेड व औंढा नागनाथ-हिंगोली महामार्ग	या मार्गाची BOT तत्वावर चौपदरीकरणाची सातत्यपूर्ण मागणी. 2012-13 मध्ये सदरील मार्गास राज्य सरकारची BOT वर मान्यता. निवीदा जाहीर.	दृष्टिक्षेपात महामार्ग (वाटूर ते जितूर) → एकूण लांबी - 144 कि.मी. त्यापैकी → चौपदरीकरण - 61.21 कि.मी. → सिमेंट काँक्रीटीकरण - 5.95 कि.मी. → दुपदरीकरण - 77.24 कि.मी. प्रकल्पासाठी खर्च - रु. 686 कोटी
3) राष्ट्रीय महामार्ग	राष्ट्रीय महामार्ग NH-222	प्रस्तावित कामासाठी प्राप्त निधी → ढालेगाव ते मानवत रोडसाठी रु. 17.50 कोटी → मानवत रोड ते दंत महाविद्यालय रु. 5.50 कोटी. → दंत महाविद्यालय ते रेल्वे स्टेशन परभणी रु. 5.50 कोटी → श्री दत्तधाम ते झिरो फाटा रु. 5.00 कोटी
4) राष्ट्रीय महामार्ग -222	भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, नवी दिल्ली येथे NHDP - IVA मध्ये 2010-11 वर्षी प्रस्तावित करण्यात यश. कि.मी. 342-442 पर्यंतच्या रस्त्याचा कामाचे कंत्राट L&T कंपनीला . <b>मानवत रोड येथे रेल्वे उड्डाण पूल</b>	→ राष्ट्रीय महामार्ग -222 (कि.मी. 442/00 ते 615/00) म्हणजेच मानवत रोड ते महाराष्ट्र-आंध्र सीमा या मार्गाच्या दुहेरीकरणाच्या कामाचे अंदाजपत्रक रु. 695 कोटी भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरणाकडे मान्यतेस्तव सादर. → या वर्षी 2013-14 मध्ये परभणी बायपाससह या प्रकल्पास मान्यतेसाठी सातत्याने पाठपुरावा (पूर्ण काम झाले)



	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / सद्य स्थिती
5) राष्ट्रीय महामार्ग -222	विसावा कॉर्नर ते दत्तधाम, परभणी शहरातून	→ 32 कोटी मंजूर
6) परभणी बायपास	पारवा ते वांगी असोला	→ 200 कोटी मंजूर
7) छत्रपती शिवाजी महाराज पुतळा ते श्री दत्तधाम मंदिर (सर्वाधिक अपघात प्रवण रस्ता)	मागील 12 वर्षांपासून कोणतेच काम नाही	→ 2010-11 शिवाजीनगर ते खानापूर फाटा - साईड पट्टा - 1 कोटी 20 लाख खर्च → 2012-13 साईड पट्ट्यावर डांबरीकरण - 1 कोटी रु. खर्च (छत्रपती शिवाजी महाराज पुतळा ते वसंतराव नाईक पुतळा) → 2012-13 रस्ता दुभाजक आणि विद्युत पोल हटविणे - 2 कोटी 88 लाख रु. खर्च
8) बैतूल-अंजनगाव सुर्जी-आकोट-अकोला-रिसोड-सेनगाव-जितूर-परभणी-गंगारखेड-अंबाजोगाई-कळंब-उस्मानाबाद	सदरील मार्गसि राष्ट्रीय महामार्गाचा दर्जा देण्यात यावा, यासाठी 2010-11 मध्ये राज्य सरकारकडे मागणी	→ सदरील मार्गाचे रूपांतर राष्ट्रीय महामार्गात व्हावे, यासाठी विहित नमुन्यात राज्य व केंद्र शासनाकडे प्रस्ताव सादर व सातत्याने पाठपुरावा व मंजूरी
9) राष्ट्रीय महामार्ग-211 (पाचोड ते शहागड) 30 कि.मी.	NHDP - IVB	→ राष्ट्रीय महामार्ग-211 चे चौपदरीकरण कामास प्रत्यक्ष सुरुवात. → शहागड येथील रु. 60 कोटीचा उड्डाणपूल प्रस्तावित.
10) प्रधानमंत्री ग्रामसडक योजना	टप्पा-5 मधील 12 कामे निविदा प्रतिसादाअभावी प्रलंबित, पुलांची कामेही प्रलंबित प्रधानमंत्री ग्रामसडक योजने अंतर्गत परभणी जिल्ह्यात रु. 146 कोटी ची कामे प्रस्तावित. प्रधानमंत्री ग्रामसडक योजने अंतर्गत जालना जिल्ह्यात रु. 30 कोटी ची कामे प्रस्तावित	→ टप्पा-5 मधील सुधारीत अंदाजपत्रकासह (रु. 18 कोटी) केंद्र सरकारकडे मान्यतेस्तव सादर → मार्गावरील 19 पुलांच्या कामास मान्यता निविदा प्रक्रियाही पूर्ण-प्रत्यक्ष कामास प्रारंभ (14 कोटी 40लाख रु.) → परभणी आणि जालना जिल्ह्यातील प्रस्तावीत कामांना याच वर्षी प्रारंभ व्हावा, यासाठी अग्रक्रमाने पाठपुरावा





	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / सद्य स्थिती
<b>रेल्वे</b>		
1) परभणी - मुद्रखेड 	परभणी-मुद्रखेड रेल्वे मार्गाच्या दुहेरीकरणाची मागणी.	→ रेल्वे मार्ग दुहेरीकरणस मान्यता मिळून प्रस्तावीत 350 कोटी रू. चे अंदाजपत्रक रेल्वे बोर्डाकडे सादर. <b>काम पूर्ण झाले आहे.</b> प्रत्यक्ष निधी वाढवून कामाच्या शुभारंभासाठी रेल्वे मंत्रालयाकडे सातत्याने पाठपुरावा.
2) परभणी-मनमाड सिकंद्राबाद-मुद्रखेड आदिलाबाद-मुद्रखेड	या सर्व रेल्वेमार्गाच्या दुहेरीकरणाची मागणी	→ 2013 च्या रेल्वे अर्थसंकल्पात सदरील रेल्वे मार्गाच्या दुहेरीकरणाच्या कामाच्या सर्वेक्षणास मान्यता प्रदान
3) परभणी (जं.) आणि पुर्णा (जं.)	परभणी (जं.) आणि पुर्णा (जं.) या दोन्ही रेल्वेस्थानकांचा 'आदर्श रेल्वेस्थानक' यादीत समावेश व्हावा यासाठी केलेल्या प्रयत्नास 2010 मध्ये यश. यादीत समावेश.	→ 'आदर्श रेल्वेस्थानक' यादीत समावेश झाल्याने दोन्ही रेल्वे स्थानकात कामास प्रारंभ. पुर्णा येथील बहुतांशी कामे पूर्णत्वास तर परभणी येथील प्लॅटफॉर्म रुंदीकरण, वॉशबल अंप्रान ही कामे प्रगतीपथावर स्थानकाबाहेरील सेक्युरिटींग एरियाची कामे पूर्ण तसेच नवीन पादचारी पुलाचे काम प्रगतीपथावर.
4) सेलू, मानवत रोड, परतूर, पोखर्णी (नृसिंह) आणि गंगाखेड रेल्वेस्थानक	या सर्व स्थानकांचा 2010-11 मध्ये मॉडर्न रेल्वे स्थानकांच्या यादीत मागणीनुसार समावेश.	→ मानवत रोड रेल्वे स्टेशनचे काम पूर्ण. सेलू, परतूर, गंगाखेड आणि पोखर्णी (नृसिंह) येथील कामे प्रगतीपथावर.
5) गंगाखेड, मानवत रोड, परतूर, सेलू, मकृवि येथे उड्डाण पूल	गंगाखेड रेल्वे उड्डाणपूलास मान्यता	→ गंगाखेड येथील रेल्वे उड्डाणपूलास मान्यता व कामास प्रारंभ. → मानवत रोड येथील उड्डाणपूल भारतातील राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरणाकडून प्रस्तावित.
6) अकोला-खंडवा	अकोला-खंडवा रेल्वे मार्ग रुंदीकरणाची मागणी	→ अकोला ते गांधी स्मारक रेल्वे मार्ग रुंदीकरणस प्रारंभ.



	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / सद्य स्थिती
7) पुर्णा (जं.) येथे मल्टिस्पेशलिटी हॉस्पिटल	2010-11 मधील रेल्वे अर्थसंकल्पात मान्यता	→ पुर्णा (जं.) येथील प्रस्तावीत मल्टिस्पेशलिटी हॉस्पिटलचा पथदर्शी प्रकल्पात समावेश करण्यासाठी रेल्वे मंत्रालयाची मान्यता. → सदरील हॉस्पिटलसाठी केंद्रीय आरोग्य मंत्रालयाकडे पाठपुरावा सुरूच
8) रेल्वे आरक्षण केंद्र	जिंतूर, मंठा, सोनपेठ, घनसावंगी, पालम तालुका पोस्ट कार्यालयात रेल्वे आरक्षण केंद्रासाठी मागणी.	→ जिंतूर येथील पोस्ट कार्यालयात रेल्वे आरक्षण केंद्रास प्रारंभ, अन्य ठिकाणी या केंद्रासाठी सातत्याने पाठपुरावा सुरू.
9) नवीन रेल्वेगाड्या सुरू करण्यात यश		
10) परळी-बीड-नगर		→ परळी-बीड-नगर हा रेल्वेमागचे काम जलद गतीने व्हावे अशी संसदेत मागणी
11) चुडावा - बसमत उपमार्ग		→ रेल्वे वाहतुकीला अडथळा निर्माण होऊ नये म्हणून चुडावा - वसमत उपमार्गाला मंजूरी दिली.

### अन्य विकास कामे

1) परभणी रेल्वे स्टेशन पोस्ट ऑफिस	परभणी आणि परतूर येथे नवीन टपाल कार्यालय इमारत बांधण्यासाठी केंद्र शासनाकडे प्रस्ताव सादर	→ परभणी आणि परतूर येथील नवीन टपाल कार्यालय इमारत बांधकामाचा प्रस्ताव शासनाकडून स्वीकृत. 12व्या पंचवार्षिक योजना प्रस्ताव समाविष्ट. → परभणी येथील इमारत बांधकामास 2013-14मध्ये प्रारंभ होईल तर परतूर येथील इमारतीसाठी पाठपुरावा सुरू
2) एफ.एम. रेडिओ परभणी	2009 पासून सातत्याने एफ.एम. केंद्र सुरू व्हावे यासाठी पाठपुरावा	→ परभणी आकाशवाणी केंद्र परिसरात एफ.एम. केंद्रासाठी आवश्यक त्या सर्व पायाभूत सुविधा पूर्ण. 102 MHz या Frequency वर एफ.एम. रेडिओ सुरू झाला आहे.

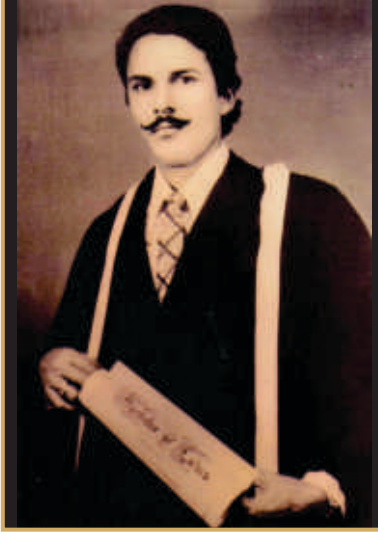
**खासदार अॅड. गणेशराव दुधगांवकर यांच्या कामाचा हा संक्षिप्त आढावा !**

सुशिक्षित मुलीशी, हुंडा न घेता लग्न करायचं हा विचार करणारे गणेशराव...  
उदगीर येथे झालेले, सर्व दुर चर्चिले गेलेल्या त्या लग्नाच्या आठवणी...

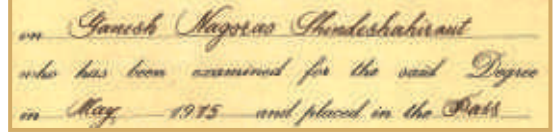
2 जून 1971



## कर्मयोगी बापूसाहेबांच्या कारकीर्दीतील काही क्षण...



माणिकचंद पहाडे विधी महाविद्यालय औरंगाबाद  
एल.एल.बी. ची पदवी प्राप्त केली असतांना



बापू से डॉ. बरदाळे, बापूसाहेब (राज्यमंत्री - स्वतंत्र कार्यभार),  
उपमुख्यमंत्री बॅरिस्टर रामराव आदिक तथा अॅड. मुंजाजीराव जाधव



राज्यमंत्री अॅड. गणेशराव दुधगांवकर यांचे मंत्रालयातील  
कक्षामधील छायाचित्र



शिवाजी महाविद्यालय परभणी तर्फे मानचिन्ह धारक विद्यापीठ खेळाडू बापूसाहेब (मागील रांगेत डावीकडून तिसरे, टाय घातलेले) सोबत साहेबराव लबडे,  
विजय ठाकूर, अविनाश पेडगावकर, एल.डी. चौधरी, लाला हाशमी, रशीद खॉन, उमर अली, अविनाश धामणगावकर, लक्ष्मीकांत गायकवाड, सुरेश जाधव,  
कु. प्रतिभा देशपांडे, कु. धामणगावकर, प्रा. वाईकर, प्रा. खेडकर, प्रा. बायस, प्राचार्य डांगे, प्रा. बागल, प्रा. तायडे, प्रा. भोईटे मॅडम (1967-68)



महाराष्ट्र स्थापनेच्या आधीपासून  
उच्च दर्जाचे समाजकार्य करणाऱ्या  
दुधगांवकर परिवाराचे सदस्य  
श्री. लिंबाजीराव आणि  
बापूसाहेब,  
राज्याचे पहिले  
मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण  
यांच्यासोबत,  
सोबत रावसाहेब जामकर

माणिकचंद पहाडे विधीकुल  
विद्यार्थी संघाच्या कार्यक्रमात  
डावीकडून प्राचार्य श्री. शास्त्री  
भाषण करताना बापूसाहेब,  
मा. शंकरराव चव्हाण  
(पाटबंधारे मंत्री म.रा.),  
अॅड. सुखदेव शेळके



मा. मुख्यमंत्री वसंतदादा पाटील  
यांच्या सोबत भोजनाचा आस्वाद  
घेतांना बापूसाहेब  
(राज्यमंत्री - स्वतंत्र कार्यभार) व  
मंत्री डॉ. बळीराम हिरे



पुर्णा सहकारी साखर कारखाना प्रथम गळीत हंगाम समारंभा प्रसंगी पूजा करतांना मा.राज्यमंत्री बापूसाहेब व डॉ. सौ. संध्या दुधगांवकर



मा.मुख्यमंत्री शंकररावजी चव्हाण यांचे स्वागत करताना मा. लिंबाजीराव दुधगांवकर अध्यक्ष (प.जि.म.स.बँक) व श्री. ओमप्रकाशजी देवडा



तत्कालीन काँग्रेस पार्टी नेत्या,  
माजी राष्ट्रपती श्रीमती प्रतिभाताई पाटील  
यांच्यासोबत मा. मंत्री अॅड. दुधगांवकर (बापूसाहेब)



महाराष्ट्र स्टेट कॉ.मार्केटिंग फेडरेशन मुंबईच्या बैठकीत फेडरेशनचे अध्यक्ष बापूसाहेब, फेडरेशनचे व्यवस्थापकीय संचालक श्री. नंदलालजी IAS व अन्य.



जिंतूर येथील खत कारखाना (पॅफको) येथे कारखान्याची पाहणी करीता असताना डावीकडून - श्री.के.आ. कान्हे, आ. रायभानजी जाधव (एम.डी.सी.चे चेअरमन), श्री. भुजंगराव कुलकर्णी (माजी सचिव), कारखान्याचे चेअरमन बापूसाहेब व श्री. सुभाषराव सूर्यवंशी (एम.डी.सी. चे सी.ई.ओ)



बहुजन हितकारणी सभेच्या कार्यक्रमात पत्रकार व साहित्यिक श्री. उत्तम कांबळे यांचा सत्कार करताना बापूसाहेब, संस्थेचे सचिव अॅड. श्रीधरराव कदम, प्राचार्य डॉ. सुरेश सदावर्ते व प्रा. डॉ. अशोक जोधळे



मुंबई येथे मा. मंत्री श्री. दिवेकर यांच्या निवासस्थानी जगप्रसिद्ध गायिका श्रीमती लता दीदी मंगेशकर यांची सद्विचारा भेट घेतांना श्री. गणेशराव दुधगांवकर परिवार तसेच दिवेकर परिवार व मंत्री डॉ. हिरे



केंद्रीय मंत्री मा. माधवराव सिंधीया (शिंदे) यांच्या समवेत अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत) सोबत साथी रामराव जाधव व एस.एच.हाशमी (परभणी)



समाजसेवक अण्णा हजारे यांनी ज्ञानोपासक जितूर येथे भेट दिली समवेत संस्थाध्यक्ष बापूसाहेब व संस्था सचिव अॅड. श्रीधरराव रावणराव कदम



राहुरीचे मा. आमदार श्री. कदम चंद्रशेखर लक्ष्मणराव यांच्या सोबत बापूसाहेब ज्ञानोपासक महाविद्यालय, जितूर येथील कार्यक्रमात



मंगीसेसे पुरस्कार प्राप्त जलपुरुष डॉ. राजेंद्र सिंहजी - अलवर (राजस्थान) यांच्यासाठी आयोजित ज्ञानोपासक महाविद्यालय जितूर येथे एका कार्यक्रमात संस्था अध्यक्ष बापूसाहेब आणि सचिव डॉ. सौ. संध्या दुधगांवकर



शिक्षण परिषदेत उद्घाटन करताना प्रसिद्ध न्यायमुर्ती श्री. चंद्रशेखर धर्माधिकारी, बापूसाहेब, प्राचार्य डॉ. सौ. संध्या दुधगांवकर, श्री. सुगावकर गुरुजी व प्रा. डॉ. अशोक जोंधळे



श्रीक्षेत्र जगन्नाथपुरी पीठाधीश्वर  
यांचा चरणस्पर्श मागील सहा-सात दशकांपासुन परभणीला झाला नव्हता.  
 अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (बापूसाहेब)  
 यांच्या निमंत्रणास मान देऊन  
 श्रीक्षेत्र जगन्नाथपुरी पीठाधीश्वर पूज्यपाद  
 जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वतीजी  
 अनेक दशकानंतर परभणीमध्ये येण्याचे भाग्य लाभले.  
 (सन 2019)







दैनंदिनी विमोचन राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान साहेब यांच्या हस्ते संपन्न झाले.

उपस्थित अमृत महोत्सव समिती सदस्य :

- श्री. साहेबराव लबडे (सेवानिवृत्त वरिष्ठ पोलिस अधिकारी), पुणे
- जुन्या उस्मानाबादचे भाग्यविधाते कै. शिवाजीराव नाडे (मुरुड) यांच्या सूनबाई सौ. वैशाली अरविंदराव नाडे
- अजित हनुमंतराव गोरे पाटील M.S. IT (USA) , डॉ. मनाली हनुमंतराव गोरे पाटील (बनसारोळा, बीड)
- विक्रमादित्य धरणीधर पाटील IIT, Powai (धाराशिव) VP-MNC Bank
- कामरान सिद्दीकी (हिंगोली)

सदरील दैनंदिनीसाठी



पंढरपुर वारीत वेळापुर येथील श्री संत ज्ञानेश्वर माऊली पादुकांच्या अभिषेकाचा  
अनेक पिढ्यांपासून मानकरी परिवार

[www.Dudhgaonkar.in](http://www.Dudhgaonkar.in)

बापुसाहेबांच्या



कारकिर्दीसाठी



संपर्क :

**समीर गणेशराव दुधगांवकर**

M.S. Mech Engg. USA

अमृत महोत्सव समिती सदस्य

सन 2002 पासून श्रीमद्भगवद्गीता अभ्यासक

Doubling of Jobs संकल्पना सुचक

+9191 4536 4999

+9194 2293 5407 (OFFICE)

SamirGDudhgaonkar

SamGDudhgaonkar





Chatrapati Shivaji Maharaj



Maharaj Mahadji Shinde (Scindia)



## Marathwada Liberation Movement (Marathwada Mukti Sangram) Freedom Fighter's Family

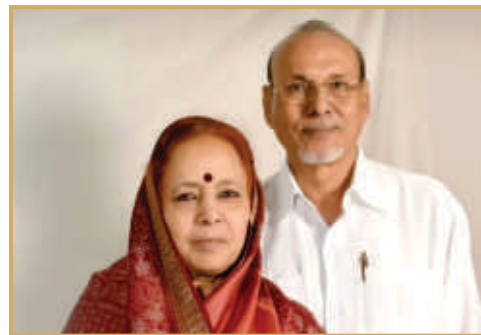


Named Ganesh due to Birth on "Ganesh Chaturthi" Occasion



One of tallest leaders of Marathwada, Former Minister, MP

## Adv. Ganeshrao Nagorao Dudhgaonkar (ShindeshahiRaut)



Since many generations in Pandharpur town pilgrimage (called Pandharpur Vaari), consecration of great saint Dnyaneshwar Maharaj Paduka (mould of feet meant to carry divine presence) is entrusted to Dudhgaonkar family ...!!

# Adv. Ganeshrao Nagorao Dudhgaonkar Yearly Eloquence Competition (E-Comp)

## Details

### 1st Year - Subject of Competition :

Servant leader Ganeshrao Dudhgaonkar means - A Karma-veer, A Development man,  
Person whose top priority is truth or Person whose top priority is education -  
Which adjective suits him the most ?

### Contest Age Group & Prize Details

Age Group : upto 30 Yrs.	
Prizes	Rupees
First	33,000/-
Second	23,000/-
Third	11,000/-
Aspirational	5000/-
Digi-Veer Award	10,000/-

Age Group : 30 Yrs. and above	
Prizes	Rupees
First	71,000/-
Second	33,000/-
Third	21,000/-
Aspirational	5000/-
Digi-Veer Award	10,000/-

For details, Interested people should visit the given  
E-comp website every year after 15th August.

Website has details about earlier competitions.

[www.Shinde.World/vakrutva-spardha-Parbhani](http://www.Shinde.World/vakrutva-spardha-Parbhani)



Competition



Details

Organized by : Dnyanopasak Shikshan Mandal, Parbhani

*One amongst rarest individuals who wanted to marry an educated girl, that too without taking dowry. Memories of this ideal marriage that took place in Udgir city*

2 June 1971





## Honourable Bapusaheb

- Name** : Shri. Adv. Ganeshrao Nagorao Dudhgaonkar
- People oriented name** : Bapusaheb
- Birth Place** : Dudhgaon Ta. Jintur Dis. Parbhani
- Residence** : Dudhgaonkar Farm House  
Pokharni Fata, at post Pokharni (Nursinha)  
Tq. Dist. Parbhani
- Permanent Address** : Dnyanopasak College, Post Box No. 54 Parbhani -431401
- Telephone No.** : (02452) 242016 Mobile No +919422727444
- Date of Birth** : 09/09/1945 (Born on the auspicious day of Ganesh Chaturthi so named after Lord Ganesha as Ganesh)
- Education** : BA, LLB (Advocate)
- Family** : Wife - Dr. Sow. Sandhyatai Ganeshrao Dudhgaonkar, M.Sc. Ph.D. (1981)  
Daughter - Madhura Ganeshrao Dudhgaonkar, M.S. Maths & Comp. Sci. (USA)  
Son - Samir Gameshrao Dudhgaonkar, M.S. Mech. Engg. (USA) (2001)
- Hobbies/Interest** : Hearing - Lectures, discourse, singing  
Reading - Literature, Other books
- Party organization/** : \* Joined Congress party in 1975
- Extension work** : \* District president Youth Congress in 1976  
\* General Secretary Maharashtra State Congress in 1987  
\* Vice-president Maharashtra State Congress in 1994  
\* Jalna District Contact Head-Shivsena in 2004-2009
- Political Career/** : \* **MLA in 1980 (Congress)**
- Contribution in politics** : Vasmat Assembly Constituency, Dist. Hingoli (Old Parbhani District)  
\* **MLA in 1985 (Congress)** Jintur Assembly Constituency. Dist Parbhani  
\* **Minister of State (independent charge)** Employment Guarantee Scheme, technical Education portfolios Maharashtra State.  
- From 1983 to 1985 in the cabinet of Honourable chief minister Shri. Vasantdada Patil and Honourable Deputy Chief Minister Shri. Ramrao Aadik

**- Guardian Minister of both Amravati and Buldhana districts**

- ✿ 1990 Pathari Assembly Constituency Dist. Parbhani (Congress) - Defeated in a Competitive fight.
- ✿ **In 1994 Parbhani-Hingoli Legislative Council Constituency as Independent candidate** (Defeated by Only 11 votes)
- ✿ **Member of Parliament 2009** - Elected as a member of the 15th Loksabha (Shivsena)

It is only because of ground level connect that this became possible after 19 years gap Corrupt opponents have been scheming to keep him out of constitutional post for long periods of over 19 years, still got a big Constitutional post again. perhaps the only such example in the Country to do so.

**Contribution to**

- : ✿ Director, Various Executive Services Co-operative Society, Dudhgaon Ta. Jintur

**Co-operative Sector**

- ✿ President: Jintur Taluka Jining & pressing co-operative society Ltd. Estd. 1960
- ✿ President: District co-operative purchase and sales union, Parbhani Estd. 1975
- ✿ Both Pathari and Purna co-operative sugar factories were stalled due to lack of funds, as Vasmath MLA got much needed govt funds that allowed both the factories to start
- ✿ **Founder, Narasinha Co-operative Sugar Factory, Lohagaon Estd. 1989**
- ✿ **Founder President - PAFFCO fertilizer factory Jintur from 1989 to 2001**
- ✿ Director, Maharashtra State Marketing Federation Limited, Mumbai In 1978
- ✿ President, Maharashtra state marketing Federation Limited, Mumbai in 1989
- ✿ Director, IFFCO New Delhi in 1989
- ✿ Director NAFED in 1987-88
- ✿ Director, Krishak Bharati Co-operative Society in 1989
- ✿ President, Dnyanopasak Urban Co-operative Bank, Parbhani.

**Educational Work**

- : ✿ As Technical Education minister, led the team for creation of private technical education policy of Maharashtra. This was foundation for Approval of several institutes like Bharti Vidyapeeth, MGM, MIT Pune.
- ✿ 45 ITI institutes and 45 technical high schools started in Marathwada.
  - ✿ **Founder President, Dnyanopasak Shikshan Mandal Parbhani (Estd. in1981)**
    - Till date, provided quality education to more than 50,000 families
    - DSM College Parbhani is NAAC A graded twice and is amongst top 5 colleges of university
    - The institution has three colleges and six secondary schools, reputed educational Institutes operating in entire Parbhani District

## Shri. Ganeshrao Dudhgaonkar - a great people's leader

1. Honored to be member of a family where 1 grandmother, wife's grandfather and father-in-law of niece actively participated in the Marathwada Liberation (Mukti Sangram) movement that led to 1948 Operation Polo decision by Iron man of India Sardar Patel, against Muslim Nizam of Hyderabad state.
2. **Was one of dashing youth Leaders of Marathwada Vikas Andolan of 1974.**  
**Main demands of Andolan were** - Person from Marathwada should become CM of Maharashtra asap, Jayakwadi Dam, Lower Dudhna, Vishnupuri irrigation projects should be put on fast track, Broadguage railway, Aurangabad high court creation etc.
3. Who was in efforts that led to Maharashtra's CM change in year 1974 as well as year 1983
4. Who is one amongst rarest individuals who **wanted to marry an educated girl, that too without taking dowry** (in 1971) (see attached photo of that lovely memory)
5. Who was gutsy enough to successfully contest from 5 separate constituencies. (Most don't ever change their constituencies even once..!)
6. Who was in race to be CM of Maharashtra during 1990's
7. **The moment he was sworn in on 2 February 1983 as minister**, who envisioned about dire need of MNCs for Marathwada's transformation and played decisive role for bringing Bajaj Auto Plant to Ch.Sambhajinagar; as well as later establish IGTR, CEDT, MCED, CIPET (scroll at bottom of post for full forms of institutions)
8. As EGS (Employment Guarantee Scheme) minister, earned praise from Ex Vidhansabha chairperson Shri. V. S. Page (वि.स.पाणे). Mr. Page is brain behind EGS concept
9. As minister created private technical education policy which started technical education revolution in state through establishment of Engg colleges of MGM, Bharati Vidyapeeth, MIT Pune, etc.
10. **As guardian minister** of Amravati, Buldhana districts, played decisive role in quick creation of Amravati University, Revenue office, Office of IGP, Amravati Mahapalika
11. **Envisioned** Hajira (Surat) - Buldhana - Parbhani - Nagpur - Paradweep Odisha LPG gas pipeline in late 1980's (then a ₹ 15,000 crore project with potential of establishing





network of fertiliser factories, plastic Industry, cheap power for Industry and homes, piped gas connections for households)

12. Who got the country's policy changed & established country's first cooperative SSP fertiliser factory (at Jintur Parbhani)
13. Founded Dnyanopasak Shikshan Mandal with over 18 institutes today. DSM College Parbhani reestablished the lost educational culture of Parbhani district and went on to become one of top 5 colleges of university. NAAC A graded twice.
14. Member of 15th Loksabha
  - Set record for attendance as well as active participation in Loksabha.
15. PM Modi wave for 16th General elections was evident to the whole world. Despite this, due to mistreatment/ disrespect shown by then Shivsena supremo, rejected the opportunity to become MP again in 16th and 17th Loksabha.
16. In 2019 Loksabha and Vidhansabha elections, played important role in Parbhani and Hingoli districts
17. **Helped numerous people get jobs in many cooperative institutions, Parbhani DCC Bank, Mumbai APMC, Marketing Federation, Dnyanopasak Shikshan Mandal etc.**
18. **Played divisive role in helping karykartyas from all castes become MLA.**



*In Maharashtra's 500+ year old tradition of Pandharpur town pilgrimage (called Pandharpur vaari), consecration of great saint Dnyaneshwar Maharaj paduka (mould of feet meant to carry divine presence) is entrusted to Dudhgaonkar family, since many generations..!! (Since 1850)*



## Acronyms

**MCED** (Maharashtra Centre For Entrepreneurship Development)

**CIPET** (Central Institute of Plastic Engineering Technology)

**CEDT** (Center for Electronic Design And Technology)

**IGTR** (Indo German Tool Room)

**Adv. Ganeshrao Nagorao Dudhgaonkar**  
**(Shindeshahi Raut)**  
**Former Minister, MP**  
**Parbhani, Maharashtra**



*In Maharashtra's 500+ year old tradition of Pandharpur town pilgrimage (called Pandharpur vaari), consecration of great saint Dnyaneshwar Maharaj paduka (mould of feet meant to carry divine presence) is entrusted to Dudhgaonkar family, since many generations..!!*



[www.Dudhgaonkar.in](http://www.Dudhgaonkar.in)

**For yearly Eloquence competition (E-comp) details -**

**[www.Shinde.World/vakrutva-spardha-Parbhani](http://www.Shinde.World/vakrutva-spardha-Parbhani)**

**₹ 2,25,000 (Approx \$3000) worth total prizes for E-comp.**





**Hon. Governor Arif Md. Khan Sir graciously inaugurated Daily Diary 2022-23**

**Present Amrut Mahotsav Samiti Members :**

- Shri. Sahebrao Labde (Former Dy SP), Pune
- Mrs. Vaishali Arvind Nade. Daughter in law of Shri. Shivajirao Tukaramji Nade (Murud) who is credited for being transformation of old Usmanabad district.
- Ajit Hanumantrao Gore, MS IT USA, Dr. Manali Hanumantrao Gore Bansarola, Beed
- Vikramaditya Dharnidhar Patil IIT, Mumbai. VP-MNC Bank. Dharashiv (Usamanabad)
- Kamran Siddique, Hingoli

For Daily Diary



[www.Dudhgaonkar.in](http://www.Dudhgaonkar.in)

For Bapusaheb



Career details



**Contact**

**Samir Ganeshrao Dudhgaonkar**

M.S. Mech Engg. USA

Amrut Mahotsav Samiti Member

Since 2002, Student of Shrimad-Bhagwad-Gita  
Doubling of Jobs Concept Promoter

+9191 4536 4999

+9194 2293 5407 (OFFICE)

SamirGDudhgaonkar

SamGDudhgaonkar

